₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जुलाई 2016



- सत्य की अवहेलना से विश्व-अशांति
  –मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
- आई॰ एस॰ और इस्लाम
  –डॉ॰ सैयद इख़्तियार जाफ़री
- आर्थिक समस्याओं का समाधान
  –डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- कब लागू होगा पूर्ण मद्य निषेध ?
  –ज़हीर ललितपुरी

अक़ायद व इबादात पर हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फारूक खाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फारूक खाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फारूक खाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फारूक खाँ	45.00
लोगोः हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
खुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	07.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	20.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	08.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन खाँ	16.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	22.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	12.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS
MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 26 अंक 1 जुलाई 2016

वही अल्लाह है, आकाशों में भी और धरती में भी । वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली बातों को जानता है और जो कुछ तुम कमाते हो वह उससे भी अवगत है । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

ग़ज़लें

(1)

बुलन्दी हो बुलन्दी-सी तो ये मशहूर करती है
अगर हद से ज़ियादा हो तो ये मग़रूर करती है

सुहाने ख़ाब हों और वो भी हों ता'बीर से भरपूर
यही दौलत है वो जो नींद तक काफ़ूर करती है

नहीं है होश में फिर भी वो उठ-उठकर है चिल्लाता
है कुछ तो बात जो इसपर उसे मजबूर करती है

मेरी औक़ात से बढ़कर मुझे देना न कुछ मालिक
ज़रूरत से ज़ियादा रोशनी बेनूर करती है

इसे लेने में कोताही न हरगिज़ कीजिए साहब
बुजुर्गों की दुआ ही हर बला को दूर करती है

जहां तक हो सके इससे बनाकर फ़ासिला रखिए
अना ही हर बशर के ख़ाब चकनाचूर करती है

झुकी रहती है नज़रें उम्र-भर के वास्ते 'दरवेश'
कि ये एहसानमंदी इस क़दर मशकूर करती है ।

(2)

बीच मंझधार में वो फंसा रह गया
जो किनारों को ही देखता रह गया

चुप्पियां, चुप्पियां ही थीं दोनों तरफ़
हाले-दिल अनकहा, अनसुना रह गया

हक़ की ख़ातिर जो मुंसिफ़ से तकरार की
फ़ैसला झूलता झूलता रह गया

संगदिल नेटवर्क उड़ गया नागहां
गुफ़्तगू का हसीं सिलसिला रह गया

कोशिशों से भी मंज़िल न जब मिल सकी
रह गये पांव और रास्ता रह गया

बेवफ़ाई का ग़म था कुछ ऐसा कि जो
उम्रभर सालता - सालता रह गया

जिसको आंखों में 'दरवेश' पाला किये
ख़ाब वो आपकी दीद का रह गया ।

'दरवेश' भारती

संपादक, 'ग़ज़ल के बहाने'



कहां क्या है ?

ग़ज़लें	–'दरवेश' भारती	3
कुरआन ज्योति		5
रमज़ान के रोज़े (हदीस मंजरी)		6
ईद मुबारक (संपादकीय)		7
अवतारवाद की कल्पना (आपके पत्र)		8
सत्य और न्याय की अवहेलना से विश्व-अशांति (विचारणीय)	–मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	11
हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा (रज़ि॰)	–माइल ख़ैराबादी	17
बेईमानों की भीड़ में (व्यंग्य कविता)	–रमेश मनोहरा	19
कब लागू होगा पूर्ण मद्य निषेध ? (उद्‌गार)	–ज़हीर ललितपुरी	21
मंगरू (कहानी)	–विद्या प्रकाश	23
आई॰ एस॰ और इस्लाम (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ सैयद इख़्तियार जाफ़री	26-27
भारतीय मुसलमानों की समस्याएं (दृष्टिकोण)	–क़ासिम सैयद	31
हृदय की बढ़ती बीमारियां (स्वास्थ्य चर्चा)	–अनु जैन	33
कमाई में हीरो, मैदान पर ज़ीरो (खेल-खिलाड़ी)	–ए॰ एन॰ शिब्ली	37
कम नहीं हो रहीं दहेज हत्याएं ? (महिला जगत)	–सुधा सिंह	39
औरंगज़ेब की मंदिरों को भेंट (अतीत के झरोखे से)		41
मानव अंगों की ख़रीद बिक्री का घिनौना कारोबार	–संपादन प्रभाग	42
आर्थिक समस्याएं एवं हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के समाधान (अर्थ उपभोक्ता)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	43
आज़ादी अभिव्यक्ति की (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	44
चार लघुकथाएं	–डॉ॰ वक़ार अनवर	45
शिक्षा की दुर्गति (सामयिकी)	–विद्या प्रकाश	46
बोलने का आत्मविश्वास (कैरियर)	–संपादन प्रभाग	47
खंडहर के महल (कविता)	–शुभदा पांडेय	48
कार्बन डाई आक्साइड का असर	–बालवीथी	49



(1) अलिफ़-लाम-रा, ये उस किताब की आयतें हैं जो ज्ञान और तत्वदर्शिता से परिपूर्ण हैं।[1]

(2) क्या लोगों के लिए यह एक विचित्र बात हो गयी कि हमने स्वयं उन्हीं में से एक आदमी पर वह्य भेजी कि (ग़फ़लत में पड़े हुए) लोगों को चौंका दे और जो मान लें, उनको शुभ-सूचना दे दे कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा मान-सम्मान है ?[2] (इस पर) इन्कारियों ने कहा कि यह आदमी तो खुला जादूगर है।[3] **–क़ुरआन, 10 : 1,2**

---

1. नासमझ लोग यह समझ रहे थे कि पैग़म्बर क़ुरआन के नाम से जो वाणी उनको सुना रहा है, वह केवल भाषा की जादूगरी है, काव्य-कल्पना की उड़ान है और कुछ काहिनों (ज्योतिष, परोक्ष की बातें बताने वाले) की तरह ऊपरी दुनिया की बातें हैं। इस पर उन्हें चेतावनी दी जा रही है कि जो कुछ तुम गुमान कर रहे हो, यह वह चीज़ नहीं है। यह तो तत्वदर्शी ग्रंथ की आयतें हैं। इनकी ओर ध्यान न दोगे तो तत्वदर्शिता और ज्ञान से वंचित रह जाओगे।

2. अर्थात आख़िर इसमें विचित्र बात क्या है ? इन्सानों को सचेत करने के लिए इन्सान न नियुक्त किया जाता तो क्या फ़रिश्ता या जिन्न या पशु नियुक्त किये जाते ? विचित्र बात तो यह है कि (वास्तविकता से ग़ाफ़िल इन्सानों को) उनका पैदा करने वाला और पालने वाला उनके हाल पर छोड़ दे या यह कि वह उनके मार्गदर्शन और रहनुमाई के लिए कोई व्यवस्था करे ? और अगर अल्लाह की ओर से कोई मार्गदर्शन आये तो मान-सम्मान और सफलता उनके लिए होनी चाहिए जो उसे मान लें या उनके लिए जो उसे रद्द कर दें ?

3. नबी (सल्ल॰) को जादूगर वे इस अर्थ में कहते थे कि जो आदमी भी क़ुरआन सुनकर और आपके प्रचार से प्रभावित होकर ईमान लाता था, वह जान पर खेल जाने और दुनिया-भर से कट जाने और हर विपदा झेल जाने के लिए तैयार हो जाता था। जादूगर की फ़ब्ती तो उन्होंने आप पर कस दी, मगर यह न सोचा कि वह फिट भी होती है या नहीं ? केवल यह बात कि कोई व्यक्ति उच्च श्रेणी के वक्तव्य से काम लेकर मन और मस्तिष्क को वश में कर रहा है, उस पर यह आरोप लगा देने के लिए तो पर्याप्त नहीं हो सकता कि वह जादूगरी कर रहा है। देखना यह है कि इस वक्तव्य में वह बात क्या कहता है, किस उद्देश्य के लिए भाषण-शक्ति का उपयोग कर रहा है और जो प्रभाव उसके भाषण से ईमान लाने वालों के जीवन पर पड़ रहे हैं, वे किस प्रकार के हैं। तुम देख रहे हो कि पैग़म्बर जो वाणी प्रस्तुत कर रहा है, उसमें बुद्धिमत्ता है, सोच-विचार की एक संतुलित व्यवस्था है, उच्च श्रेणी का संतुलन और सत्य और सच्चाई की भरपूर अनिवार्यता है, उसके भाषण में तुम ईश्वरीय सृष्टि में सुधार लाने के सिवा किसी दूसरे उद्देश्य की निशानदेही नहीं कर सकते। वह केवल यह चाहता है कि लोग ग़लत रवैये को छोड़कर उस रास्ते पर आ जाएं जिसमें उनका अपना भला है। फिर उसके भाषण का जिसने भी प्रभाव ग्रहण किया है, उसका जीवन संवर गया है। अब तुम स्वयं ही सोच लो, क्या जादूगर ऐसी ही बातें करते हैं और उनका जादू ऐसे ही नतीजे दिखाया करता है ?

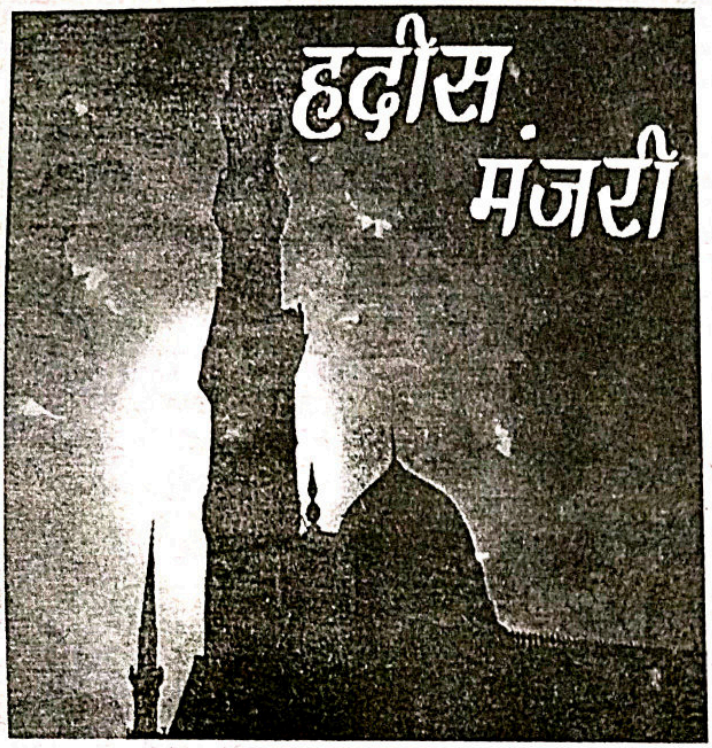

रमज़ान के रोज़े की अनिवार्यता और उनसे संबंधित चीज़ों का महात्म्य

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "'सहरी' (रोज़ा रखने के लिए रात में सुबह से पहले कुछ खाना) खाया करो, क्योंकि 'सहरी' में बरकत है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत सह्ल बिन सअद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "लोग सतत भलाई पर रहेंगे जब तक वह रोज़ा खोलने में जल्दी करते रहेंगे ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत उमर बिन अल-ख़त्ताब (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब रात इधर (पूर्व दिशा) से आ जाए और दिन उधर (पश्चिम) से चला जाए और सूर्य अस्त हो जाए, तो रोज़ेदार के रोज़े खोलने का समय हो चुका है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत सलमान बिन आमिर अज़-ज़ब्बी अस-सहाबी (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जब तुममें से कोई रोज़ा खोले, तो खजूर से खोले । फिर यदि खजूर न हो, तो पानी से रोज़ा खोले, क्योंकि वह पाक है ।"

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात जुबान पर लाए और न शोर मचाये । और अगर कोई उसे गाली दे या लड़े, तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जिस व्यक्ति ने (रोज़े की हालत में) झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा तो अल्लाह को इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि वह (रोज़ा रखकर) अपना खाना-पीना छोड़ दे ।"

–बुख़ारी

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जब तुममें से कोई भूल जाए और खा-पी ले तो उसे चाहिए कि अपना रोज़ा पूरा कर ले क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया और पिलाया ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत लक़ीत बिन सबिरह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे वुज़ू के विषय में बताइए ? आपने कहा : "अच्छी तरह वुज़ू करो । उंगुलियों के मध्य उंगुलियां डाल कर फेरो और अगर रोज़े से न हो, तो नाक में भली-भांति पानी पहुंचाओ ।"

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

ईद मुबारक

दुनिया के सभी बड़े धर्मों में किसी न किसी रूप में हर्ष व खुशी के दिन का प्रावधान है ।.लेकिन इन दिनों में इनके निमित्त कारणों और घटनाक्रमों एवं परिस्थितियों का फ़र्क़ होता है । इस दृष्टि से आने वाली ईद का महत्त्व एवं माहात्म्य अधिक बढ़ा हुआ है । ईद का अर्थ होता है–खुशी और प्रसन्नता । इसका संबंध अल्लाह–सर्वशक्तिमान सत्ता के आदेशों के पालन से है । जब बन्दा रमज़ान के महीने के रोज़ों और इससे संबंधित अन्य आदेशों की अंजामदेही में समर्थ एवं सफल होता है, तो यह स्वाभाविक ही है कि उसे खुशी हो, उसका मुख प्रफुल्लित हो, उसका मन गदगद व हर्षित हो । यह खुशी आत्मिक और हार्दिक होती है । इस तरह यह खुशी दूसरी खुशियों से भिन्न होती है । ज़ाहिर है कि जिस उपलक्ष्य में यह खुशी मनायी जाती है, वह रंगरलियों, सैर-सपाटों, मनोविहार वाली खुशी नहीं हो सकती, न ही वह मर्यादाहीन और अशालीन हो सकती है । वैसे भी नये साल पर या दूसरे ऐसे अवसरों पर जो खुशियां मनायी जाती हैं, उनमें जिस अश्लीलता, असभ्यता व भोंडेपन का परिचय दिया जाता है, वह किसी भी तरह से उचित नहीं है । ईद इन सब बुराइयों और विकृतियों से पाक होती है । इस्लाम का मौलिक उद्देश्य इन्सान की पूरी ज़िन्दगी को अल्लाह की इबादत बना देना है । वास्तव में इस्लाम की शिक्षाओं का सार तत्व एकेश्वरवाद (तौहीद) है । दूसरे शब्दों में यह इस्लाम की आधारशिला है । ''ला इलाह इल्लल्लाह'' अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं–इस्लाम के प्रथम सूत्र-वाक्य (कलिमा) का आरंभिक वाक्यांश है, जिस पर ईमान लाना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है । हम अपनी खुली आंखों और बुद्धि-विवेक एवं चेतना के ज़रिए से जब समूची सृष्टि पर नज़र डालते हैं, तो एक से अधिक ईश्वर के चिन्ह नहीं मिलते । स्वयं 'ब्रह्माण्ड' शब्द भी इस सत्य-तथ्य का द्योतक है । अन्य धर्म ग्रंथों में भी इस सिलसिले में कई उद्धरण पाए जाते हैं, जो इस सच्चाई और वास्तविकता को प्रकट करते हैं ।

मानव की प्रकृति एकेश्वरवाद के प्रति ही मौलिक रूप से आकर्षित होती है, क्योंकि यह उसके सर्वथा अनुकूल है। क़ुरआन में है– ''अल्लाह एक मिसाल देता है । एक व्यक्ति तो वह है जिसके मालिक होने में बहुत-से दुःशील स्वामी साक्षी हैं जो उसे अपनी-अपनी ओर खींचते हैं और दूसरा व्यक्ति पूरा का पूरा एक ही स्वामी का दास है । क्या इन दोनों का हाल एक-सा हो सकता है ? –प्रशंसा अल्लाह के लिए है, मगर ज़्यादातर लोग नादानी में पड़े हुए हैं । (39 : 29) इन्सान के स्वाभाविक गुणों व विशेषताओं का यदि सही तौर पर जायज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि वह बन्दा है और बन्दगी उसके स्वभाव में दाख़िल है । इसलिए इन्सान को अपने विचार व कर्म में हर पल और हर क्षण अल्लाह की बन्दगी से आज़ाद नहीं होना चाहिए । उसे अपने जीवन के हर मामले में सदैव और हर समय यह देखना चाहिए कि अल्लाह की प्रसन्ता और खुशी किस चीज़ में है और उसका प्रकोप और नाराज़गी किस चीज़ में है ? फिर जिस ओर अल्लाह की प्रसन्नता और खुशी हो उसी ओर जाना चाहिए और जिस ओर उसका प्रकोप और नाराज़गी हो उससे बचना चाहिए । वास्तव में यह तभी हो सकता है जब इन्सान अपने पैदा करने वाले से डरे, उसकी ही बन्दगी करे, उसके उपकारों को समझे और उसके ही आदेशों पर चले । इस्लाम में नमाज़, रोज़ा हज, ज़कात के नाम से जो इबादतें फ़र्ज़ (अनिवार्य) हैं, इनका अस्ल मक़सद इनके द्वारा इन्सान का प्रशिक्षण है और यह भी है कि उसे इस योग्य बनाया जाए कि उसका पूरा जीवन उसके पैदा करने वाले की इबादत बन जाए । यही कारण है कि ईद के दिन आत्मिक और हार्दिक खुशी से परिपूर्ण बन्दा अपने पैदा करने वाले के आगे झुकता और नतमस्तक होता है और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है कि उसने अपने आदेशों के पालन करने की सामर्थ्य उसे दी, जिसके कारण उसे प्रसन्नता प्राप्त हुई । ईद की नमाज़ के बाद एक-दूसरे को मुबारकबाद दी जाती है, इस कारण और दुआ के साथ कि अल्लाह तुम्हें इसी तरह खुश रखे और इस जीवन और पारलौकिक जीवन को भी सफल बनाए । हमारी भी यही दुआ है । आप सबको ईद मुबारक !

अवतारवाद की कल्पना

'कान्ति' मासिक का मई 2016 का अंक पढ़ा । इस अंक में डॉ॰ नौशाद अली का लेख "अल्लाह की राह में ख़र्च" बहुत अच्छा लगा ।

इस लेख में बताया गया है कि शैतान इन्सान को निर्धनता से डराता है और शर्मनाक रीति अपनाने को उकसाता है । जबकि अल्लाह तआला अपनी उदार कृपा का वचन देता है ।

मेरे ख़याल में भ्रूण-हत्या के पीछे कुछ कारणों में यह कारण भी शामिल है कि शैतान, इन्सान को निर्धनता से डराकर उक्त जघन्य कार्य करने के लिए उकसाता है । दूसरा उल्लेख हमें कुरआन की निम्नलिखित आयत में भी मिलता है–

"और अपनी औलाद को निर्धनता के भय से क़त्ल न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उनको भी देंगे ।"

(कुरआन, 6 : 151)

इसके अलावा मुझे मनमोहन कुमार आर्य का वह लेख भी अच्छा लगा जिसमें उन्होंने बताया है कि ईश्वर अवतार नहीं लेता है ।

मेरे ख़याल में ईश्वर न अवतार लेता है और न ही उसे अवतार लेने की कोई आवश्यकता है ।

ईश्वर यदि अवतार ले तो बड़ी असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी । क्योंकि मनुष्य को मौत आती है जबकि ईश्वर को मौत तो क्या नींद यहां तक कि ऊंघ तक नहीं आती है ।

अत: एक ही समय में यह असंभव है कि कोई जन्म भी ले और अजन्मा भी हो, कोई सोए भी और न भी सोए, किसी को मौत भी आती हो और वह अमर भी हो ।

अर्थात ईश्वर यदि मनुष्य के रूप में अवतार ले ले तो काफ़ी विसंगतियां उत्पन्न हो जाएंगी ।

कुछ लोग कहते हैं कि दुष्ट मनुष्यों के वध के लिए ईश्वर अवतार लेता है ।

मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि जो ईश्वर बिना जन्म लिए इतनी बड़ी सृष्टि की रचना कर सकता है, उसे भला एक दुष्ट मनुष्य के वध के लिए अवतार लेने की क्या आवश्यकता ?

यह काम तो वह बिना अवतार लिए भी कर सकता है । जब ईश्वर को अपनी सृष्टि में कोई कार्य करना होता है तो वह कहता है हो जा और वह हो जाता है ।

अत: हम देखते हैं कि अवतारवाद की कल्पना त्रुटिपूर्ण है ।

'कान्ति' मासिक का जून 2016 अंक मिला । पढ़कर अच्छा लगा । मुफ़्ती तंज़ीम साहब का लेख "पारलौकिक जीवन" विशेष तौर पर पसंद आया । मुफ़्ती साहब ने बिल्कुल ठीक कहा है कि एक तयशुदा वक़्त पर दुनिया का मौजूदा निज़ाम समाप्त हो जायेगा । इसके बाद अल्लाह तआला इन्सानों को दोबारा पैदा फ़रमायेगा । हर इन्सान का हिसाब-किताब होगा । जो इसमें सफल हो जायेगा उसे जन्नत में दाख़िला मिलेगा तथा जो विफल हो जायेगा उसे जहन्नम में डाला जायेगा ।

मेरे ख़याल से इस अवधारणा से यह नतीजा निकलता है कि इन्सान को दुनिया में ईमान लाकर नेक कार्य करने चाहिएं, यही उसकी सफलता का राज़ है । बाक़ी सब बेकार की बातें हैं ।

मेरे ख़याल से इस दुनिया में नेक लोग परेशानियों में ग्रस्त रहते हैं और बुरे लोग ऐश करते हैं । अत: इन्साफ़ का तक़ाज़ा है कि एक लोक अवश्य ऐसा होना चाहिए जिसमें नेकों को उनकी नेकी का और बुरों को उनकी बुराई का पूरा-पूरा बदला मिले । तभी सच्चा इन्साफ़ होगा ।

अबरार अहमद (लाखेरी वाले)
जे॰पी॰ कॉलोनी, रंगपुर रोड,
कोटा जंक्शन, ज़िला कोटा,

आस्था एवं विश्वास

आस्था एवं विश्वास मनुष्य को सही राह की पहचान कराती हैं । मानव जाति प्रारम्भ से ही प्रत्येक कार्य में अपना लाभ ढूंढने का प्रयत्न करती है । यहां तक कि ईश्वर से भी

उसी तरह से कामना करती है । मुझे धर्म एवं ईश्वर के प्रति आस्था प्रदर्शित करने की आदत नहीं है मगर मैं प्रत्येक धर्म की दिल से इज़्ज़त करती हूं । आस्था भटके हुए इन्सान को सही रास्ता दिखलाती है ।

पिछले सप्ताह मुझे तिरुपति बालाजी जाना था, जाने से पूर्व अपने एक सहकर्मी से पूछा कि तुम्हारी कोई ऐसी कामना है जो उनके पास तक मुझे पहुंचाना है । उसने कहा कि आज नहीं कल तुम्हें बताऊंगी । दूसरे दिन काफ़ी सोच समझ कर उसने अपनी इच्छा बतायी कि उसके भाई को सरकारी नौकरी चाहिए । मेरे मुंह से अकस्मात ही निकला कि क्या वे तैयारी कर रहे हैं ? उसने कहा कि नहीं बल्कि उनका व्यापार है । मैं कुछ न बोली बल्कि वो स्वयं बोली कि तुम्हारे भगवान ने मुझे राह दिखला दी क्योंकि बिन तैयारी के मुझे इतनी बड़ी इच्छा मन में रखना ही ग़लत है ।

आगे उसने 101 रुपये देते हुए कहा कि हुंडी में डाल देना और उनके व्यापार में वृद्धि की कामना कर लेना ।

मैं भी सोचती रह गयी कि वास्तव में ईश्वर उन्हीं की मदद करता है जो स्वयं की मदद करता है । आज जाने कितने लोग ऐसे होंगे जो बिना तैयारी के ऊंचे-ऊंचे सपने देखते होंगे । जब सफलता न मिले तो भाग्य एवं ईश्वर को कोसते होंगे ।

इस छोटी-सी घटना ने मेरी सहकर्मी की पूरी सोच बदल डाली । आशा करती हूं कि और लोग भी इसे पढ़ने के बाद पहले कर्म करेंगे और तब ईश्वर से प्रार्थना करेंगे ।

के॰ कविता
हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड
कोरबा, अमेठी-227412

शहरीकरण

शहरों को स्मार्ट सिटी के दर्जे में लाने के लिए संक्षिप्त रूप से आवश्यक है कि (1) उनका विस्तारीकरण करने की बजाय शहरों का सीमांकन होना चाहिए, (2) सीमांकन के साथ ही शहरों की निश्चित आबादी को निर्धारित करना चाहिए, (3) निश्चित आबादी के हिसाब से तैयारशुदा प्रोजेक्ट के तहत शहरों का विकास इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि बुजुर्ग, विधवाओं के साथ ही ग़रीबों और मरीज़ों की उचित देखभाल करने वाले केंद्र हों, (4) प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ शहरियों को मिलावट से मुक्त दूध एवं अन्य खाद्य पदार्थ, कम-से-कम दामों में चिकित्सीय सहायताएं, पेय जल तथा विद्युत प्रवाह उपलब्ध हो सके, (5) भिखारियों तथा कमज़ोर वर्ग के लोगों को तथा लघु और कुटीर उद्योगों में रोज़गार एवं व्यवसाय के अवसर प्रदान होना चाहिए, (6) शहर में विक्षिप्त एवं मानसिक रूप से ग्रस्त लोगों के लिए सर्व सुविधाजनक आश्रम हों, (7) संभवत: सीमित क्षेत्रफल और निश्चित आबादी के कारण अपराधों के साथ समस्याओं में अत्यधिक कमियां आ सकती हैं तथा कम आरोपियों के चलते न्यायालय द्वारा शीघ्र अति शीघ्र फ़ैसलों की संभावनाएं भी बढ़ सकती हैं, (8) फिर आबादी के बढ़ने पर दूसरा शहर नयी योजना के तहत बसाने का विचार किया जाना चाहिए ताकि इस शहर पर अधिक बोझ न बढ़ सके और स्मार्ट शहर के रूप में उसका विकास बढ़ोत्तरी की ही ओर अग्रसर हो सकेगा ।

डॉ॰ एम॰ए॰ रशीद
103 बी, पेंशन नगर,
पुलिस लाइन टाकली,
नागपुर -440013

ईश्वरवाद की परिभाषा

कान्ति पत्रिका मई 2016 में 'विचार' कॉलम के अन्तर्गत ईश्वरवाद की रूपरेखा विस्तार में समझायी गयी

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand

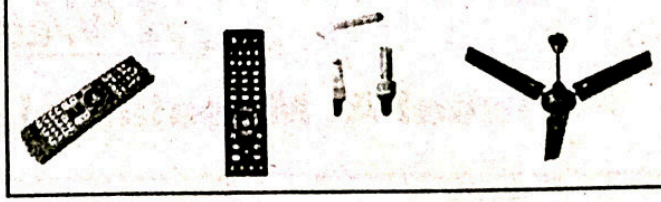

है । ईश्वर तो सभी धर्मों और समुदायों में होता है, बिना ईश्वर के तो पत्ता भी नहीं हिल सकता है । दुनिया को वह मालिक ही चला रहा है । अब भाई साहब मुझे एक बात बिल्कुल समझ में नहीं आती है कि एक महिला श्रद्धा और विश्वास के आधार पर मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारा से ईश्वर के दर्शन करके अपने घर वापस जाती है, तो रास्ते में उस महिला का कुछ गुंडे अपहरण करके उसकी इज़्ज़त और धन लूट लेते हैं तो विवश होकर महिला पुलिस को सूचित करती है । क़ानूनी लड़ाई में उसे बिना गवाहों के न्याय नहीं मिलता है और उस महिला का पति ज़िन्दगी भर उसके ईश्वर/भगवान/अल्लाह/वाहेगुरु पर ताने कसता है ।

डॉ॰ जसवन्त सिंह जनमेजय
नयी दिल्ली

रोज़ेदार को इनसे बचना चाहिए

झूठ बोलने से, झूठी क़सम खाने से, झूठी गवाही देने से, किसी की भी पीठ पीछे निंदा (चुग़ली) करने से, गाली-गलौज से, रोज़ेदार को ज़ुबान की सुरक्षा बहुत ज़रूरी है । कम बोलने और ज़ुबान की हिफ़ाज़त करने से न केवल संसार में आराम मिलता है बल्कि मृत्योपरांत सफलता की ज़मानत भी नसीब होती है ।

रोज़ा रखने के लाभ

मन को सकून (शान्ति) मिलती है । इच्छाओं का तूफ़ान थम जाता है और गुनाह करने की इच्छा मंद पड़ जाती है । दिनभर भूखा-प्यासा रहने से शरीर के अंग सुस्त पड़ जाते हैं जिनका सीधा संबंध गुनाह करने से जुड़ा होता है । कान, आंख और ज़ुबान तीनों गुनाह करने के कारण बनते हैं । रोज़े की हालत में ये तीनों नेक काम करने को प्रोत्साहित रहते हैं ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
494/5 राजापार्क,
जयपुर, राजस्थान-302004

जब कभी उनसे कहा गया कि
ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो, तो उन्होंने
यही कहा कि "हम तो सुधार करने वाले
हैं—सावधान वास्तव में यही लोग बिगाड़
करते हैं मगर इन्हें समझ नहीं है ।
(क़ुरआन)

A Well Wisher
Iqbal A. Masalawala, Nagpada, Mumbai

सत्य और न्याय की अवहेलना से विश्व-अशांति

■ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

साधारणतया लोग समझते हैं जो झूठ न हो बस वही सत्य है किन्तु सत्य की यह परिभाषा अत्यन्त संकुचित और अपूर्ण है सत्य अपने में अनन्त अर्थ रखता है । यह सही है कि झूठ न बोलना, सच बोलना हमारा कर्तव्य है लेन-देन में न्याय से काम लेना, किसी मामले में किसी व्यक्ति को धोखा न देना यह सच्चाई की नीति है किन्तु सत्य का सम्बन्ध केवल इतनी-सी बातों से नहीं है

जीवन और जगत की सच्चाई क्या है ? कौन-सा मार्ग और जीवन-शैली ऐसी है जिसे सत्य कहें ? जीवन का कौन-सा मार्ग है जो सत्य के अनुकूल नहीं बल्कि सत्य के विरुद्ध है ? इसे जानना भी हमारा कर्तव्य होता है सारांश यह कि सत्य को अत्यन्त व्यापक दृष्टि से देखने की ज़रूरत है मनुष्य और पशुओं में मौलिक अन्तर पाया जाता है पशु का जीवन बस इतना ही है : खाना-पीना, आराम करना और अपनी नस्ल को बाक़ी रखना । खाना-पीना, सुख-सुविधा की चिन्ता करना और अपनी सन्तान को शेष रखना यदि यही मनुष्य के जीवन का भी अर्थ हो, तो तात्विक दृष्टि से मानव और पशुओं में कोई अन्तर नहीं रहता । दोनों में अन्तर तो इस स्थिति में पाया जाएगा जबकि मानव का जीवन-स्तर पशुओं से नितान्त भिन्न और उच्च हो ।

1. परम तत्व की खोज : सत्य और जीवन के परम तत्व की खोज पशुओं को नहीं होती, वे तो केवल मनुष्य के सेवा-कार्य के लिए पैदा किये गये हैं । बस यही उनके अस्तित्व का उद्देश्य है पशु ही नहीं सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और जितनी वस्तुएं भी जगत में पाई जाती हैं, वे सब मनुष्य के लिए हैं । लेकिन मनुष्य को इसलिए पैदा किया गया है कि वह जीवन और जगत के वास्तविक उद्देश्य को जाने

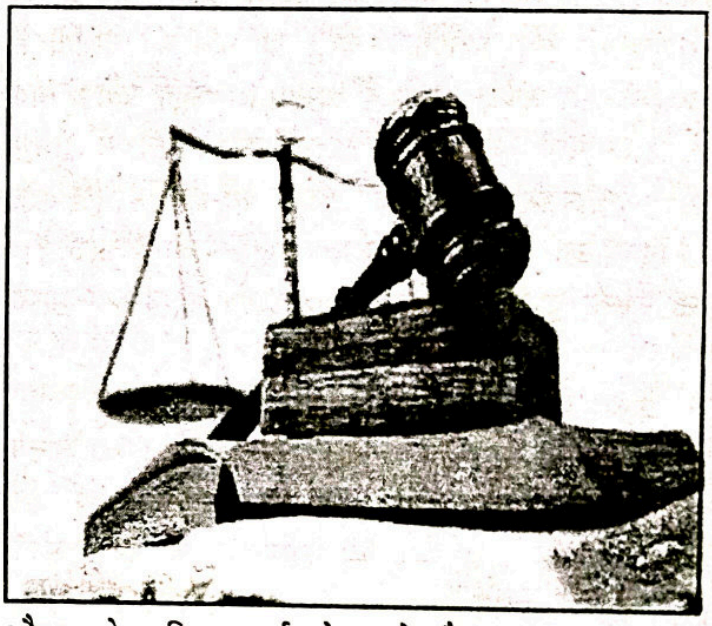

और उसके तात्विक अर्थ को समझे और उसका जीवन परम सत्य के अन्तर्गत व्यतीत हो । वह साधारण में असाधारण को देखे । वर्तमान में शाश्वत की प्रतीति और जीवन की अनन्त सम्भावनाओं की आहट उसे मिल सके । उसका जीवन ब्रह्म-विहार बन जाए ।

कुरआन में सत्य को 'हक़' कहा गया है और विभिन्न स्थानों पर हक़ (सत्य) का प्रयोग हुआ है, उससे ज्ञात होता है कि हक़ या सत्य का अर्थ अत्यन्त व्यापक और संग्राहक है हम यहां सत्य के विषय में कुछ मौलिक बातों की चर्चा करनी चाहेंगे ।

2. तथ्य : सत्य तथ्यात्मक होता है भ्रम (Illusion) नहीं होता, तथ्य सत्य (Fact) होता है परम सत्य और मौलिक सत्ता ईश्वर की है वह अव्यय है, जिसका कदापि नाश नहीं हो सकता । अस्तित्व का मूल-तत्व वही है वह नित्य है सदासर्वदा बना रहनेवाला है ।

ईश्वर परम सत्य है, इसलिए अविनाशी है उसका

स्वरूप कभी बदल नहीं सकता । वह परम और अन्तिम सत्य और सत्ता है अत: वह अकेला और अद्वितीय है उसके सदृश्य और समकक्ष कोई चीज़ भी नहीं । कोई भी उसका बदल (Alternate) नहीं हो सकता ।

ईश्वर के दो रूप माने गए हैं : पर और अपर। इसे निर्गुण और सगुण भी कहते हैं । यह एक ही ईश्वर की दो विशेषताएं हैं । संसार में जो कुछ हम देखते हैं, सब ईश्वर की रचना और उसी की दयालुता और अनुकम्पा है वही जगत का आधार है जगत एक तरह से प्रतीक और उसकी निशानी या चिह्न है जगत और जगत की वस्तुएं किसी असांसारिक और अलौकिक वस्तु या भाव को दर्शाती हैं (उसकी ओर संकेत करती हैं सांसारिक वस्तुएं प्रतीक मात्र हैं, ये अन्तिम सत्य को यथावत प्रकट करने में समर्थ नहीं । प्रतीक की हैसियत मात्र झांकी की होती है मूल तत्व का विषय ज्ञानियों की दृष्टि में मात्र अनुभव का है आंखें उसे नहीं उसके द्वारा देखती हैं । अन्त:करण ही उसका साक्षी है ।

ईश्वर के पर रूप या निर्गुण होने का अर्थ यह है कि उसकी सत्ता रहस्यमय है और रहस्ममय रहेगी । उसे जानने के बाद भी जानना शेष रहता है उसके रहस्य, तथ्य और बारीकियों को पूर्णत: जानना असम्भव है यह उसकी विशिष्टता है वह इस पहलू से पूर्णत: सर्गुण भी है कि जीवन में उससे हमारा घनिष्ट सम्बन्ध है वही हमारे अस्तित्व और जीवन का आधार है ।

कुरआन में ईश्वर को हक़ (सत्य) कहा गया है ।
(देखें– 22 : 6, 24 : 25)

3. सत्य व्यापक (Universal) होता है : ऐसा नहीं है कि वह कभी और कहीं सत्य हो और कहीं या कभी वह सत्य न रहे ।

ईश्वर सत्य है और वह व्यापक और अनन्त भी है सम्पूर्ण जगत उसी के प्रकाश से प्रकाशित है उसी पर सारा अस्तित्व आधारित है वह हमारे अंग-संग भी है सबका आधार वही है और वह स्वयं किसी सहारे और आधार की अपेक्षा नहीं करता । कुरआन का कथन है–

"वह अल्लाह (ईश्वर) यकता है, अल्लाह निरपेक्ष और सर्वाधार है, न वह जनिता, और न जन्य है, और न कोई उसका समकक्ष है ।" (कुरआन, 112 : 1-4)

सत्य और जीवन्त (Alive) परम होता है परम सत्य निर्जीव नहीं होता । इसी लिए उससे आशाएं की जाती हैं और उसकी कृपा और करुणा की हम आशा करते हैं । प्रत्येक जीवधारी उसके जीवन्त सत्ता होने का स्पष्ट प्रमाण है जीवन और चेतना का स्रोत निर्जीव पदार्थ नहीं हो सकता। जीवन में प्रेम भी पाया जाता है और अच्छे-बुरे की पहचान भी है जीवन में नैतिकता की भावना भी पाई जाती है और कल्पना की उड़ान भी । संवेदनशीलता और सुविचारित धारणा और जागरूकता भी इसमें पाई जाती है ये चीज़ें पदार्थ की उपज नहीं हो सकतीं । कुरआन की घोषणा है–

"अल्लाह ही पूज्य है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं वह जीवन्त है, सबको सम्भालने और क़ायम रखनेवाला ।"
(कुरआन, 3 : 2)

4. सत्य आदि और अनन्त होता है सत्य वही है जिसके अभाव की कोई कल्पना नहीं की जा सकती है कुरआन में है–

"आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है वही जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ प्राप्त है वही आदि है और अन्त भी । और वही व्यक्त है और अव्यक्त भी । और वह हर चीज़ को जानता है ।" (कुरआन, 57 : 2, 3)

उपरोक्त समस्त गुण ईश्वर में पाये जाते हैं । अत: ईश्वर ही सत्य है और सत्य ही ईश्वर है ।

5. एक अकेला होने का गुण : ईश्वर परम सत्य है अत: वह एक ही हो सकता है । कई ईश्वर की धारणाओं से सत्य खंडित हो जाता है और ईश्वरत्व की अपार शक्ति विभक्त होकर रह जाती है । जो सत्ता अपार शक्ति और सामर्थ का अधीश या मालिक न हो, वह ईश्वर नहीं हो सकता । ईश्वर सदा-सर्वदा से विद्यमान है । शाश्वत और अनादि होने के लिए अपार शक्ति अपेक्षित है । कई ईश्वर मानने के बाद शक्ति विभक्त हो जाती है । फिर किसी एक के पास अपार शक्ति और प्रताप शेष नहीं रहता । अत: सत्य यह है कि ईश्वरत्व में ईश्वर का कोई साझीदार नहीं हो सकता । ईश्वर एक है और एक ही रहेगा ।

6. शुभ एवं शिवम : सत्य वास्तव में शुभ, शिवम और कल्याणकारी होता है । इसी लिए कुरआन में ईश्वर को 'ख़ैर' (शिवम) और सलाम (सर्वथा मंगलमय) कहा गया हैं । (देखें– कुरआन, 20 : 73 और 59 : 23)

शुभ और भलाई की आशा असत्य से नहीं की जा

सकती । शुभ और कल्याण प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता है । इससे किसी को इन्कार नहीं हो सकता । इसलिए ख़ैर (भलाई) और अपना हित इसी में है कि हम ईश्वर से जुड़ जाएं और उसके और अपने मध्य एकता बनाए रखें । किसी पहलू से भी उसकी इच्छा के प्रतिकूल हमारी कोई गतिविधि और कर्म न हो । ईश-ज्ञान (God Conciousness) हमें संयमी बनाता है । कुरआन में बन्दगी के अर्थों में एक महत्वपूर्ण अर्थ यह बताया गया है कि मनुष्य अपने को ईश्वर के रंग में रंग ले । कुरआन के शब्द हैं–

"अल्लाह का रंग ग्रहण करो । उसके रंग से अच्छा और किसका रंग हो सकता है ? और हम तो उसी की बन्दगी करते हैं ।" (कुरआन, 2 : 138)

अर्थात ईश्वर का रंग ग्रहण करने का अर्थ यह है कि हमारा जीवन ईश्वर के गुणों की प्रतिच्छाया हो । हम भी दया-भाव से परिपूर्ण हों । वह दानशील है, हमारे अन्दर भी दानशीलता पाई जाए । वह सबको आजीविका देता है, हम भी ग़रीबों और दुखियों की सहायता अपने माल और धन से करें । उसे अत्याचार पसन्द नहीं, हम भी अत्याचार और जुल्म के विरुद्ध खड़े हों । इसी प्रकार ईश्वर के दूसरे गुणों को भी हम अंगीकार करें । हमारा सम्पूर्ण जीवन उसके गुणों को प्रतिबिम्बित करे । हम उसके दर्पण बनें । मानव-जीवन का परम उद्देश्य भी यही है यही महत्वपूर्ण बन्दगी है और इसी में सारी भलाइयां निहित हैं । इस्लाम में पांच वक़्त की नमाज़ का विधान इसी लिए है कि हम ईश्वर से जुड़े रहें और यह भाव प्रतिपल बना रहे कि ईश्वर से विलग होकर हमारे जीवन का कोई महत्व नहीं ।

7. सौन्दर्य-बोध : सत्य शुभ ही नहीं, इसमें सुन्दरता और माधुर्य भी होता है सत्य की अपेक्षा यह होती है कि हमारा सब-कुछ सुन्दर हो । ईश्वर ने अपनी रचनाओं और आदेशों में सुन्दरता और मधुरता का विशेष ध्यान रखा है सुन्दरता सत्य का विशिष्ट गुण है कुरआन में है–

"उसने आकाशों और धरती को सोद्देश्य पैदा किया और तुम्हारे रूप बनाए, तो बहुत ही अच्छे बनाए तुम्हारे रूप और उसी की ओर अन्ततः जाना है ।" (कुरआन, 64 : 3)

यह सौन्दर्य का वर्णन बताता है कि सत्य और सौन्दर्य अभिन्न हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने भी कहा है–

"अल्लाह जमील (सौन्दर्यवान) है और सौन्दर्य को पसन्द करता है ।" (हदीस : मुस्लिम)

ईश्वर का स्वरूप आनन्दमय, रसात्मक और सुन्दर है उसकी रचनाओं में सुन्दरता की प्रतिच्छाया देखी जा सकती है । फिर इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि मानव पर ईश्वर की विशेष कृपा है, मनुष्य की जीवन-यात्रा की मंज़िल वह स्वयं अपने-आपको बताता है ।

8. स्वीकार्य : सत्य स्वीकार्य (Acceptable) होता है, अस्वीकार्य नहीं । सत्य ईश्वर ही की खोज है । उसे पाकर ही आत्मा परिपूर्ण होती है और उसे परितोष प्राप्त होता है । कुरआन (13 : 28) में है कि ईश्वर के स्मरण और उसके ज्ञान से ही दिलों को चैन और आराम मिल सकता है । ईश्वर के स्मरण की उपेक्षा करना अपने को विनष्ट करने के सिवा और क्या हो सकता है ! कुरआन में है–

"फिर वही अल्लाह तो है तुम्हारा वास्तविक रब । फिर आख़िर सत्य के पश्चात पथभ्रष्टता के अतिरिक्त क्या रह जाता है ? फिर तुम कहां से फिरे जाते हो ?"

(कुरआन, 10 : 32)

एक दूसरी जगह कहा गया है–

"उनमें से अधिकतर लोग तो बस अटकल और गुमान पर चलते हैं । निश्चय ही अटकल सत्य को कुछ भी दूर नहीं कर सकती । (अर्थात गुमान या अटकल सत्य का बदल कदापि नहीं) ।" (कुरआन, 10 : 36)

9. अर्थवत्ता : सत्य अर्थपूर्ण होता है जीवन और जगत में अर्थवत्ता का आविर्भाव सत्य और जीवन के परम आशय के द्वारा ही होता है और हम जानते हैं कि निरर्थक जीवन कोई जीवन नहीं । यह जीवन की अवहेलना है । सत्य की उपेक्षा स्वयं अपनी उपेक्षा है । यह किसी आघात से कम नहीं और यह महा अपराध भी है । जिसकी सज़ा अवश्य भुगतनी पड़ेगी । यदि हमने इस तथ्य को नहीं जाना, तो हम मानव-स्तर से गिरे हुए हैं और इसके ज़िम्मेदार हम स्वयं होंगे ।

कुरआन में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि ईश्वर ने मनुष्य को सर्वोच्च संरचना के रूप में पैदा किया है और जब वह स्वयं गिरनेवाला होता है तो फिर उसे निकृष्टतम दशा में डाल दिया जाता है । (देखें– कुरआन, 95 : 4, 5)

10. न्याय : सत्य ही न्याय (Justice) है । सत्य न्याय के प्रतिकूल नहीं हो सकता । सत्य का सम्बन्ध विचार, धारणा, कर्म और भाव सभी से होता है । प्रत्येक विषय में न्याय का ध्यान रखना, सत्य का अनुसरण है । न्याय को

त्यागनेवाला कभी भी सत्य-पथ पर चलनेवाला नहीं हो सकता । न्याय ही सत्य-तुला है । न्याय पर ही यह जगत सुचारू रूप से चल रहा है । प्रत्येक तारे के लिए जो मार्ग नियत किया गया है वह उससे हटकर गतिशील नहीं होता। अन्यथा यह जगत नष्ट-भ्रष्ट होकर रह जाए । मानव-जीवन में भी न्याय का पालन अनिवार्य है । सत्य या न्याय के विस्मरण से ही संसार में बिगाड़, अशान्ति और उपद्रव पैदा होते हैं और समाज में एक-दूसरे से शिकायतें पैदा होती हैं । सत्य सहयोग की शिक्षा देता है, वह असहयोग की शिक्षा कदापि नहीं देता ।

11. क्रियाशीलता : सत्य निष्क्रिय नहीं होता । वह जीवन्त होता है । अत: जीवन्त होने के कारण ईश्वर परम सत्य है । वह अपनी कार्य-कुशलता का परिचय अपनी संरचनाओं और कार्यों के द्वारा देता है । कुरआन में है–

''ईश्वर ही है जो रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है । सुनता और देखता है । और ईश्वर हक़ (सत्य) है और जिसे लोग उसे छोड़कर पुकारते हैं वे सब असत्य हैं । ईश्वर ही सबसे उच्च और सबसे बड़ा है ।'' (कुरआन, 22 : 61, 62)

जगत और जीव आदि इसका स्पष्ट प्रमाण हैं कि परम सत्य ईश्वर निष्क्रिय कदापि नहीं हो सकता । सृष्टि और रचना-कार्य उसके जीवन्त, कुशल और तत्त्वदर्शी होने को प्रमाणित करते हैं ।

12. कमनीय होता है : परम सत्य ईश्वर रमणीय और सौन्दर्यवान है । वह ऐसा है कि हम उसकी कामना कर सकें । वास्तव में वही सत्यवान और कामना-योग्य (Desir able) है । हृदय यदि उसकी कामना से रिक्त है, तो हृदय मात्र पाशविक होकर रह जाता है । अपनी कामनाओं और चेष्टाओं से ही आदमी की पहचान होती है । मानव की श्रेष्ठता का विशेष कारण यह है कि उसे ईश-प्राप्ति की कामना प्रदान की गई है । कामना ही मानव है । उसकी कामना ही निर्णायक है कि वह क्या और कैसा है । इससे बड़ी कामना सम्भव नहीं कि मनुष्य ईश्वर के सामीप्य का अभिलाषी हो । ईश्वर चाहता है कि मनुष्य उसके गुणों और आभा से प्रतिबिम्बित हो और उसका कृतज्ञ बनकर रहें कृतज्ञता इसका लक्षण है कि मनुष्य ने अपने प्रभु पालनकर्ता और उसके गुणों और महानता को जान लिया है ।

13. बहुमूल्य : जीवन में सबसे बहुमूल्य चीज़ ईश्वर के गुणों और सौन्दर्य से परिचित होना है । जीवन में दिव्यता जगत-सखा ईश्वर को धारण करने से ही आती है । ईश्वर आनन्द-स्वरूप है । उसे ज्ञानियों ने 'रत्सो वैस:' (तैत्तिरीयोपनिषद 2/7/2) अर्थात ''वह रस-स्वरूप है'' कहा है । अत: वह ऐसा है कि आनन्द बनकर हमारे जीवन में सम्मिलित हो । वह ऐसा आनन्द-स्वरूप (Enjoyable) है कि मनुष्य उसे अपने निकट पाकर आनन्दित हो । वह ऐसा महसूस करे कि पाने को अब कुछ शेष नहीं रहा । उसने सब-कुछ पा लिया ।

परम सत्य ईश्वर से सम्पर्क स्थापित करना, परम साधना है । ईश्वर से सम्पर्क तत्काल सम्भव है, इसमें विलम्ब नहीं । उसका सामीप्य तो हमें जीवन के साथ प्राप्त होता है । किन्तु हमें इसका एहसास नहीं होता और न हम इसकी ओर ध्यान देते हैं ।

14. शाश्वतता : सत्य शाश्वतता की अपेक्षा करता है । ईश्वर ने जिस योजना के अन्तर्गत जगत और जीवन की रचना की है, यदि उसका सम्बन्ध शाश्वत से न हो, तो उसकी रचना मात्र सामाजिक खेल और क्रीड़ा होकर रह जाए । फिर जीवन और जगत को हम सत्य नहीं कह सकते। ईश्वर की महानता के विरुद्ध है कि उसकी योजना मात्र सामयिक हो । अत: मानना पड़ेगा कि ईश्वर की योजना का सम्बन्ध शाश्वतता (Eternity) से है । जगत का संचालन मानव के हित में है । जगत का सब-कुछ मानव-सेवा में रत है ।

अत: यह सम्भव नहीं कि जगत तो शेष रहे, उसके पर्वत तो खड़े रहें, सरिताएं प्रवाहित रहें और मनुष्य एक-एक करके समाप्त हो जाए अर्थात प्रत्येक व्यक्ति का अन्त हो जाए ।

मृत्यु का अर्थ यह कदापि नहीं कि मृत्यु मनुष्य का अन्त है । शरीर त्यागने के बाद भी मनुष्य अपने आत्मिक गुणों और अपने व्यक्तित्व के साथ शेष रहता है । उसकी जीवन-यात्रा का मात्र सोपान बदल जाता है वह उस परम लोक की ओर प्रस्थान करता है । यदि उसने अपने सांसारिक जीवन में सत्य और ईश्वर की इच्छा के अनुसार आचरण किया है, तो उसका जीवन ऐसी शाश्वतता का अधिकारी होगा जो शुभ और आनन्द ही आनन्द है । अन्यथा उसका शाश्वत जीवन पीड़ा और संतप्त होकर रहेगा ।

सांसारिक जीवन के पश्चात अन्तिम निर्णय का दिन

आएगा कि किस व्यक्ति को कहां रखा जाए–स्वर्ग (जन्नत) में या नरक में। निर्णय के दिन का अधीश और अधिकारी एक ईश्वर ही होगा। उसका निर्णय न्याय और सत्य के अनुसार होगा। उससे किसी व्यक्ति का शुभ या अशुभ छिपा नहीं रह सकता। (देखें– कुरआन, 1 : 3)

15. प्रामाणिकता : सत्य का प्रामाणिक होना आवश्यक है, अन्यथा इसकी आशंका शेष रहेगी कि आदमी असत्य को सत्य समझ ले और वह इस भ्रम में पड़ा रहे कि वह सत्य मार्ग पर चल रहा है। अशुभ को शुभ और असत्य को सत्य समझ लेने से न अशुभ, शुभ हो सकता है और न असत्य, सत्य हो सकता है। अत: इस सम्बन्ध में मनुष्य को अत्यन्त सतर्क रहने की आवश्यकता है।

16. धर्म : धर्म भी वास्तव में परम सत्य, ईश्वर पर आधारित है। वह ईश्वर और उसके गुणों का प्रतिबिम्ब (Reflection of God) है। ईश्वर एक है, अत: धर्म भी एक होगा और वह ईश्वरीय गुणों को व्यक्त करेगा। ईश्वर एक है अत: सत्य धर्म कई नहीं हो सकते। ईश्वर व्यापक है, धर्म में भी व्यापकता का गुण पाया जायेगा। वह लोगों को तोड़ने की नहीं, लोगों को परस्पर जोड़ने की चेष्टा करेगा। वह चाहेगा कि सभी लोग ईश्वर के बन्दे और आपस में भाई-भाई बनकर रहें।

ईश्वर की बन्दगी और उससे अगाध प्रेम ही धर्म है। सम्पूर्ण जीवन में इसका निर्वाह करना हमारा परम कर्तव्य है। हम उसके स्वरूप के अनुरूप जीने का प्रयास करें। हमारा जीवन उसका दर्पण हो। ज्ञान हममें हो। पवित्रता हममें हो। दानशीलता हमारा स्वभाव हो। करुणा, दया हमारे हृदय में हो। हमारा हृदय विमल हो। वह संकुचित न हो, विशाल हो। हम सारी मानवता का हित चाहें। हमें लोगों के लोक-परलोक दोनों ही की चिन्ता हो और इसके लिए हम प्रयत्नशील हों। हृदय की पवित्रता और कोमलता नष्ट न होने दें। ईर्ष्या, स्वार्थपरता, कपट-छल, दुर्भावना आदि से हम दूर रहें।

मानव-प्रेम, करुणा, सहानुभूति, शुभेच्छा, और परोपकार को हम अपना कर्तव्य समझें।

ईश्वर की हमपर जो कृपा और उपकार हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती। वह इसके बदले में यदि कुछ चाहता है, तो बस यह कि हम उसके कृतज्ञ और आभारी रहें। दूसरी चीज़ जो वह हमसे चाहता है वह यह है कि हम उस जैसे गुणों वाले बनें। अर्थात हमारे जीवन में उसके गुण प्रतिलक्षित हों। हम उसके दर्पण बनें। इस दर्पण में उसकी छवि प्रतिबिम्बित हो। उसके गुणों को जीवन में उतारने की कोशिश करें। ईश्वर ही हमारे जीवन का लक्ष्य हो और उसके गुण हमारे लिए मार्ग-दर्शक। निश्चय ही ईश्वर हमारा सहायक होगा।

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात हुआ कि सत्य ही हर एक का "मूल आधार" है। सत्य का निषेध स्वयं अपना निषेध है, ईश्वर के उपकारों की अवहेलना है और यह अक्षम्य अपराध है।

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी। इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे। प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी। मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं। विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

Regd. No. 200041100133
Prop. Md. Aslam

06546-321302
9931579552



M/s SONU ENTERPRISES

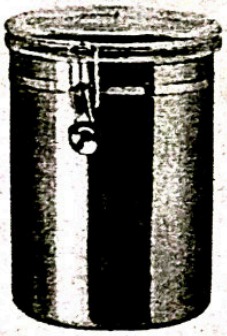

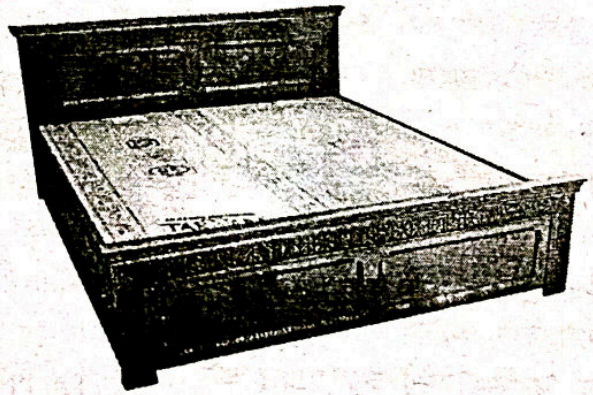

Manufacturer & Supplier :

STEEL ALMIRAH
Steel Box & Steel/Wooden Furniture

Ansar Nagar, Pugmil, Hazaribagh (Jharkhand)

हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा (रज़ि॰)

● माइल ख़ैराबादी

अल्लाह तआला जिन बहुत-सी ख़ूबियों का मालिक है कोई उनकी हद और इंतिहा को नहीं पा सकता । न तो अल्लाह के क़हर व ग़ज़ब का अंदाज़ा ही लगाया ज़ा सकता है और न उसके रहम व करम की हदबंदी की जा सकती है । अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़ात (ख़ूबियों) की मज़हर (नमूना) नबियों को बनाया । अंबिया (अलैहि॰) में जनाब नबी करीम (सल्ल॰) के हालात जिस तफ़्सील से हमें मिलते हैं इस तरह किसी दूसरे नबी के हालात हमारे सामने नहीं । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बहुत-से वाक़ियात ऐसे हैरान कर देने वाले हैं कि जब हम उन्हें पढ़ते हैं तो यह सोचने लगते हैं कि एक इन्सान ऐसा कर भी सकता है ? मिसाल के तौर पर मक्का की फ़तह के वक़्त हुज़ूर (सल्ल॰) ने जिस तरह माफ़ी और करम से काम लिया, अस्ल में वे तमाम की तमाम हैरतअंगेज़ है ।

उस वक़्त हुज़ूर (सल्ल॰) आपके बदतरीन दुश्मन सर झुकाए खड़े थे इन्तिज़ार में थे कि हुज़ूर की ज़बान से क्या हुक्म सादिर होता है? लेकिन अल्लाह के नबी (सल्ल॰) ने सबको माफ़ कर दिया । सैयदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) आपके चचा थे और इस्लाम के सरफ़रोशों में जिनका मक़ाम ऊंचे से ऊंचा है उन्हीं हमज़ा (रज़ि॰) के क़ातिल वहशी जब माफ़ी मांगने आये तो अल्लाह के नबी (सल्ल॰) ने माफ़ कर दिया । हालांकि चचा की शहादत का हुज़ूर के दिल पर बेहद सदमा था । फिर मुहब्बत के साथ वहशी से फ़रमाया कि देखो, 'तुम्हें माफ़ तो कर दिया गया है लेकिन अब मेरे सामने मत आना ।'

शायद यह कहने से मंशा यह हो कि कहीं इन्सान होने के तक़ाज़े की वजह से ज़बान से कोई लफ़्ज़ ऐसा निकल जाए जो वहशी की आख़िरत के लिए नुक़्सानदेह हो या फिर यह कि चचा की शहादत से हुज़ूर (सल्ल॰) के दिल पर चोट पड़ी थी, फिर ताज़ा हो जाए ।

देखा आपने ? ऐसे आदमी को माफ़ कर दिया और आज हम उन्हीं हज़रत वहशी (रज़ि॰) कहते हैं ।

क्यों ...? इसलिए कि अल्लाह का रसूल उनसे राज़ी हो गया । इसी तरह हज़रत वहशी से ज़्यादा मुजरिम एक ऐसी औरत को माफ़ कर दिया गया जिसने हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) की शहादत के बाद उनकी लाश का मुसला (अनादर) किया था । नाक, कान काटे और हार बनाया और गले में पहना ।

उसके दिल की सख़्ती की फिर भी तसल्ली न हुई तो फिर सीना चीरकर कलेजा निकाला और चाहा कि चबाकर निगल जाए, लेकिन निगला न गया और मुंह से उगल दिया । इसे भी हुज़ूर (सल्ल॰) ने माफ़ कर दिया और फिर आज हम उसी औरत या उन्हीं ख़ातून को बिल्कुल इसी तरह याद करते हैं जिस तरह एक सहाबी को याद किया जाता हैं । हम उनका नाम इस एहतिराम से लेते हैं "हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा (रज़ि॰)" हमारे इस तरह नाम लेने की वजह यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनको माफ़ कर दिया और उनसे राज़ी हो गए ।

आज हम उन्हीं हज़रत हिन्द (रज़ि॰) का मुख़्तसर हाल बयान करते हैं और इससे हमारा मक़सद यह है कि उनके वाक़िआत जानकर हम ख़ुद सबक़ हासिल करें ।

हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा (रज़ि॰) क़ुरैश के सबसे बड़े रईस उत्बा की बेटी थी । यह उत्बा वही शख़्स है जिसे क़ुरैश ने नबी करीम के पास सुलह के लिए भेजा था ताकि आप (सल्ल॰) अपनी दावत में नरमी और लचक पैदा कर लें और इसके बदले में चाहें तो उन्हें सरदारी दे दी जाए, चाहें तो इतनी दौलत दे दी जाए कि सात पुश्तों तक काफ़ी हो, या चाहें तो अरब की सबसे बड़ी हसीना आपकी ख़िदमत में पेश कर दी जाए ।

यह उत्बा वही उत्बा हैं जो जंगे ब्रद में काफ़िरों के लश्कर का सिपहसालार बन गया था और अपने को इतना ऊंचे दर्जे का समझता था कि अपने कमतर सिपाही से लड़ना पसन्द नहीं करता था । यही उत्बस नबी करीम (सल्ल॰) के बहादुर चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) के हाथ से मारा गया । यही उत्बा हज़रत हिन्द (रज़ि॰) का बाप था ।

आप समझ लीजिए कि ऐसे बाप की तरबियत में जो लड़की पले-बढ़ेगी, वह किस दिल व दिमाग़ की औरत बन सकती है ? सोने पर सुहागा यह की शादी भी हुई तो ऐसे आदमी से जो मिज़ाज व किरदार के एतबार से दूसरा उत्बा था यानी अबू सुफ़ियान बिन हरब । हरब अरब का वह मशहूर बाहदुर शख़्स हुआ है जो अरब की मशहूर लड़ाई जंगे फुज्जार में कुरैश का सिपहसालार आज़म था । ग़ौर कीजिए, बाप वैसा और शौहर ऐसा । हक़ीक़त भी यही है कि हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा (रज़ि॰) का दिल चट्टान की तरह सख़्त था । जब तक वे इस्लाम न लायीं, मुसलमानों के मुक़ाबले में उनकी बदतरीन दुश्मन रहीं । फिर जब मुसलमान हो गयीं तो दिल की सख़्ती का रुख़ कुफ़्र की तरफ़ हो गया और वे कुफ़्र की मुख़लिफ़त में चट्टान की तरह साबित हुईं । हज़रत हिन्द के ये दोनों रुख़ दिलचस्प होने के साथ-साथ इबरतअंगेज़ भी हैं । एक तरबियत पाने वाला बड़ी नसीहत हासिल कर सकता है ।

हम ऊपर यह बता ही चुके हैं कि बद्र की लड़ाई में मक्के के और भी बहुत-से बड़े-बड़े लोग मारे गये थे । इनके बाद कुरैश का सबसे बड़ा रईस अबू सुफ़ियान हुआ । इधर अबू सिफ़यान ने जंगे बद्र का बदला लेने की क़सम खायी, उधर उसकी बीवी हिन्द ने बाप के क़ातिल हमज़ा (रज़ि॰) से इन्तिक़ाम लेने की ठानी ।

जंगे बद्र के बाद दूसरे साल ही जब मक्के से बड़े लावलश्कर के साथ अबू सुफ़ियान सिपहसालार बनकर मदीने की तरफ़ चला तो हिन्द भी बहुत-सी औरतें के साथ चलीं । हिन्द ने मक्के के मुश्रिकों की हिमायत में इस लड़ाई (जंगे उहद) में जिस जोश और ग़ैज़ व ग़ज़ब का मुज़ाहिरा किया, उससे दिल कांप जाता है ।

जिस वक़्त मक्के के काफ़िरों और मदीने के मुसलमानों का मुक़ाबला हुआ, उस वक़्त हिन्द रिज़्ज़या (लड़ाई पर उभारने वाले) और जोशीले गीत गा-गाकर काफ़िरों को मारने और मरने पर उभार रही थीं । उनके जोश का अन्दाज़ा उनके गीत से लागया जा सकता है जो दूसरी औरतों के साथ अरब के मशहूर साज़ 'दफ़' पर गा रही थीं नमूने के तौर पर सिर्फ़ दो शेअरों का अनुवाद नीचे दिया जा रहा है–

हम आसमान के तारों की बेटियां हैं
हम क़ालीनों पर चलने वालियां हैं
अगर तुम आगे बढ़कर लड़ोगे तो
हम तुमसे गले मिलेंगी ।
और पीछे क़दम हटाया तो हम
तुम से अलग हो जाएंगी ।

इस लड़ाई में हिन्द की वह दिली मुराद पूरी हो गयी जो हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) की शहादत के लिए वह मांग रही थी । जैसे ही सुना कि हज़रत हमज़ा ज़ख़्मी होकर घोड़े से गिरे और उनकी रूह जिस्म से निकल गयी, वे हज़रत हमज़ा की लाश की तरफ़ बढ़ी, लाश का मुसला किया । कलेजा निकालकर चबाया और इस तरह अपने दिल को तस्कीन दी । हिन्द का यह इंतिक़ाम इस क़द्र था कि बड़ों-बड़ों से देखा न जाता था । ख़ुद उनके शौहर अबू सुफ़ियान ने जब यह सुना तो बोला कि मैंने यह हुक्म नहीं दिया था लेकिन हिन्द ने जो कुछ किया उससे मुझे रंज नहीं हुआ ।

हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) हुज़ूर (सल्ल॰) के चचा थे । अरब के मशहूर बहादुर पहलवान थे । इस्लाम के एक बड़े हिमायती और मुश्पीबान थे । सच्चे मुसलमान थे । हुज़ूर (सल्ल॰) के दूध शरीक भाई भी थे । साथ खेलते थे उम्र में साल सवा साल ही का फ़र्क़ था । रिश्ते के एतबार से भी काफ़ी मोहब्बत करते थे । फिर यह कि ग़रीबों के हमदर्द और बड़े फ़य्याज़ इन्सान थे । उनकी ख़ूबियों ने हुज़ूर (सल्ल॰) को उनका मतवाला बना दिया था । इन्हीं हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) की दिल हिला देने वाली हालत देखी तो आपको कितना ग़म हुआ ? इसका अन्दाज़ा इस क़सम से हो सकता है जो आपने इस मौक़े पर खायी– "ख़ुदा की क़सम ! एक हमज़ा का बदला सत्तर काफ़िरों से लूंगा ।" लेकिन फ़ौरन अल्लाह ने ऐसा बदला लेने से मना फ़रमाया । आपने सब्र किया और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दिया ।

हिन्द की यह संगदिली हरगिज़ इस क़ाबिल न थी कि उन्हें माफ़ किया जाता । लेकिन जब हुज़ूर (सल्ल॰) ने मक्का फ़तह किया तो अबू सुफ़ियान को भी माफ़ कर दिया

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

और हिन्द को भी । हिन्द को जब इस माफ़ी की ख़बर मिली तो वे हैरान रह गयीं । अब दिल ने करवट बदली, अपेन किये पर पछतायीं, शर्म के मारे चेहरे पर नक़ाब डालकर हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में आयीं । लेकिन इस शान की औरत को हुज़ूर कैसे न पहचान लेते ? आप ने पहचान लिया तो हज़रत हिन्द ने कहा कि मैं बैअत करते वक़्त आपसे सख़्ती के साथ बात करूंगी । हुज़ूर (सल्ल०) ने मंज़ूर फ़रमाया । इसके बाद यह बातचीत हुई ।

हिन्द– "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! आप हमसे किन बातों पर बैअत लेते हैं ?"

हुज़ूर– "यह कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करना ।"

हिन्द– "यह इक़रार आपने मर्दों से नहीं लिया फिर भी हमें मंज़ूर है ।"

हुज़ूर– "चोरी न करना ।"

हिन्द– "मैं अपने शौहर अबू सुफ़ियान के माल में से दो-चार आने कभी ले लिया करती हूं । मालूम नहीं जायज़ है या नहीं ?"

हुज़ूर– "औलाद को क़त्ल न करना ।"

हिन्द– "हमने अपने बच्चों को पाला था, बड़े हुए तो जंगे बद्र में आपने उनको मार डाला, अब और व आपस में समझ लें ।"

हज़रत हिन्द ने इस ढिठाई के साथ बैअत की, लेकिन जब देखा कि हुज़ूर (सल्ल०) ने चेहरे पर बल तक नहीं आया तो बोलीं, "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! इस वक़्त से पहले मैं आपको अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझती थी, लेकिन अब आपसे बढ़कर मेरा कोई महबूब नहीं ।"

बैअत के बाद हिन्द जब घर पहुंची तो अब वह हिन्द न थी जो पहले थीं । घर में इबादत के लिए जो बुत नस्ब कर रखा था उसे उठाकर पटक दिया । इस पर लानत भेजी और कहा, "तेरी ही वजह से हम सब गुमराही में पड़े थे ।"

मुसलमान होने के बाद उन्होंने अपने ईमान को पुख़्ता से पुख़्तातर किया । जिस क़दर नफ़रत उनको इस्लाम से थी अब उसकी जगह कुफ़्र ने ले ली । चुनांचे एक ऐसा ही वलवला जो कुफ़्र की हालत में उहुद की लड़ाई के वक़्त था वैसा ही वलवला जंगे यरमूक के मौक़े पर देखा गया ।

हज़रत उमर (रज़ि०) की ख़िलाफ़त के ज़माने में यरमूक की लड़ाई सख़्त तरीन जंगों में से एक थी । इस जंग में हज़रत अबू सुफ़ियान उनकी बीवी हिन्द और उनके बेटे यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान बड़े जोश के साथ शरीक हुए । इस लड़ाई में एक वक़्त ऐसा भी आया कि मुसलमानों के एक दस्ते ने कम हिम्मती दिखाई और उन्होंने पीछे क़दम हटाया तो हज़रत हिन्द (रज़ि०) ने तमाम औरतों के साथ ख़ेमों की चोबें हाथों से लेकर डांटा और कहा कि अगर तुम पीछे हटे तो हम इन चोबों से तुम्हें मारेंगे । उनके इस तरह ग़ैरत दिलाने से उन पस्त हिम्मत मुसलमानों के क़दम जमे और फिर उन्होंने यह लड़ाई जीत ली ।

हज़रत हिन्द (रज़ि०) बड़े बाप की बेटी और रईस की बीवी थीं । इसलिए सख़ावत में बढ़कर-चढ़कर हिस्सा लेतीं । मुसलमान होने के बाद तो बहुत ज़्यादा ख़ैरात करतीं । कुफ़्र के ज़माने में इस्लाम के मुक़ाबले में जो ताक़त ख़र्च कर चुकी थी उसे याद करके रोतीं और अपने रब से माफ़ी मांगा करती थीं ।

व्यंग्य कविता

बेईमानों की भीड़ में

बेईमानों की भीड़ में सारे ईमानदार खो गये
इसलिए मुल्क के आज ये हालात हो गये

किससे करें अब फ़रियाद, चलता नहीं किसी का ज़ोर
जिसको रहनुमा समझा था वे निकल गये सब चोर

पहरेदार भी यहां के सारे के सारे ही सो गये
बेईमानों की भीड़ में सारे ईमानदार खो गये

चुरा लिया है कोयल का कौओं ने सारा ही राग
इसलिए भरी महफ़िल में वो चमका रहे हैं अपने भाग

हर रास्ते में इस क़दर, वे कांटे ही बो गये
बेईमानों की भीड़ में सारे ईमानदार खो गये

होती है आज उसी की इस जहां में जय-जय कार
जो करता है ग़लत काम वो है तमग़ों का हक़दार

गधों को देकर मात, आदमी उनके बोझ ढो गये
बेईमानों की भीड़ में सारे ईमानदार खो गये ।

रमेश मनोहरा
शीतला गली, जावरा, रतलाम

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

[illegible]
Janab Imaamuddin Nizamuddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

कब लागू होगा सम्पूर्ण भारत में पूर्ण मद्य निषेध ?

● ज़हीर ललितपुरी

सब जानते हैं कि शराब या अन्य नशावर चीज़ें इन्सान के शरीर, और ज़मीर पर बुरा असर डालती हैं । हर नशा अनेकों ख़तरनाक व जानलेवा जिस्मानी व ज़ेहनी और रूहानी बीमारियों का कारण है । इसीलिए धार्मिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टि से शराब आदि के सेवन और प्रचलन को अच्छा नहीं समझा जाता । विभिन्न माध्यमों से इसके सेवन से होने वाले दृष्परिणामों से लोगों को आगाह किया जाता है, किन्तु चिन्ता का विषय यह है कि इसके प्रचलन में कमी आने के बजाय और वृद्धि हो रही है । यहां तक कि अब सामाजिक अवसरों जैसे शादी विवाह आदि के अवसरों पर और धार्मिक तीज त्योहारों के अवसरों पर शराब का प्रचलन लगातार बढ़ता जा रहा है । जहां एक ओर इस बात की आवश्यकता प्रतीत होती है कि पूरे देश में पूर्ण मद्य निषेध को लागू किया जाए, वहीं दूसरी तरफ़ ऐसा निराशाजनक वातावरण है । इतने बड़े-बड़े नुक़सानों के बावजूद इसे रोकने को कोई सार्थक प्रयास नहीं दिखाई देता ।

शराब-इस्लाम और दुनिया के अन्य धर्म

मानव समाज में शराब का प्रचलन नयी बात नहीं है । आदि काल से मनुष्य शराब का किसी-न-किसी रूप में सेवन करता आ रहा है । जब से शराब का प्रचलन समाज में हुआ है तभी से उसके दुष्परिणाम से भी मनुष्य अनभिज्ञ नहीं है । कुछ धार्मिक समुदायों में ऐसी परंपरा और रीति-रिवाज है जो शराब के प्रचलन को मान्यताएं देते हैं, परन्तु शायद ही कोई धर्म होगा जिसके सिद्धान्त, आस्थाएं, विश्वास और मान्यताएं शराब के सेवन का समर्थन करते हों । हालांकि दुनिया में इस्लाम धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसमें शराब पीना पूरी तरह से हराम है और सिर्फ़ हराम नहीं है बल्कि उसको बनाने वाले, बनवाने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले, ख़रीदने वाले सभी गुनाहगार हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सख़्त आदेश है कि हरगिज़ शराब न पीना क्योंकि शराब सारी बुराइयों की जड़ है । उनकी नज़र में शराब पीना और जुआ खेलना बहुत बड़े गुनाह हैं । इसलिए आज भी मुस्लिम मुल्कों में क़ानूनी तौर पर शराब पर पूर्ण पाबन्दी है । जिन मुल्कों में मुसलमानों की हुकूमत नहीं है वहां पर भी मुसलमान अपने तौर पर शराब का निषेध रखते हैं यानी मुस्लिम समाज में एक तरह से पूर्ण मद्य निषेध होता है ।

मुस्लिम समाज में लागू है पूर्ण मद्य निषेध

ताहम मुस्लिम समाज एक ऐसा समाज है जिसमें सामाजिक स्तर पर पूर्ण मद्य निषेध लागू है । आज भी इस्लामी समाज में शराब पीने वाले को सम्मान की नज़र से नहीं देखा जाता है और न ही शराब का करोबार करने वालों को । इसलिए कोई सच्चा मुसलमान न कभी शराब का सेवन करता है और न ही शसब के कारोबार का करना पसन्द करता है । यदा-कदा यदि कोई मुसलमान शराब का सेवन करता भी है तो उसको न उसके घर के लोग अपनाते हैं न बाहर वाले । एक शराबी और नशेड़ी का अघोषित सामाजिक बहिष्कार हो जाता है । उसकी शादी होना असंभव होती है क्योंकि कोई भी लड़की या उसके मां-बाप किसी शराबी को अपनाने को तैयार नहीं होते ।

जहां एक तरफ़ मुसलमान ख़ुदा के ख़ौफ़ की वजह से शराब से बचते हैं वहीं दूसरी तरफ़ यह सामाजिक और नैतिक दबाव भी उन्हें शराब पीने से रोकता है । इस तरह से अन्य धर्मों में भी शराब के सेवन एवं प्रचलन को मान्यता नहीं है । सिर्फ़ इस्लामी समाज में ही नहीं बल्कि किसी भी समाज में शराब पीने वाले को सम्मान की नज़र से नहीं देखा जाता । बड़े-से-बड़ा शराबी यानी वेरी हैवी ड्रिंकर भी शराब

पीने को अच्छा नहीं समझता । यह कहना ग़लत न होगा कि अगर किसी धर्म में शराब को मान्यता दी जाती है तो वह सच्चा धर्म नहीं हो सकता । अगर किसी समाज में शराब को बुरा नहीं माना जाता तो वह सभ्य समाज नहीं माना जा सकता । अगर कोई राष्ट्र शराब को क़ानूनन रोकने में असमर्थ है तो वह सफल राष्ट्र नहीं कहा जा सकता । लेकिन फिर भी लोग शराब पीते हैं तो उनकी बेवक़ूफ़ाना हरकत ही समझी जायेगी ।

शराबख़ोरी के भौतिक नुक़सान

शराब के इन्सान पर पड़ने वाले नुक़सानों को कौन नहीं जानता । कोई भी शराबी नशे की हालत में न शारीरिक रूप से सही काम कर पाता है और न ही मानसिक रूप से । जब वह चलता है तो डगमगाता हुआ चलता है । कहीं पांव रखता है और कहीं पांव पड़ता है । वह कहीं भी गिर पड़ता है और कहीं भी लेट जाता है । न सड़क को सड़क समझ पाता है न ही नाली को नाली । कूड़ेदान के पास भी इस प्रकार पड़ा रहता है जैसे फूलों की सेज पर लेटा हो । जब बात करता है पागल दीवानों की तरह । उसकी हरकतों से घर के लोग भी परेशान रहते हैं और समाज के लोग भी । जब लड़ने पर आता है तो उसे रोकना मुश्किल होता है । ज़्यादातर लोग आत्म-हत्या शराब के नशे में करते हैं । शराब इन्सान के वजूद को ख़तरे में डाल देती है । कहा जाता है कि शराब अपराध की जननी है । बहुत सारे अपराधों का कारण शराब और अन्य नशावर चीज़ें हैं । आजकल जहां-जहां मासूम अबला नारियों के साथ बलात्कार और छेड़छाड़ की घटनाएं घट रही हैं उनमें अधिकांश अपराधी शराब या किसी न किसी अन्य नशे के शिकार होते हैं ।

शराब या नशावर चीज़ों का इस्तेमाल सिर्फ़ धार्मिक, नैतिक और सामाजिक रूप से नुक़सानदेह नहीं है बल्कि इन्सान के स्वास्थ के लिए भी ख़तरनाक है । जैसे-जैसे मनुष्यों के ज्ञान में वृद्धि हो रही है शराब के दुष्परिणामों के बारे में लोगों को जानकारी बढ़ रही है । आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में, नये-नये अनुसंधान करके शराब की लत से होने वाले शारीरिक नुक़सानों और इससे होने वाले ख़तरनाक रोगों के बारे में काफ़ी प्रचार-प्रसार किया जा रहा है । इसके बावजूद आधुनिक जीवन पद्धति और आधुनिक संस्कारों में शराब के प्रचलन को इस प्रकार से सम्मिलित किया जा रहा है जैसे वह बड़ी नेमत हो और मनुष्यों के लिए और मानव समाज के लिए बहुत लाभदायक हो । आजकल शराब इस तरह वर्तमान सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग बनती जा रही है जैसे उसके बग़ैर सभ्य और सुसंस्कृत होना असंभव हो । ऐसे माहौल में ख़ुद ब ख़ुद एक सवाल जेहन में आता है कि क्या शराब मानव जाति के लिए इतनी आवश्यक है कि उसके प्रचलन को रोकना असंभव हो ।

शराब के प्रति विरोधाभासी सोच

इसका कारण शराब के बारे में एक अजीब व ग़रीब विरोधाभासी सोच है । एक तरफ़ उपदेशों में इससे दूर रहने को कहा जाता है और दूसरी तरफ़ सार्वजनिक स्थलों पर बने मदिरालयों में मदिरापान करने वालों की भीड़ लगी दिखाई देती है । आधुनिक, सभ्य, विकसित पढ़े-लिखे लोगों के समाज के अधिकांश समारोहों, पार्टियों, उत्सवों, शादी विवाह के अवसरों और धार्मिक त्योहारों में शराब का बिना झिझक खुलेआम सेवन जारी है । कई लोग तो अपने घर में एक कमरा मयख़ाना के लिए बनवाते हैं जिसमें महंगी महंगी शराबें रखने में अपनी शान समझते हैं । क़ानूनी और प्रशासनिक दृष्टि से भी इसको मान्यता प्राप्त है । सरकारें शराब के ठेकेदारों को शराब बनाने और बेचने के लाइसेंस और बड़ी क़ीमत पर ठेके प्रदान करती है । शराब की बिक्री से प्राप्त टैक्स को सरकार के लिए बहुत बड़ा आर्थिक स्रोत माना जाता है । इसीलिए मेन सड़क पर, खुले बाज़ार में, सार्वजनिक स्थानों पर और धार्मिक स्थानों के पास मदिरालय और कलारियां खुली हुई हैं ।

वस्तुतः आज शराब का प्रचलन जितना बढ़ जाए और उसे कितना भी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा का विषय मान लिया जाए किन्तु उसके सेवन को किसी भी तरह से उचित नहीं माना जा सकता है और न ही किसी शराबी या नशेड़ी को समाज में उचित व सच्चा सम्मान मिल सकता है । किसी तरीक़े से शराबी या नशेड़ी व्यक्तियों को उसके दुष्परिणामों से नहीं बचाया जा सकता है । अगर एक बार किसी व्यक्ति में नशे की आदत पड़ जाती है तो अमूमन उससे मरने के बाद ही छुटकारा मिलता है । इसलिए इस बुराई को दूर करने के लिए ख़ासकर युवा पीढ़ी और आने वाली नस्लों को इस बुराई से बचाने के लिए पूरे समाज और राष्ट्र को चिन्तन मनन करके प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक और नैतिक स्तर पर सार्थक प्रयास करने चाहिए ताकि सम्पूर्ण भारत में पूर्ण मद्य निषेध लागू करके उसकी रोकथाम सुनिश्चित की जा सके ।

मंगरू

● विद्या प्रकाश

वारणसी-जौनपुर रोड पर छोटा-सा बाज़ार है सरकोनी । वाहनों की आमद-रफ़्त ग्राहकों की ख़रीद-फ़रोख़्त तथा राहगीरों की चहल-पहल से सदैव गुलज़ार और मनसायन रहने वाले सरकोनी बाज़ार से फ़क़त 3 किलोमीटर के फ़ासले पर दूसरा छोटा-सा कचगांव बाज़ार मौजूद है, जहां की ऐतिहासिक कजली पूर्वांचल प्रख्यात है '। विशाल चतुर्भुजाकार पोखरा प्राथमिक पाठशाला, अध्यापकों तथा उल्पवय विद्यार्थियों का सैलाब, दुकानदारों की पांति, चायपान की दुकानों पर चाय की गरमागरम चुस्कियां और पान की हरित गिलोरियों के बीच अख़बार बांचते ग्राहक यानी कुल मिलाकर कचगांव बाज़ार का दृश्य प्रतीत होता था । प्रातः काल से लेकर सायंकाल तक लोगों का प्रयोजनवश आवागमन लगा रहता था। इसी कचगांव बाज़ार से सटा हुआ गांव है राजेपुरा इस गांव में मंगरू नामक कहार सपरिवार रहता था ।

कहारों का अपना जातीय संगठन भी है मगर इसे जागरूकता का अभाव कहें या संगठन की कमी, कहारों की आज कोई राजनीतिक और सामाजिक महत्ता दृष्टिगत नहीं हो रही है । पहले भी थी और आज भी उनकी स्थिति दयनीय है । आमदनी के नाम पर उन्हें ख़ाली जजमानी का ही भरोसा है । वैवाहिक कार्य से प्रारंभ से लेकर लड़की की विदाई में डोली पालकी ढोते तक कहार हमारी परम्परा से अभिन्नतः जुड़ा है । वर्तमान गतिशील युग में जबकि कार, जीप, बस, रेलगाड़ी, वायुयान, आदि आवागमन के अनेकानेक साधनों का विकास हो रहा है । यदाकदा लज्जावगुण्ठनमयी बहू की डोली ढोते कहार दिख जाते हैं । इसी परम्परागत जजमानी के भरोसे वर्तमान समय में कहार अपना अस्तित्व किसी प्रकार लस्टम पस्टम बचाये रखने को विवश है ।

राजेपुर बाज़ार में स्थित प्राथमिक पाठशाला । इसी पाठशाला के बग़ल में तुलसी कहार का पुश्तैनी का निवास स्थान था । पिता के मरणोपरांत घर-गृहस्थी की सारी ज़िम्मेदारी तुलसी पर आ गयी । घर-गृहस्थी के अलावा थोड़ी सी खेती बाड़ी थी और ऊपर से 20 गांव की जजमानी संभालना मुश्किल हो रहा था । कभी-कभी किसी-किसी दफ़ा तीन-तीन शादियां एक दिन में निपटानी पड़ती थीं । इतनी भागदौड़ में खाने-पीने की फ़ुर्सत नहीं मिलती थी । दुनिया की इन्हीं सीधी टेढ़ी राहों पर तुलसी का पारिवारिक जीवन इसी तरह पल-प्रतिपल चलता रहा ।

समय ने करवट बदली । उसकी पत्नी सुगीया को पुत्र उत्पन्न हुआ । मंगलवार को हुआ था । लिहाज़ा नाम रखा गया मंगरू । दिन-ब-दिन उम्र बढ़ने के साथ ही उसमें समझदारी आने लगी । था बहुत होनहार । पांच वर्ष की अवस्था में उसने पिता के साथ विभिन्न कामों में हाथ बंटाना शुरू कर दिया । पिता को सम्बल मिला । उसके भविष्य को लेकर पितृ हृदय में उम्मीदों के कई अंकुर उगे मगर संसार में सुख कभी अकेला नहीं आता । वह अपने पीछे दुख का दहकता हुआ दावानल भी लाता है । मधुमिश्रित वसन्त के साथ पतझड़ का मनहूस मौसम भी आता है । गांव में महामारी फैली । इलाज का समुचित इन्तिज़ाम न हो पाने के कारण इस असार संसार से सुगिया चल बसी । तुलसी ने अपने सामर्थ्य भर उसे बचाने तथा उसके उपचार की हर संभव कोशिश की । डॉक्टर के हाथ-पांव जोड़े, विनती की, मगर होनी को कौन टाल सकता है । इसी बहाने सुगीया को जाना था और उसका देहावसान हो गया । वह जब तक दाम्पत्य जीवन में साथी थी, घर-गृहस्थी और खेती-बारी से लेकर जजमानी तक क़दम-क़दम पर तुलसी का साथ निष्ठापूर्वक निभाती थी । उसके जाते ही तुलसी के कन्धों पर काम का बोझ बढ़ गया । हालांकि पुत्र मंगरू भी था समय के साथ उसकी उम्र कुछ और बढ़ी । वह बारह वर्ष का हो गया । हालांकि शारीरिक दृष्टि से यह उम्र विवाह योग्य तथा परिपक्व नहीं मानी जाती, मगर बाल-विवाह का इस वैज्ञानिक युग में भी चलन कम नहीं है । तुलसी ने उसकी शादी कर दी । वाराणसी जनपद के गंगा तटवर्ती क्षेत्र

की निवासिनी थी लड़की । नाम था गंगा । नाम तथा गुण नामानुसार निर्मल थी । स्वभाव में किसी प्रकार का दोष विकार न था । मंगरू जितना मेहनती था, गंगा उतनी ही मिलनसार तथा निश्छल । प्रगाढ़ प्रेम भाव था पति-पत्नी में । दोनों मिलकर जजमानी का वंश परम्परागत कार्य परिश्रम और लगन के साथ करने लगे । उनका स्वभाव ऐसा था कि गांव गिरांव में लोग उन्हें मानते भी बहुत थे । उनके बग़ैर काम भी नहीं चलता था किसी का ।

देखते ही देखते दाम्पत्य जीवन के डेढ़ दशक व्यतीत हो गये । सुख-दुख के सफ़ेद-स्याह डैने लगाए काल का पंछी चुपचाप उड़ता रहा । 15 साल के अन्दर उन्हें 20 बच्चे हुए, जिनमें 12 पुत्र तथा 8 पुत्रियां थीं । इन बच्चों में कुछ जुड़वां भी थे । बीसवीं सन्तान के समय गंगा आसन्न प्रसव थी रक्ताल्पता से शरीर क्षीणतर हो गया था । यथासामर्थ्य देशी दवा तथा पैष्टिक खानपान से काया में थोड़ा शक्ति संचार हो गया ।

कुछ दिनों के बाद गंगा ने पुत्र को जन्म दिया । परिवार बढ़ जाने पर जजमानी संभालने में परेशानी होने के बावजूद तुलसी या मंगरू को भाग्य से शिकायत न थी । और वे पारिवारिक जीवन से संतुष्ट थे तथा वे इसी-को अपना भाग्य मान बैठे थे । सन्तान को वे ईश्वरीय देन मानते थे । उनका मानना था–बच्चे अपने साथ अपना भाग्य लेकर आते हैं जो ईश्वर उन्हें जन्म देता है, वह उन्हें खाने के लिए अन्न भी देता है तथा उनकी आजीविका की भी व्यवस्था करता है । ...जब गंगा को बीसवीं संतान के रूप में पुत्र हुआ, तुलसी पंडितजी के पास गया तथा सादर चरण स्पर्श कर खुशख़बरी सुनायी ।

पंडितजी के मुखारबिन्द से आशीर्वाद के स्वर फूटे और पुत्र जन्म के तिथिवासर तथा समय के संबंध में पूछकर पत्रा का पृष्ठ पलटने लगे । कुछ देर तक गणना करने के उपरांत वे मन्द मुस्कान के साथ बोले, "तुलसी, तुम्हारा यह पोता तो बड़ा सौभाग्यशाली है । अच्छे नक्षत्र में हुआ है । आगे चलकर बड़ा अधिकारी बनेगा तथा अपने बाप दादा का नाम रौशन करेगा ।"

"बच्चे का नामाकरण क्या करूं महाराज", तुलसी ने पूछा ।

"बच्चे का राशिनाम है कल्लू ।" पत्रा देखकर पुनः पंडित जी बोले, "लेकिन हिन्दू शास्त्र में प्रचलित मान्यता और परम्परा के अनुसार 20 बच्चों के जन्म के बाद महतारी बाप के घर पर दूसरी शादी का विधान है अन्यथा पूरा परिवार नष्ट हो जाएगा ।" सुनकर तुलसी के माथे पर चिन्ता की लकीरें खिंच गयीं । यदि मंगरू और गंगा के पुनर्विवाह का आयोजन न किया गया तो सम्पूर्ण परिवार नष्ट हो जाएगा । अनिष्ट की आशंका से मन डांवाडोल होने लगा । वह पुनर्विवाह के लिए तैयार हो गया ।

पंडितजी द्वारा बताया गया साइत तथा मंगलमयी तिथि के अनुसार विवाह की तैयारियां होने लगीं । डेरा शामियाना, बाजा-गाजा, नगाड़ा वग़ैरह सब तय हो गया । बट्टा बयाना दे दिया गया । गांवपुर में न्योता बंट गया । घर पर विवाह देखने की ललक सबके दिल में हिलोरें मार रही थी । शादी के दिन सगे-संबंधी, इष्ट मित्र और शुभचिन्तक सभी मौक़े पर एकत्र थे । 2 बजे की साइत थी । सिर पर सेहरा बांधे मंगरू के साथ बढ़िया लाल रंग की चमचमाती साड़ी सलमा सितारा टंकी पहने गंगा डोली में मन्द-मन्द मुस्कान के साथ उतरी और बच्चे को गोद में लेकर दोनों पुनर्विवाह की कामना से पालथी मारकर बैठ गये । वंशू पण्डित तथा सकलदीप महाराज ने वैवाहिक रस्म शुरू किया । सभी सगे-सहोदरों, ग्रामवासियों तथा आगन्तुकजन में नवोल्लास था । पंड़ाल अद्भुत विद्युत प्रकाश से सज्जित था । उससे ज़्यादा उल्लास का प्रकाश सबके दिल में था । बीसों गांव के मुखियाओं और सरपंच समेत कई प्रतिष्ठित लोगों का जमावड़ा था । गांव में शादियां तो अनेक लोगों ने देखी थी, लेकिन घर पर ऐसी शादी देखने का यह प्रथम अवसर था । यह ग्रामवासियों के निर्मित नई अनोखी बात थी । लोग पूछते तुलसी के बीसों पोते पोतियां हो गयी । ख़र्च कैसे चलेगा वह जवाब देता, "भइया सब भगवान भरोसे है । अब हमको कोई परेशानी नहीं होगी । 20 गांव की जजमानी हमारे मंगरू का परिवार संभाल लेगा । अब फ़िक्र काहे की ।"

बहरहाल घर पर मंगरू और गंगा का विवाहोत्सव सोल्लास सकुशल सम्पन्न हो गया । हज़ारों लोगों ने यह कहकर तरह-तरह के मीठे नमकीन, सूखे रसदार स्वादिष्ट पकवान का आनन्द लिया । पंडित को दान-दक्षिणा देकर सादर विदा किया गया । उन्होंने तुलसी के परिवार को मंगलमय आशीर्वाद दिया तथा पुलकित मन निजगृह को प्रस्थान किया ।

इस तरह तुलसी के जीवन के एक सुखान्त नाटक का पटाक्षेप हुआ । तत्पश्चात तुलसी इस नाश्वान संसार में अधिक दिन तक जीवित न रहा । अपना सारा गार्हिस्थिक तथा सामाजिक दायित्व पुत्र मंगरू तथा पुत्रवधु गंगा के सिर पर डालकर तुलसी ने हमेशा के लिए आंखें मूंद लीं और उस लोक को प्रस्थान किया, जहां से लौटकर आज तक कोई वापस नहीं आया ।

परिवार में सबसे छोटा होने के नाते कल्लू सबका दुलारा था । धीरे-धीरे करके वह चार साल का हो गया । घर के बग़ल स्थित प्राथमिक पाठशाला में प्रधानाध्यापक दामोदर पंडित का मंगरू के घर आना-जाना था । उन्होंने एक दिन मंगरू से कहा, ''तुम कल्लू को पाठशाला क्यों नहीं भेजा करते ? आजकल सरकार बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर इतना ज़ोर दे रही है । सरकार की तरफ़ से बच्चों के लिए स्कॉलरशिप, भोजन, किताब-कॉपी आदि की बड़ी अच्छी व्यवस्था है । एक तुम ठहरे जो कल्लू को स्कूल नहीं भेजते हो ।'' गंगा को बात जंच गयी और उसकी प्रेरणा से मंगरू भी राज़ी हो गया । कल्लू विद्यालय जाने लगा ।

कल्लू पढ़ाई-लिखाई में होनहार था तथा ऊपर से दामोदर पंडित जैसे पारखी गुरु की कृपा दृष्टि । नियमपूर्वक विद्यालय आना-जाना, विनम्रता, निष्ठापूर्वक गुरु सेवा, बड़ों के प्रति आदर भाव, अनुशासन सबके प्रति लगाव और आज्ञाकारिता जैसे गुण उसके अन्दर प्रकट होने लगे । अपनी मेहनत और लगन की बदौलत उसने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । तत्पश्चात इंटरमीडिएट तथा स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने के उपरांत आगे की पढ़ाई तथा कम्पीटिशन की तैयारी के सिलसिले में वह इलाहाबाद चला गया । छात्रवृत्ति मिलने की वजह से उसके समक्ष विशेष आर्थिक समस्या न थी ।

इलाहाबाद में रहकर उसने मन लगाकर पी॰सी॰एस॰ की तैयारी की । उसकी मेहनत रंग लायी । 3 साल के बाद अपनी मेहनत तथा प्रतिभा की बदौलत उसने प्रतियोगितात्मक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया । समाचार पत्रों में फ़ोटो के साथ उसकी इस सफलता तथा शैक्षणिक उपलब्धियों के बारे में विस्तारपूर्वक छपा । अपनी इस सफलता से उसके ज़िले जवाहर का नाम रौशन हो गया जो भी सुनता, उसकी लगन और प्रतिभा की सफलता की प्रशंसा करता । लोग कहते, ''जो कभी एक-एक पैसे तथा एक-एक दाने को मुहताज तथा लाचार था, उसने आज अपनी मेहनत की बदौलत कितनी बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है ।''

समय के करवट बदलते देर नहीं लगती । व्यक्ति को जब अच्छा पद और पैसा मिलने लगता है, सारी परिभाषा बदल जाती है और सगे-सहोदरों का दृष्टिकोण बदल जाता है । दुर्दिन में जो लोग साथ छोड़ देते हैं, वे भी आगे-पीछे भ्रमरवत मंडराने लगते हैं और पराये भी हमदर्द व ख़ैरख़्वाह बन जाते हैं । नौकरी मिलने के बाद जब कल्लू बावर्दी अपने पुश्तैनी गांव राजेपुर आया, घर-गांव का नज़ारा बदला-बदला नज़र आ रहा था । ...

कार से उतरने के बाद गृहागत वयोवृद्ध ग्रामवासियों का सादर अभिवादन किया । ये पंडित वंशु महाराज थे । ये दामोदर पंडित थे, जो प्रधानाध्यापक पद से कई साल पूर्व अवकाश ग्रहण कर चुके थे तथा जिनके निःस्वार्थ प्रयास तथा प्रेरणा से आज वह कामयाबी के इस बुलन्द मक़ाम पर पहुंचा था । आगे बढ़कर उसने पिता मंगरू तथा माता गंगा का झुककर चरण स्पर्श किया । उसे देखकर माता-पिता की आंखों में झर-झर आंसू बहने लगे । मुंह से अस्पुट बोल फूट पड़े, ''बेटा ! तुमने अपनी लगन, त्याग और श्रम से मेरा नाम रौशन कर दिया । तू सच्चा कुल दीपक है । मैं तो किसी प्रकार यथा जजमानी से पेट भरता रह गया ।'' भावविह्वल मंगरू खुद को रोक नहीं पाया ।

कल्लू माता-पिता की आंखों में अश्रु धारा देखकर बोला, ''पिता जी! अब आप जजमानी छोड़ दीजिए । आपने बहुत की अपनी जजमानी । अब यह आपके विश्राम करने का वक़्त आ गया है । आपको अब जजमानी करने की आवश्यकता नहीं है ।''

सुनकर मंगरू के हृदय को जैसे आघात लगा । बोला, ''बेटा यह क्या कह रहे हो, जिस जजमानी की बदौलत मैं अब तक पूरी जीवन नइया खे आया, उसी को छोड़ने के लिए कह रहे हो ?'' फिर जैसे दिल को गहरा सदमा लगा हो, नेत्र ज्योति धीमे-धीमे धुंधली तथा नाड़ी मद्धिम हो रही हो । गंगा की तरफ़ कातर दृष्टि डाली और मंगरू के मुंह से अस्पष्ट स्वर निकला, ''देखो गंगा । अब मैं गंगा मइया की गोद में समा जा रहा हूं । मेरा सारा कहा सुना ... माफ़ करना ।'' उसी क्षण मंगरू के प्राण पखेरू उड़ गये । बेबस गंगा उसके पार्थिव शरीर पर करुणा क्रन्दन करते हुए निर्जीव लता की-सी गिर पड़ी ।...

आई॰ एस॰ और इस्लाम

■ डॉ॰ सैयद इख़्तियार जाफ़री
(आगरा, उ॰प्र॰)

इसमें कोई शक नहीं कि आज आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सबसे प्रमुख समस्या बन गया है । चंद माह पहले पेरिस और फिर ब्रूसेल्स में ख़ौफ़नाक धमाकों के बाद यह सवाल फिर से उठने लगा है कि आतंकवादी किस प्रकार अपनी जड़ें गहरी कर रहा है ? इस समय दुनिया भर में आई॰एस॰आई॰एस॰ अलक़ायदा, तालिबान, बोको हराम और अन-नुसरा फ्रंट के साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप में जैश-ए-मुहम्मद, अलक़ायदा, लश्करे तैयबा, तहरीके तालिबान और जमाअतुद दावा आदि आतंक के विशेष पर्याय बन चुके हैं ।

इन आतंकी संगठनों की जड़ें लगभग हर देश में हैं, परन्तु इनका अस्ली निशाना अमेरिका, यूरोप और भारत हैं। ये संगठन आतंकवाद फैलाने के लिए आमतौर पर मुसलमानों पर होने वाले जुल्मो सितम को बुनियाद बनाते हैं और उसका बदला लेने के लिए इस्लाम की आड़ लेते हैं । दुनिया भर में मुसलमानों पर या मुस्लिम देशों पर जो साम्राज्यवादी ताक़तें जो जुल्म कर रही हैं, उसमें तो कोई शक नहीं, क्योंकि लगभग हर मुस्लिम देश में अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों ने डायरेक्ट या इन-डायरेक्ट तरीक़े से युद्ध छेड़ा हुआ है । अलग-अलग बहानों से मुस्लिम देशों को तबाह करने का यह सिलसिला इराक़ से शुरू हुआ था, जो दर्जन भर देशों को ख़त्म कर देने के बाद भी पूरी ताक़त से जारी है । इससे मुस्लिम जगत में स्वयं को बचाने या बदला लेने की भावना पैदा होना कोई अनोखी बात नहीं । यह उनका हक़ है । परन्तु समस्या यह है कि इस हक़ की प्राप्ति के लिए उन्होंने जो रास्ता चुना है, वह ग़लत है और इस रास्ते पर चलने के लिए इस्लाम जैसे पवित्र और अमन पसंद धर्म की आड़ लेना तो सख़्त जुर्म है ।

इसका मतलब ये है कि ये संगठन स्वयं जुर्म करके अल्लाह के गुस्से का शिकार बन रहे हैं । इन्होंने आम जनता और मासूम इन्सानों को क़त्ल करने का जो तरीक़ा इख़्तियार किया है वह सरासर ग़लत, इस्लाम के ख़िलाफ़, ''जिहाद'' की आत्मा के विरुद्ध, अल्लाह को नाराज़ करने वाला और इन्सानियत को शर्मसार करने वाला जुर्म है । आई॰एस॰आई॰एस॰ जैसे आतंकवादी संगठन अपने कुकृत्यों को छिपाने के लिए इस्लाम या जिहाद की आड़ लेते हैं । यह सही नहीं है । चूंकि दुनिया भर की मुस्लिम हुकूमतें और इस्लामिक विद्वान इस बात को समझ चुके हैं, और उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठा रहे हैं, इसलिए अब ये लोग इस्लाम की आड़ लेने में कामयाब नहीं हो रहे हैं ।

आतंकवाद और इस्लाम

आतंकवाद और इस्लाम बिल्कुल विपरीतार्थक शब्द हैं और ये दोनों एक जगह एकत्र नहीं हो सकते, यहां तक कि इस्लाम का नाम लेकर कभी और कहीं कुछ मुसलमान भी आतंकवाद को बढ़ावा दें तो इस्लाम से उसका कोई सम्बन्ध हरगिज़ नहीं होगा । बल्कि यह इस्लाम धर्म की एक अवहेलना और शरीअत-ए-मुहम्मदी में परिवर्तन होगा, जिसे दीन व शरीअत के बदतरीन शोषण की संज्ञा दी जायेगी । इस्लाम यातनाएं देने और भ्रष्टाचार फैलाने की अनुमति नहीं देता । आतंकवाद की परिभाषा सरकारी स्तर पर मानी हुई इसको समझने के लिए स्थापित नियम जटिल हैं और नियम समय के साथ बदलते रहते हैं ।

इन्हीं बदलते नियमों की बदौलत 'हीरो' दहशतगर्दों में और दहशतगर्द 'हीरोज़' में बदलते रहते हैं । जिहाद शब्द ''जद्दो-जहद'' से बना है । इसका वास्तविक अर्थ 'जी तोड़ कोशिश करना है । किसी सच्चाई या सत्य की प्राप्ति या उसके बाक़ी रखने के लिए जो भरपूर कोशिश की जाती है, उसे जिहाद कहते हैं ।' जिहाद की इस वास्तविक परिभाषा के अनुसार हर शुभ और नेक काम जिहाद है । शिक्षा प्राप्त करना, शिक्षा देना, रोज़ी कमाना, इबादत करना सब जिहाद

मिथक एवं यथार्थ

है । यह बात यहां बताना इसलिए आवश्यक थी कि कुछ कम जानकारी रखने वाले बुद्धिजीवियों, कलाकारों और नेताओं ने विश्व में केवल सशस्त्र लड़ने-लड़ाने और मारने-मरने को ही जिहाद समझकर इसका ज़ोरदार प्रचार किया है । जबकि ऐसा नहीं है ।

आई॰एस॰आई॰एस॰ क्या है ?

संयुक्त राष्ट्र की तरफ़ से सीरिया समस्या हल करने के लिए नियुक्त विशेष राजदूत और अलजज़ायर के पूर्व विदेश मंत्री लख़्दर बिराहीमी ने अल-अरबिया डॉट नेट को 10 फ़रवरी 2016 को इन्टरव्यू देते हुए कहा है कि आई॰एस॰आई॰एस॰ वास्तव में अमेरिका और ईरान की नाजायज़ औलाद है । इस संगठन की बुनियाद इराक़ में रखी गयी । आज यह संगठन दुनिया का सबसे क्रूर और व्यवस्थित आतंकी संगठन बन चुका है । यह संगठन 2003 में इराक़ पर अमेरिकी युद्ध के बाद वजूद में आया है । तमाम विश्वस्तरीय पाबंदियों के बावजूद 2003 तक इराक़ एक शांत एंव प्रगतिशील राष्ट्र था । कुछ अंदरूनी समस्याओं को छोड़कर वहां दुनिया भर के लिए ख़तरे जैसी कोई बात नहीं थी । लेकिन इस्राईल को अरब देशों के ख़तरे से महफ़ूज़ रखने की सनक ने अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश को मजबूर किया कि वे सद्दाम हुसैन को ख़त्म कर दें । अमेरिका ने सद्दाम हुसैन के साथ वहां की फ़ौज और बाथ पार्टी को भी ख़त्म कर दिया । इससे जनता को गहरा सदमा पहुंचा और अमेरिका-ईरान से बदला लेने के लिए जो छोटे-मोटे लड़ाकू संगठन बने, वही बाद में दौलत इस्लामिया या आई॰एस॰आई॰एस॰ के रूप में जमा हो गये ।

इस आतंकी संगठन की सर्वाधिक मौजूदगी इराक़ और सीरिया में है । इराक़ में लगभग 25 प्रतिशत और सीरिया में लगभग 30-35 प्रतिशत क्षेत्र पर इसकी हुकूमत है । इनको यहां से हटाने के लिए अमेरिका-रूस यूरोप और अरब की सेनाएं संयुक्त रूप से हमले कर रही हैं । सीरिया में पिछले छह साल से गृहयुद्ध चल रहा है । मार्च 2011 में सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन शुरू हुए । चार महीनों के अंदर शांतिपूर्ण प्रदर्शन हिंसक रूप ले चुके थे । यह वही समय था जब अरब देशों में क्रांति की शुरुआत हुई थी । इसी बीच अगस्त में आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट जो पहले ही इराक़ में अपनी ज़मीन मज़बूत कर चुका था, उसने इराक़ी लड़ाकों को सीरिया भेजना शुरू किया ।

सितम्बर 2016 में रूस ने सीरिया में हवाई हमले शुरू किये थे । अमेरिका जो पहले से ही सीरिया में आई॰एस॰आई॰एस॰ पर हमले कर रहा था, उसने रूसी हमलों पर कुछ महीने बाद सवाल उठा दिये थे । अमेरिका समेत पश्चिमी देशों का कहना था कि रूस आई॰एस॰आई॰एस॰ को ख़त्म करने के लिए ये हवाई हमले नहीं कर रहा है, बल्कि वो असद विरोधियों को निशाना बना रहा है ।

अंदर से आ रही ख़बरों पर विश्वास करें तो लगता है कि अमेरिका सहित विभिन्न देश आई॰एस॰आई॰एस॰ को ख़त्म करने के नाम पर यमन, सीरिया, इराक़ आदि देशों में केवल अपनी कठपुतली सरकारें स्थापित करने में दिलचस्पी ले रहे हैं । मिसाल के तौर पर–

- अमेरिका असद की सेना और आई॰एस॰आई॰एस॰ के ख़िलाफ़ विरोधी लड़ाकों का सहयोग कर रहा है ।
- रूस आई॰एस॰आई॰एस॰ को निशाना बनाने के नाम पर असद विरोधियों को मारता है ।
- तुर्की अमेरिका के सहयोग से विरोधियों को मज़बूत कर रहा है ।
- ईरान रूस के साथ मिलकर आई॰एस॰आई॰एस॰ और असद विरोधी सुन्नियों को निशाना बना रहा है ।
- सऊदी फ़ौज सीरियाई सरकार के विरोध में विरोधियों की मदद कर रही है ।
- ब्रिटेन लगातार असद विरोधियों और आई॰एस॰आई॰एस॰ लड़ाकों के ख़िलाफ़ हवाई हमले करता रहा है ।

ज़ुल्म की इंतिहा

इन ख़ौफ़नाक हमलों का नतीजा यह है कि गत 5 वर्षों के दौरान अब तक 2.5 लाख लोग सीरिया में मारे जा चुके हैं। 1.10 करोड़ लोग बेघर हो चुके हैं। 90 लाख लोग पड़ोसी देशों में शरणार्थी बनकर रहने को मजबूर हैं। 2011 से जारी सरकारी धर पकड़ में 10 लाख लोग गिरफ़्तार करके जेलों में ठूंस दिये गये। आख़िर यह तबाही किसके खाते में लिखी जायेगी।

यू॰एन॰ महासचिव बानकी मून ने कहा है कि मध्य दिसंबर 2015 तक विश्व भर के 34 आतंकवादी समूहों ने आई॰एस॰आई॰एस॰ से संबद्ध होने की बात की थी। 2016 में इस संख्या में वृद्धि होने के पूरे आसार हैं। बान ने कहा कि हाल में पश्चिम और उत्तर अफ़्रीका के साथ ही उत्तर अफ़्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में आई॰एस॰आई॰एस॰ का विस्तार हुआ है। ब्रिटेन के मीडिया ने आतंकी समूह आई॰एस॰आई॰एस॰ के लगभग 22 हज़ार दहशतगर्दों के नाम-पता फ़ोन नं॰ और परिवारों से संपर्क की पूरी जानकारियां प्राप्त करने का दावा किया है स्काई न्यूज़ की विगत दिनों जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक़ ख़ुफ़िया तरीक़े से हासिल की गयी मालूमात से पता चलता है कि ब्रिटेन समेत कम-से-कम 51 देशों के नागरिक आई॰एस॰आई॰एस॰ में शामिल हुए हैं और बाक़ायदा शामिल होने से पूर्व उन्होंने अपनी संपूर्ण पारिवारिक जानकारियां संगठन को उपलब्ध कराई हैं। रिपोर्ट के अनुसार इनमें वे लोग भी शामिल हैं, जो पहले इंग्लैंड, पूर्वी यूरोप, पश्चिमी एशिया, पूर्वी अफ़्रीका, अमेरिका और कनाडा में जिहादी रह चुके हैं।

जर्मन मीडिया के अनुसार इन 22 हज़ार आतंकी में पेरिस में हमला करन वाले 3 आतंकवादी भी शामिल हैं। जर्मनी के गृहमंत्री ट्रमास डी मोजियर का विचार है कि पेरिस पर हमला करने वाले आतंकवादियों में सेमी एमूर, फ़वाद मुहम्मद और उमर इस्माईल मुहम्मद के नाम भी उन 22 हज़ार लोगों में शामिल हैं। जिन्होंने विगत दिनों में आई॰एस॰आई॰एस॰ की सदस्यता ग्रहण की है। यह रिपोर्ट जर्मनी के पब्लिक ब्रॉड कास्टर्स डब्लयू॰डी॰आर॰ ने जारी करते हुए बताया है कि यह तीनों हमलावर 2013-2014 में आई॰एस॰आई॰एस॰ में शामिल हुए थे। इस सूचि में शामिल 2 लोग केरम मार्क बी॰ और अब्दुल करीम इस समय जर्मनी में मुक़दमों का सामना कर रहे हैं।

दुनिया भर के लोग 30 देश डायरेक्ट या इन डायरेक्ट इस ख़ुंख़ार आतंकी संगठन को समाप्त करने के लिए सरगर्म हैं। इनकी अगुआई स्वयं अमेरिका कर रहा है।

- 900 से ज़्यादा हमले : 19 जनवरी 2016 तक अमेरिका और सहयोगी देशों ने कुल 9,782 हमले किये हैं। इनमें इराक़ में 6,516 और सीरिया में 3,266 हमले शामिल हैं। अमेरिका ने इराक़ और सीरिया में 7,551 हवाई हमले बोले हैं। इराक़ में 4,482 और सीरिया में 3,069 हमले शामिल हैं।

- 5.8 अबर डॉलर ख़र्च : 31 दिसंबर 2015 तक आई॰एस॰आई॰एस॰ से संबंधित अभियानों में 5.8 अरब डॉलर ख़र्च हो चुके थे। यानी 511 दिन के अभियान पर 11.4 मिलियन डॉलर ख़र्च हुए। अभियान 8 अगस्त 2014 को शुरू हुआ था।

- 20,000 से ज़्यादा ठिकाने तबाह : 10 जनवरी 2016 तक अमेरिकी सहयोगियों ने इराक़ और सीरिया में 20,352 लक्ष्यों को तबाह किया है।

अमेरिकी अगुआई में आई॰एस॰आई॰एस॰ के विरुद्ध लड़ाई अभी लंबी चलने की उम्मीद नज़र आ रही है। इराक़ और सीरिया से आई॰एस॰आई॰एस॰ का ख़ात्मा करने के लिए अमेरिकी लंबी लड़ाई के लिए तैयार हैं। अभी तक दोनों देशों में 20,000 ठिकाने तबाह कर चुका अमेरिका आई॰एस॰आई॰एस॰ पर वर्ष 2017 में 45,000 स्मार्ट बम बरसाने की योजना रखता है।

ओबामा सरकार ने 2017 के लिए आतंक से लड़ाई के लिए 7.5 अरब डॉलर का रक्षा बजट मांगा है। इसमें 1.8 अबर डॉलर स्मार्ट बम ख़रीदने पर ख़र्च होंगे अगले सप्ताह कांग्रेस में यह मांग रखी जायेगी। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सीरिया-इराक़ में आई॰एस॰आई॰एस॰के ख़ात्मे के लिए और स्मार्ट बम मांग की है। उन्होंने 45000 नये स्मार्ट बम मांगे हैं। इससे लगता है कि आई॰एस॰आई॰एस॰ ख़िलाफ़ जंग खिंचेगी। अगस्त 2014 से 31 दिसंबर 2015 तक अमेरिकी और सहयोगी देशों ने आई॰एस॰आई॰एस॰ पर 9000

हवाई हमले किए हैं। यानी 1.3 अबर डॉलर की रक़म बमों और मिसाइलों में अमेरिका ख़र्च कर चुका है।

आतंकवाद कहां है, कहां नहीं ?

क्या सिर्फ़ बेल्जियम पर हुए हमले पर ही चर्चा होनी चाहिए ? हमले तो और जगहों पर भी हो रहे हैं। क्या अमेरिका या यूरोप पर हुआ हमला ही आतंकवादी हमला है ? अन्य देशों पर हुए हमलों का नोटिस यूरोपीय देश, अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र संघ, नाटो आदि क्यों नहीं लेते ? बेल्जिमय, ब्रिटेन या पेरिस हमलों के अलावा हाल ही में आतंकवादियों ने अन्य स्थानों पर भी भयंकर हमले किए हैं। जैसे :

1. 12 व 13 फ़रवरी–2016 को उत्तरी नाइजीरिया के दो गांवों में बोको हराम के हालिया हमलों में कम-से-कम 30 लोग मारे गए हैं। बोको हराम के ख़िलाफ़ संघर्ष में सेना की मदद कर रही सतर्कता समिति ने यह जानकारी दी। सतर्कता समिति के सदस्य मुस्तफ़ा करीम बे ने बताया कि मोटरसाइकिलों और कारों में सवार हमलावरों ने शुक्रवार और शनिवार सुबह याक्षरी एवं काचिया नामक गांव पर हमला बोला। करीम बे ने कहा कि इन हमलों में 30 लोग मारे गये। हमलावरों ने लूटपाट भी की और मवेशियों को भी ले गये।

2. 13 मार्च 2016 को तुर्की की राजधानी अंकारा में ज़बरदस्त कार बम धमाका हुआ। इस आतंकी हमले में 45 लोग मारे गए। 100 के लगभग जख़्मी हो गये। इनमें से 30 की हालत नाजुक बतायी जा रही है। तुर्की के राष्ट्रपति तैयब अर्दगान ने इस पर सख़्त बयान देते हुए कहा कि आतंकवाद को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हम आतंकवादियों को घुटने टेकने पर मजबूर कर देंगे। अमेरिका और नाटो ने भी इस हमले की भर्त्सना की।

3. यमन में 4 मार्च 2016 को भारतीय पादरी फ़ादर टॉम उजहूनलिल को इसी आई॰एस॰आई॰एस॰ ने अग़वा कर लिया। आतंकवादी अपहृत किये गये भारतीय पादरी फ़ादर उजहूनलिल को सूली पर चढ़ा सकते हैं। दक्षिण अफ़्रीका की नन के समूह फ़्रांसीसियन सिस्टर्स ऑफ़ सिसेन ने अपने फ़ेसबुक पोस्ट में यह आशंका व्यक्त की है पर अधिकारिक रूप में टॉम के बारे में कोई सूचना नहीं मिल पायी है। मदर टेरेसा की मिशनरी की ओर से यमन के अदन शहर में एक वृद्धाश्रम चलाया जा रहा था इसी में बैंगलूरू के 56 वर्षीय पादरी टॉम तैनात थे। आई॰एस॰आई॰एस॰ के आर्तकियों ने चार मार्च को इस आश्रम पर हमला करके चार भारतीय नन, दो यमन की महिला कर्मचारी समेत 15 लोगों की हत्या कर दी और पादरी का अपहरण कर लिया। 27 मार्च 2016 को इराक़ के फुटबॉल स्टेडियम में हुए आत्मघाती बम बिस्फ़ोट में 41 लोगों की मौत हो गयी। इस बिस्फ़ोट में 105 लोग घायल भी हुए हैं। आतंकी संगठन आई॰एस॰आई॰एस॰ ने इस हमले की ज़िम्मेदारी ली है। यह हमला इस्कंदरिया शहर के छोटे स्टेडियम में हुआ। मोबाइल फ़ोन के फुटेज से पता चलता है कि बिस्फ़ोट शुक्रवार को उस समय हुआ तब हुआ जब खिलाड़ी फुटबॉल मैच के बाद ट्रॉफ़ी लेने के लिए एकत्र हो रहे थे।

5. 26 मार्च 2016 को ही लीबिया के सबरथा शहर में एक अपार्टमेंट पर हुई गोलीबारी में केरल की नर्स और उसके 18 महीने के बेटे की मौत हो गयी। अफ़सरों के मुताबिक़ अपार्टमेंट कांप्लेक्स पर एक बम का गोला आकर गिरा। इसमें नर्स सुनू सत्यन और उसके बच्चे की मौत हो गयी। जिस समय यह घटना हुई सुनू का पति विपिन ड्यूटी पर था। कई अन्य रिपोर्ट के मुताबिक़ इस हमले में कांप्लेक्स में रहने वाले कुछ अन्य लोग भी मारे गये। विपिन व सुनू दोनों ही पेशे से नर्स हैं। दोनों 2012 में शादी के बाद लीबिया चले गये थे।

6. मार्च 2016 को इस्राईली फ़ौज ने अकारण गोलीबारी करके एक फ़लस्तीनी शहरी को मार डाला। फ़लस्तीनी शहरी को खड़ा करके इस्राईली सैनिक ने उसके सिर में गोली मार दी। जिससे मौक़े पर ही उसकी मौत हो गयी।

7. अफ़्रीक़ी देश आइवरीकोस्ट के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल ग्रैंड बासम पर आतंकी हमले में कम-से-कम 16 लोग मारे गये। यह हमला मार्च के पहले हफ़्ते में हुआ। इसकी ज़िम्मेदारी अलक़ायदा फ़िलमग़रिब नामक आतंकी संगठन ने ली है। मारे जाने वालों में 14 नागरिक तथा 2 फ़ौजी शामिल हैं। इसमें 6 हमलावरों के भी मारे जाने की सूचना है। सोशल मीडिया पर पोस्ट की जाने वाली तस्वीरों में ख़ून में तलपत लाशों को देखा जा सकता है।

8. म्यांमार (बर्मा) में गत वर्ष से जारी गृहयुद्ध में अब तक 50 हज़ार से अधिक रोंगिया मुसलमान मारे जा चुके हैं। इस देश में मुसलमानों के ख़िलाफ़ यह जुल्म वहां की सरकार की सहायता से बहुसंख्यक बुद्ध लोग कर रहे हैं। एक लाख से ज़्यादा शरंणार्थी भारत और नेपाल आदि में शरण लिए हुए हैं।

9. मिस्र के अशांत उत्तरी सिनाई में एक सुरक्षा चौकी पर इस्लामिक स्टेट आई॰एस॰आई॰एस॰ आतंकवादियों के मोर्टार हमले में कम-से-कम 13 पुलिसकर्मी मारे गये। गृहमंत्रालय ने एक बयान में बताया है कि यह हमला अल-अरीश शहर में स्थित एक चौकी पर हुआ।

ये सारे आतंकी हमले नमूने के तौर पर लिये गये हैं। विभिन्न देशों पर इस तरह के हमले रोज़ की घटनाएं बन चुकी हैं। मात्र डेढ़ माह में इन 9 आतंकी हमलों में कई सौ लोग मारे गये। इनमें से कई लोग हमारे देश के भी हैं। क्या इन हमलों पर भी ध्यान गया है ? क्या मीडिया ने इन पर भी ऐसा ही शोर मचाया जैसा कि पेरिस या बेल्जियम हमलों पर ? क्या यूरोप या अमेरिका ने इनका भी वैसा ही नोटिस लिया जैसा कि पेरिस या बेल्जियम के हमलों का ? क्या यह लोग इन्सान नहीं थे ? क्या सिर्फ़ यूरोपियन देशों के लोगों पर हुए हमले ही आतंकी हमले हैं। और केवल उन्हीं की जानों की क़ीमत है ? आतंक को बढ़ावा देने में यह डबल स्टैंडर्ड भी कम ज़िम्मेदार नहीं।

सीरिया-तुर्की में नियंत्रण खो रहा आतंकी संगठन

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आई॰एस॰आई॰एस॰ की स्वीकार्यता में भारी कमी आयी है। उसके इस्लामी जिहाद के नारे की हवा निकल चुकी है। उसकी क्रूर ग़ैर इन्सानी हरकतों से अब अवाम और उसके कुछ कथित समर्थक भी नाराज़ हो चुके हैं। यही कारण है कि अब उसकी आर्थिक सहायता, सैन्य सहयोग तथा अवामी स्वीकार्यता में भारी कमी आई है। ये लोग अपने बेगुनाह क़ैदियों के साथ जैसे भयानक कुकृत्य कर रहे हैं, उनसे हर व्यक्ति उनसे दूर भागने लगा है। यही कारण है कि सीरिया में आतंकवादी संगठन आई॰एस॰आई॰एस॰ लगातार कमज़ोर पड़ता जा रहा है। आतंकी संगठन सीरिया-तुर्की की सीमा पर अपने क़ब्ज़े वाले दो-तिहाई क़स्बों पर अपना नियंत्रण खो चुका है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक़, साल 2016 की शुरुआत से ही आई॰एस॰आई॰एस॰ की उपस्थिति घटनी शुरू हो गयी है। क्योंकि सीरिया-तुर्की सीमा पर 250 किलोमीटर क्षेत्र में आई॰एस॰आई॰एस॰ का क़ब्ज़े वाला क्षेत्र घटकर मात्र 70 किलोमीटर तक पहुंच गया है। रिपोर्ट के मुताबिक़ इन इलाक़ों का इस्तेमाल आतंकवादी संगठन हथियार व लड़ाकों को लाने के लिए करता है।

सीरिया की सरकारी सेना अल-बाब शहर की तरफ़ बढ़ रही है, जो तुर्की के निकट उत्तरी अलेप्पो में आई॰एस॰आई॰एस॰ का एक मज़बूत गढ़ माना जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक़, ब्रिटेन की मानवाधिकार संस्था सीरियन ऑब्ज़र्वेटरी फ़ॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा कि हिज़्बुल्लाह तथा ईरानियन रिपब्लिकन गार्डस् के लड़ाकों ने उत्तरी अलेप्पो से आतंकवादियों को खदेड़ने में सीरियाई सेना की मदद की है। आई॰एस॰आई॰एस॰ और आतंक के ख़िलाफ़ अब इस्लामी विद्वानों ने भी जिहाद छेड़ दिया है।

आई॰एस॰आई॰एस॰ की निन्दा

आई॰एस॰आई॰एस॰ के ख़िलाफ़ मुस्लिम संगठन मुखर हैं। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद, ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस-ए-मुशावरत, जमीयत उलेमा-ए-हिंद, जमीयत अहले हदीस, ऑल इंडिया मिल्ली कौंसिल और वेलफ़ेयर पार्टी ऑफ़ इंडिया ने नई दिल्ली स्थित भारतीय प्रेस क्लब में आई॰एस॰आई॰एस॰ की एक सुर में भर्त्सना की है। उन्होंने कहा, आई॰एस॰आई॰एस॰ एक आतंकी संगठन है। उसका इस्लाम और धर्म की शिक्षाओं से दूर-दूर तक का कोई वास्ता नहीं है।

मुफ़्ती सलमान नूरी ने फ़त्वा जारी किया है कि आतंकवादियों का आचरण कुरआन-ए-पाक के ख़िलाफ़ होने के कारण उन्हें मुसलमान नहीं माना जा सकता। उनकी मौत पर न क़ब्र बनेगी और न ही जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जायेगी। फ़त्वे में आतंकी संगठनों के साहित्य को ग़ैर-इस्लामी घोषित किया गया है।

वर्ल्ड सूफ़ी फ़ोरम पारित प्रस्ताव में आई॰एस॰आई॰एस॰ तथा अन्य आतंकी समूहों को सीधे-सीधे इस्लाम से ख़ारिज कर दिया गया। इस फ़ोरम में दुनिया भर के 200 देशों के मुस्लिम विद्वान, सूफ़ी, उलमा, धर्म गुरू आदि शामिल थे।

भारतीय मुसलमानों की समस्याएं

• क़ासिम सैयद

26 जनवरी 1950 को संविधान का लागू होना इस देश की जनता के लिए सबसे उत्तम उपहार था, जिसके अनुसार देश में मौजूद सारे धर्मों के अनुयायियों को अपनी सभ्यता व सांस्कृतिक विरासत पर अमल करने की पूरी आज़ादी समान रूप से प्राप्त हुई । संविधान में इन व्यवस्थाओं के संबंध में जो बातें आयीं, उसकी दलील सबसे पहले अनुच्छेद 14, 16 और 18 में मिलती है । इन धाराओं के द्वारा समानता की खुलकर व्याख्या की गयी है । वास्तव में बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्ग के मध्य संख्या के ऐतिबार से काफ़ी बड़ा अंतर है । इसका तक़ाज़ा था कि भारतीय संविधान में बहुसंख्यक वर्ग की तुलना में समान अधिकारों की उपलब्धता को स्वीकार ही नहीं किया गया, बल्कि और अधिकार देने की बात की गयी, जिसका इज़हार संविधान के अनुच्छेद 30 और 31 में होता है ।

दूसरी ओर धर्म के आधार पर देश के विभाजन के बाद यह सवाल निस्संदेह उठा था कि बाक़ी हिस्सा हिन्दू स्टेट क्यों न हो ? उस समय देश के राष्ट्रीय नेताओं ने संविधान निर्मात्री सभा में निर्धारित किया कि यहां मुसलमानों की संख्या पाकिस्तान से कहीं ज़्यादा है और अन्य कारणों को सामने रखकर भारत का कैरेक्टर सेकूलर स्टेट निर्धारित किया और लोकतांत्रिक सेकूलर देश बना, जहां भारतीय जनता के सेकूलर मिज़ाज ने इस किरदार की रक्षा की, वहीं न्याय व्यवस्था ने भी नाजुक समयों में अपना क़ानूनी फ़र्ज़ निभाया । यद्यपि आज़ादी के समय एक वर्ग ऐसा ज़रूर था, जो देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने के हक़ में था । उसने तिरंगे का विरोध भी किया था । उसकी जगह भगवा झंडे को देश के हज़ारों साल प्राचीन कल्चर का तर्जुमान बनाया । उसने संविधान को मनुस्मृति की बुनियाद पर बनाने की भी पुरज़ोर वकालत की थी ।

यह आवाज़ उस वक़्त कमज़ोर थी, वातावरण में कंपन ज़रूर हुआ, लेकिन तहरीके आज़ादी के लीडरों की दूरदर्शिता और सेकूलर ज़ेहन की वजह से ऐसा नहीं हो सका । बाद में गांधी जी का क़त्ल हुआ और भारत में हिंसा और अत्याचार के द्वारा आवाज़ को दबाने की लोकतांत्रिक देश में पहली घटना बन गयी । क़ातिल को मौत की सज़ा दी गयी, जिसको आधुनिक भारत में 'महिमामंडित' करने का दुस्साहस भी पैदा हो गया । आज़ादी के 67 साल बाद वे आवाज़ें जो तहरीके आज़ादी के वक़्त और उसके फ़ौरी बाद में कमज़ोर थीं, आज वे न केवल देश में सुपरपॉवर की हैसियत में हैं, बल्कि उनकी आंख के इशारों पर देश के भविष्य की ज़ुल्फ़ें संवारी जा रही हैं । अब संविधान पर हमले आम बात है । देश को हिन्दू राष्ट्र में परिवर्तन करने की मांग हुक्मरानों की सफ़ों से हो रही है । अब तो तिरंगे की जगह भगवा झंडे के मान-सम्मान की बात ज़ोर-शोर से हो रही है ।

यह निस्संदेह विचारणीय है कि देश के सेकूलर मिज़ाज तथाकथित सेकूलर पार्टियों के दीर्घ सत्ताकाल के बावजूद ये तत्व आख़िर इतने प्रभावशाली कैसे हो गये कि वे सत्ता पर सीधे और प्रत्यक्ष रूप से दोनों तरीक़े से क़ाबिज़ हैं । केवल अल्पसंख्यक संस्थाएं ही नहीं, अल्पसंख्कों को संविधान में दिये गये अधिकारों पर सवालिया निशान बन गये हैं, बल्कि यह कहा जाने लगा है कि अल्संख्यक वर्ग की इतनी बड़ी संख्या को अल्पसंख्यक कब तक कहा जाएगा । संविधान इस पर ख़ामोश है, मगर बहस शुरू हो चुकी है । अब इसके प्रभाव निकट भविष्य में नज़र आने लगेंगे । अल्पसंख्यकों के अधिकारों को चैलेंज करने के साथ नयी व्याख्या की जा सकती है । और मुसलमानों को अल्पसंख्यक के दायरे से निकाला भी जा सकता है, जैसे हालात हैं उनमें कुछ भी संभव है । मुस्लिम पर्सनल लॉ पहले भी निशाने पर था, जब कांग्रेस की सरकार थी और आज भी निशाने पर है जब भाजपा की सरकार है और बहुत कुछ होनेवाला है । शायद आने वाले तूफ़ान की तबाही से हम अभी तक बेख़बर हैं या बेख़बर रहने में ही भलाई समझते हैं, क्योंकि "जो बोले वह कुंडी खोले" वाला

मामला आता है । सायरा बानो केस हमारा एसिड टेस्ट होने वाला है ।

यहां एक बात समझने की ज़रूरत है । जहां तक अल्पसंख्यकों विशेष रूप से मुसलमानों का मामला है, संविधान हर तरह की सुरक्षा की ज़मानत देता है । अदालत इसकी सबसे बड़ी रक्षक है । अगर सरकारों की नीयत में कभी फ़ितूर भी आया तो अदालतों ने आगे बढ़कर इस तरह की कोशिशों को असफल बना दिया, लेकिन राजनीतिक पार्टियों का इस संबंध में केवल एक ही धर्म है । जैसे फ़साद हर पार्टी के ज़माने में हुए, आतंकवाद के मुक़दमों में मुस्लिम नवजवानों को फंसाना, उनके जीवन को बर्बाद करने, शिक्षित लड़कों का चरित्र और उनकी सामाजिक ज़िन्दगी को मलियामेट करने की घटनाएं हर पार्टी की सरकार एक समान रहीं, चाहे वह कांग्रेस हो या भाजपा, एन॰सी॰पी॰ हो या समाजवादी पार्टी, वामपंथी पार्टियां हों या कोई भी क्षेत्रीय पार्टी, कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर पार्टी का इस तरह के मामलों में नज़रिया और अमल समान है ।

मध्यमार्गियों की संख्या कम होती जा रही है और वे भी सख़्त दबाव में हैं । वास्तव में जाली सेकुलरिज़्म का मुक़ाबला जाली नेशनलिज़्म से है और मुसलमान चक्की के दो पाटों में पिस रहा है । उदाहरण के रूप में जब भी कोई मामला आता है जैसे गाय, सूर्य नमस्कार, घर वापसी, भारतमाता की जय, समान सिविल कोड, गीता–हर विवाद का निशाना मुसलमान हैं, जबकि देश के अन्य समुदायों को इससे कोई परेशानी नहीं । इससे यह समझा जाता है कि मुसलमान ही हिन्दूराष्ट्र का रोड़ा हैं । इन समस्याओं पर अन्य राजनीतिक पार्टियों की विचाधारा ठीक नहीं है । वारिस पठान के मामले में महाराष्ट्र सदन के अन्दर कांग्रेस और एन॰सी॰पी॰ की 'देश भक्ति' का प्रदर्शन सबने देखा, तो फिर इन समस्याओं में अन्य पार्टियां हमारा साथ क्यों देंगी ? उन बातों को बड़ी चालाकी से नेशलिज़्म या राष्ट्रभक्ति से जोड़ दिया गया है । राष्ट्रभक्ति और देशप्रेम को समानार्थक कर दिया गया है । जो इसके विरुद्ध बोलेगा वह देशद्रोही कहलाएगा । अब मामला कंहैया कुमार से बढ़कर पी॰ चिदंबरम तक चला गया है, जो संवेदनशील मामलों पर अपने सहधर्मियों को फ़ौरन देशद्रोही कह सकते हैं, तो मुसलमान क्या हैसियत रखते हैं, इसलिए अपनी राजनीतिक लाभ-हानि देखते हुए हर पार्टी फूंक-फूंककर क़दम उठा रही है । पक्षपात, असहिष्णुता, साम्प्रदायिकता और नफ़रत फैलाना आम बात होती जा रही है, जो अपने विरोधियों को दुश्मन, बल्कि देश का दुश्मन समझते और समझाते हैं बात-बात पर उन्हें पाकिस्तान भेजने की धमकी दी जाती है। अफ़वाह की बिना पर किसी का भी क़त्ल जायज़ हो गया है । सरेआम गोली मारने की धमकी को राष्ट्रभक्ति बताया जाता है । अख़लाक़, कलबुर्गी और पंसारे इसके स्पष्ट उदाहरण हैं । हालात बताते हैं कि राजनीतिक पार्टियों पर पूर्ण विश्वास आत्मघाती है । वे ज़रूरतों के सौदागर हैं । इसकी एक नहीं हज़ारों मिसालें हैं, अलबत्ता बहुसंख्यकों के मध्यमार्गीय उदारवादी लोगों को साथ लेकर लड़ाइ लड़ी जा सकती है । सवाल यह है कि किस तरह दांतों के मध्य जीभ को सुरक्षित रखा जाए, यह उत्तेजना भड़काने और उग्र शैली की इजाज़त नहीं देगी । हमें एक ही साथ जाली सेकुलरिज़्म और जाली नेशनलिज़्म से निपटना है, दोनों फासीवादी चेहरे हैं ।

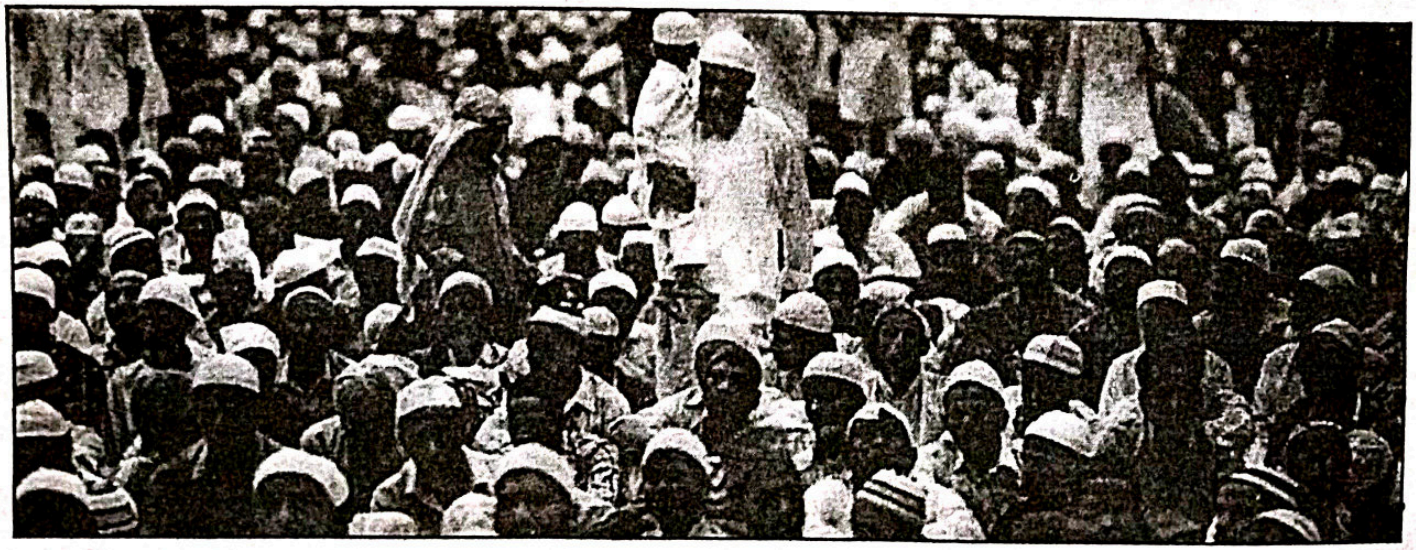

हृदय की बढ़ती बीमारियां आधुनिकता की देन

■ अनु जैन

शरीर पहले से ही मौजूद ख़राब जीन तथा आधुनिक जीवन शैली के चलते देश में हृदय रोगियों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है । एक सर्वेक्षण के अनुसार पिछले 15-20 सालों में हृदय रोगियों की संख्या में शहरों में दस प्रतिशत से ज़्यादा और गांवों में दो प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है । गांवों में अभी तक जीवन शैली में इतना बदलाव नहीं है । इसलिए वहां के लोग हृदय रोग के इतने शिकार नहीं बने हैं ।

हमारे देश में 20 से 25 साल के युवाओं में हृदय रोग की बीमारी काफ़ी तेज़ी से पनपी है । इस समय लगभग पांच करोड़ लोग इस बीमारी से पीड़ित हैं जिनमें युवाओं की भी अच्छी ख़ासी संख्या है । पहले यह केवल 40 वर्ष से ऊपर की उम्र के लोगों की बीमारी मानी जाती थी । लेकिन अब हालात बदल गये हैं । इसके पीछे क्या कारण है ? जब शरीर में हृदय रोगों के लिए ज़िम्मेदार ख़राब जीन पहले से मौजदू हैं तो अब यह रोग तेज़ी से क्यों बढ़ रहा है ?

इस दिशा में किये गये प्रयोगों के बाद यह बात प्रकाश में आयी है कि पहले व्यक्ति विशेष का खान-पान अच्छा था । धुम्रपान का ज़्यादा प्रचार नहीं था, इसलिए हृदय रोगों के लिए ज़िम्मेदार ख़राब जीन अपना प्रभाव नहीं दिखा पाते थे और शरीर में उन प्रभावों से लड़ने की पूरी क्षमता थी । अब बात बिल्कुल अलग हो गयी है । व्यक्ति में पहले से हृदय रोगों के लिए ज़िम्मेदार ख़राब जीन मौजूद हैं और उसके साथा उसका आधुनिक खान-पान, शराब-सिगरेट का अत्यधिक सेवन, शारीरिक श्रम का अभाव, तनाव ग्रस्त जीवन आदि कारण मिलकर उसे हृदय रोगों की गिरफ़्त में ले रहे हैं । कार्डियोलॉजीकल सोसायटी ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष एवं बतरा अस्पताल के हृदय रोग विभाग के पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ॰ उपेन्द्र कौल ने आम लोगों के

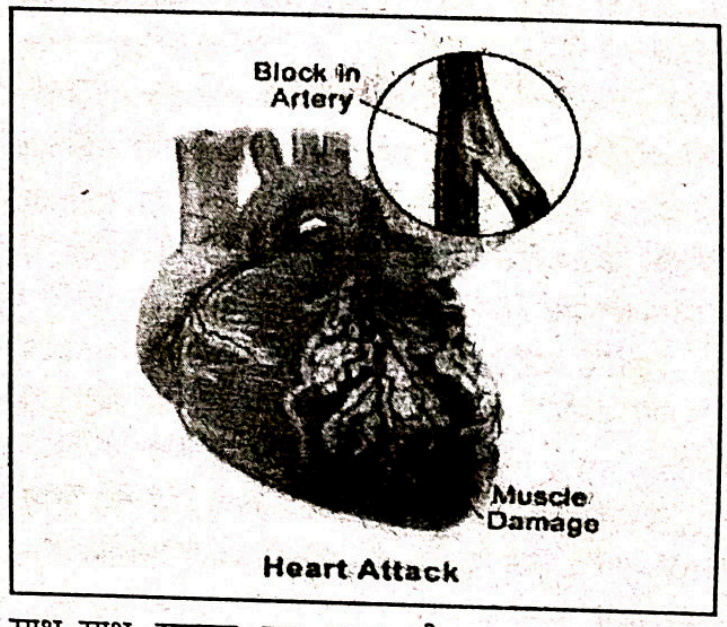

साथ-साथ सरकार का ध्यान भी इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है । उनके अनुसार दक्षिण एशियाई देशों में रहने वाले लोगों के शरीर में चार तरह के ख़राब जीन मौजूद हैं । सबसे पहले यहां के लोगों की तोंद सेब के आकार जैसी निकली होती है । व्यायाम करने के बाद चाहे उनके शरीर का बाक़ी शरीर का वज़न न बढ़े लेकिन तोंद हमेशा रहती है । दूसरा, यहां के लोगों के रक्त में ट्राइगिलसराइड (एक प्रकार की वसा) की मात्रा अधिक है । एच॰डी॰एल॰ कोलेस्ट्रोल ख़ून में कम मात्रा में है । ख़ून में इसकी मात्रा 35 मिलीग्राम होनी चाहिए जबकि यहां के निवासियों में इसकी मात्रा काफ़ी कम है । इसके अलावा यहां को लोगों के शरीर में इंसुलिन की मात्रा ज़्यादा होने के कारण रक्त कोंकाओं में ज़्यादा वसा भर जाती है । ये चारों कारण जीन कहलाते हैं जो हृदय रोगों के कारण भी हैं । डॉ॰ कौल के अनुसार यह देखने में आता था कि भारत और पाकिस्तान से विदेशों में गये लोग हृदय रोगों के एकदम से शिकार बन जाते थे । इसके पीछे यही कारण था कि वहां पहुंचते ही

उनकी जीवनशैली में एकदम परिवर्तन आ जाता है और ख़राब जीन और वह परिवर्तन मिलकर उन्हें हृदय रोगों का शिकार बना देता है ।

डॉ॰ कौल के अनुसार सबसे बड़ी बात यह है कि जिस तेज़ी से हृदय रोगी बढ़ रहे हैं उसके अनुपात में उनके उपचार की सुविधाएं बिल्कुल ज़ीरो के अनुपात में हैं । हमारे देश में पांच करोड़ लोग हृदय रोग से पीड़ित हैं और वर्ष भर में हमारे देश में सिर्फ़ 20 से 25 हज़ार बाईपास सर्जरी और 15 हज़ार के क़रबी एंजीयोप्लास्टी हो पाती है । डॉ॰ कौल के अनुसार मरीज़ ज़्यादा हैं और सुविधाएं कम और इस समस्या को सोसायटी बहुत गंभीरता से ले रही है इसके लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है इलाज से ज़्यादा बचाव पर ध्यान देना । विदेशों में हृदय रोगियों की संख्या में कमी आने का यह कारण नहीं है कि वहां आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं, बल्कि वहां लोगों ने अपनी जीवनशैली में एकदम बदलाव शुरू कर दिया है ।

इसलिए ज़रूरी है कि स्कूल-कॉलेज स्तर पर हृदय रोगों की जानकारी तथा उसके बचाव के बारे में पाठ्यक्रम हो ।

डॉ॰ कौल ने बताया कि हर रोज़ आधा घंटा तेज़ पैदल चलना, फ़ास्ट फुड के अलावा दूध से बने पदार्थों का कम सेवन करना, मक्खन नारियल तेल का ज़्यादा इस्तेमाल नहीं, धुम्रपान से बना आदि कुछेक ऐसी बातें हैं, जिनका पालन करने पर व्यक्ति हृदय रोगों से बचा रह सकता है । इसके अलावा यदि किसी को लगातार 10-15 मिनट तक सीने में दर्द है, पसीना आ रहा है, नब्ज़ तेज़ या धीमे चल रही है, एकदम से कमज़ोरी आ गयी तो उसे तुरंत डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए । क्योंकि ये हृदयघात के लक्षण हैं । यदि मरीज़ को एक घंटे के अंदर चिकित्सा सेवाएं मिल जाएं तो हृदयघात के हमले को काफ़ी हद तक उल्टा जा सकता है । इसके अलावा मरीज़ को तुरंत एस्प्रीन की गोली दे देनी चाहिए, ये ख़ून को पतला कर देने में सहायक होती है । तथा मरने की संभावना में 26 प्रतिशत की कमी आ जाती है । अल्सर मरीज़ों को यह दवा डॉक्टर की सलाह के बाद ही लेनी चाहिए ।

डॉ॰ कौल के अनुसार हृदय की धमनियों को खोलने के लिए अब काफ़ी तकनीक उपलब्ध हैं । इनमें बाईपास और एंजियोप्लास्टी तो प्रमुख हैं । इसके अलावा जिन लोगों की धमनियां एकदम ख़राब हो गयी हैं, कई बार ऑपरेशन हो चुके हैं । उन लोगों लेज़र तकनीक से इलाज किया जाने लगा है । इसमें ख़ून को दूसरे रास्ते से हृदय में पहुंचाया जाता है । लेज़र के द्वारा नयी नलियां बनायी जाती हैं और उसे एंजियोजेनिसिस करते हैं । दवाओं के द्वारा भी इन नलियों को विकास बढ़ाया जा सकता है । इसके अलावा आने वाले समय में जीन थैरेपी के द्वारा भी हृदय रोगों का इलाज करने पर शोध चल रहा है इसमें धमनी के अंदर बदलाव तथा हृदय की ख़राब मांसपेशियों को भी बदला जा सकेगा ।

कृमि से बचाव आवश्यक

■ विद्या प्रकाश

आजकल मानव शरीर में कृमि का प्रकोप तथा कृमि से पैदा होने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियां सामान्य बात हैं । हमारे परिवार का कोई न कोई सदस्य आये दिन और अक्सर कृमि से उत्पन्न और संबंधित तकलीफ़ों से परेशान होता रहता है । शरीर में कृमि से पैदा होने वाली बीमारियों का लक्षण आम तौर से पेट में दर्द, भूख बहुत लगना परन्तु इस हिसाब से वज़न न बढ़ना (कुपोषण), संग्रहणी, रक्ताल्पता, नाक गुदाद्वार तथा मूत्रमार्ग में खुजली एवं जलन एवं जलन, फ़िट्स आना, पित्ती, फूला हुआ पेट, उल्टियां आना, बार-बार खांसी, स्नोफ़ीलिया वग़ैरह के रूप में पाया और देखा जाता है । इन तमाम शिकायतों का कारण हमारी आंत में कृमियों का प्रकोप होता है ।

हमारी आंत में बिन बुलाये मेहमान की भांति आ धमकने वाले ये कृमि हमारे भोजन के पोषक तत्वों को हज़म कर जाते हैं । इतना ही नहीं, ये कृमि हमारी आंत से रक्त चूसते रहते हैं और आंत को अवरुद्ध कर देते हैं । इनकी वजह से मनुष्य को एलर्जी हो सकती है ।

कृमि चार प्रकार के होते हैं– (1) टेपवॉर्म जो बहुत बड़े, चपटे तथा आकार में लम्बे होते हैं । (2) राउंडवॉर्म जो आकार में बड़े, गोल और लम्बे होते हैं । (3) थ्रेडवॉर्म– ये कीड़े धागे की तरह पतले और सफ़ेद रंग के होत हैं । (5) हुकवर्ग– ये कीड़े एक सिरे पर हुक के आकार वाले होते हैं । इन कृमियों के अंडे या लार्वा प्रदूषित खाद्य पदार्थों या पेयजल के माध्यम से हमारी आंतों या पेट में प्रवेश करते हैं या श्वास लेते समय हवा के साथ ये शरीर के अन्दर चल जाते हैं । छोटे हुक के सदृश आकार वाले कृमि या उनके

लारवा हमारी त्वचा के ज़रिये हमारे शरीर के अन्दर प्रविष्ट हो जाते हैं। ऐसा तब होता है जब हम नंगे पांव खेत-क्यारी में काम करते हैं या मैदान में खेलते-कूदते हैं।

कृमि के प्रकोप से सुरक्षा हेतु हमारे लिए कतिपय सावधानियां बरतना अत्यन्त आवश्यक है। यदि हमें इस बात का शक है कि हमारे परिवार के किसी सदस्य को कृमि का प्रकोप है तो हमें तत्काल डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए और उसके द्वारा प्रदत्त निर्देशों का अनुपालन करते हुए उचित मात्रा में दवाई का सेवन करना चाहिए। साधारणत: हर 25 किलो वज़न पर नीमोसिड की एक गोली या एक चम्मच (5 मिलीलीटर) शरबत कृमि से छुटकारा हेतु पर्याप्त होता है। कीड़ों को फैलाव से रोकने हेतु सम्पूर्ण परिवार का एक साथ इलाज ज़्यादा अच्छा, असरदार और फ़ायदेमंद होता है। प्याज़ कृमिघ्न होता है। अतएव भोजन में प्याज़ अवश्य खाना चाहिए। इसके साथ ही कृमि से बचाव हेतु हम ज़मीन पर ख़ास तौर से खेतों और बाग़ों में नंगे पैर न चलें। मल-मूत्र का समूचित निस्तारण करें। पेट के कीड़ों की दवा का नियमित रूप से सेवन करें। शौचादि के बाद तथा भोजन करने से पूर्व हाथ भलीभांति धो लिया जाए। हाइपोक्लोराइट या आयोडीनन से अच्छी तरह धोने के बाद ही हरी सब्ज़ियों और फलों का सेवन पहना जाए। हरदम स्वच्छ अर्न्तस्त्र पहना जाए। नियमित रूप से हाथ-पैर के नाखून काटे जाएं तथा बिस्तर की चादर सदैव साफ़-सुथरी रखी ज़ाए।

कोल्ड ड्रिंक पीने वालो, सावधान

● संपादन प्रभाग

सॉफ़्ट ड्रिंक से जुड़ी एक ख़बर ने पूरी दुनिया में खलबली मचा दी है। ब्रिटेन के पूर्व फ़ॉर्मासिस्ट नीरज नाइक ने 'दी रेनिगेड फ़ॉर्मासिस्ट' नाम के अपने ब्लॉग में कोल्ड ड्रिंक पीने के बाद शरीर के अंदर होने वाले प्रभावों को सबके सामने लाया है। इस ब्लॉग में उन्होंने दिखाया है कि कोका कोला पीने के 1 घंटे के अंदर शरीर में क्या-क्या होता है। सोशल साइट्स पर भी यह जानकारी काफ़ी वायरल हो रही है।

डेली मेल के मुताबिक़, नीरज नाइक ने एक ग्राफ़िक के माध्यम से बताया है कि कैसे ये ड्रिंक्स शरीर से ज़रूरी खनिज तत्व बाहर कर देते हैं और आदमी मानसिक व शारीरिक रूप से बदलने लगता है :

पहले 10 मिनट : जब आप कोक का 1 कैन पीते हैं तो आपके शरीर में 10 चम्मच शुगर एक साथ जाती है। ये मात्रा 24 घंटे में लिये गये शुगर के बराबर होती है। अचानक इतना मीठा खाने से आपको उल्टी भी हो सकती है। लेकिन इसमें मिले फ़ॉस्फ़ोरिक एसिड के कारण ऐसा नहीं होता।

20 मिनट बाद : पीने के 20 मिनट बाद ही पीने वाले का ब्लड शूगर एकदम से बढ़ जाता है, जिसके कारण शरीर से इंसुलिन तेज़ी से निकलता है। शरीर का लीवर इस पर प्रक्रिया करता है और इसे फ़ैट में बदलने लगता है।

40 मिनट बाद : पीने वालों के शरीर में कैफ़ीन की काफ़ी मात्रा चली जाती है। दूसरी तरफ़ ब्लड प्रेशर भी बढ़ने लगता है। इसे देखते हुए आपका लीवर ख़ून में और शूगर भेजता है। मस्तिष्क में ख़ून जाना कम होता है।

45 मिनट बाद : इतने समय बाद आपके शरीर को हेरोइन (मादक पदार्थ) लेने जैसा लगने लगता है। शरीर डोपामाइन का उत्पादन बढ़ा देता है, जिससे दिमाग़ को ख़ुशी देने वाला हिस्सा सक्रिय हो जाता है।

60 मिनट बाद : पीने के 1 घंटे बाद 3 प्रक्रियाएं होती हैं–

1. फ़ॉस्फ़ोरिक एसिड आपके शरीर के निचली आंत में कैल्शियम, मैग्निशियम और ज़िंक को इकट्ठा करता है। इससे मेटाबोलिज़्म बढ़ता है। शुगर और अन्य आर्टिफ़िशियल स्वीटनर्स की बढ़ी मात्रा के कारण मेटाबोलिज़्म और बढ़ता है। इसके बाद लोग पेशाब के लिए जाते हैं, जिसमें कैल्शियम बाहर निकलता है।

2. कैफ़ीन का तरल करने वाला गुण अपना असर दिखाना शुरू करता है और आप बार-बार पेशाब के लिए जाते हैं, जिससे शरीर से कैल्शियम, मैग्निशियम, ज़िंक, सोडियम और पानी बाहर चला आता है जो वास्तव में आपकी हड्डियों में जाना था।

3. जैसे ही यह प्रक्रिया होती है मीठेपन का एहसास बढ़ जाता है। आप चिड़चिड़े और आलसी हो जाते हैं। कोक में वास्तव में मौजूद पानी यूरिन के ज़रिए बाहर निकल जाता है। इस तरह कोक पीने से आपके शरीर में दांतों के लिए आवश्यक खनिज शरीर से बाहर निकल जाते हैं।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीवाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

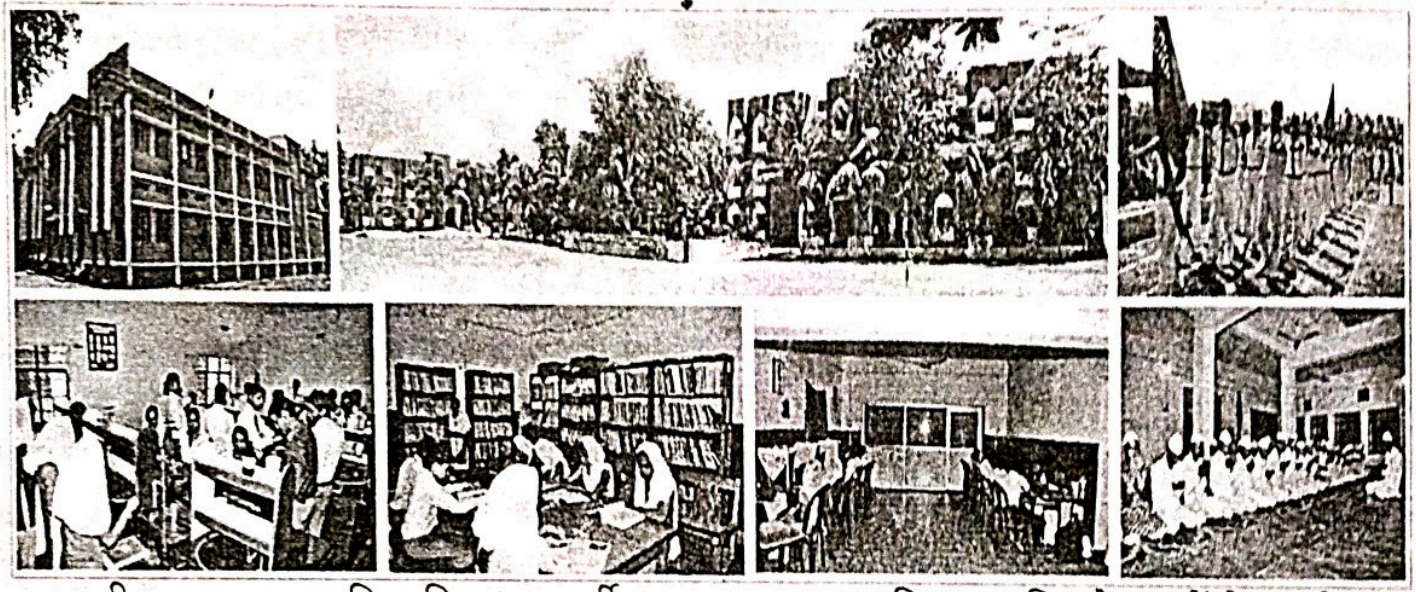

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

कमाई में हीरो, मैदान पर ज़ीरो

● ए॰ एन॰ शिब्ली

अगर यह कहा जाये कि क्रिकेट में पैसों की बारिश होती है तो यह गलत नहीं होगा। इंडियन प्रीमियर लीग के लिए जब खिलाड़ियों की नीलामी हुई थी तो उस दिन बहुत से लोग कुछ खिलाड़ियों की क़ीमत सुनकर हैरान हो गये थे । यहां कुछ खिलाडियों की इतनी बोली लगी जितनी फुटबॉल के खिलाड़ी पूरी ज़िन्दगी में नहीं कमाते । खिलाड़ियों के महंगी क़ीमत पर बिकने के कई कारण हो सकते हैं । टीमों के मालिक को हो सकता है उन खिलाड़ियों में कुछ ख़ास नज़र आया हो मगर यहां सवाल यह है कि क्या जिन खिलाड़ियों को बहुत ज़्यादा पैसे मिलते हैं या मिले हैं उन्होंने अपनी बड़ी क़ीमत का हक़ अदा किया। बहुत से खिलाड़ी तो ऐसे हैं जिन्होंने शानदार प्रदर्शन किया और उन्हें जो बड़ी क़ीमत मिली थी उसके बदले उन्होंने बहुत बेहतर खेल पेश किया । इसमें सबसे बेहतर नाम विराट कोहली का है । कोहली का प्रदर्शन तो इतना शानदार रहा कि उन्होंने अकेले इसी आई॰पी॰एल॰ में चार शतक लगा दिए । यह कारनामा अब तक कोई दूसरा खिलाड़ी अंजाम नहीं दे सका है ।

कोहली ने तो बहुत बेहतर खेल दिखाया मगर यहां हम बात उन खिलाड़ियों की करेंगे जिन्होंने बहुत महंगी क़ीमत हासिल की मगर वह टीम के काम नहीं आये । यानि उन्होंने पैसे तो बहुत लिए मगर पूरी तरह से फ़्लॉप साबित हुए ।

इस संबंध में सबसे पहला नाम पवन नेगी का लिया जा सकता है । वैसे तो नेगी की बेस प्राइस सिर्फ़ 50 लाख रुपये थी, लेकिन दिल्ली की टीम ने भारत के लिए एक भी मैच नहीं खेलने वाले नेगी को 8.5 करोड़ में ख़रीदकर सबको चौंका दिया । पहले तो नेगी की क़ीमत ने दर्शकों को चौंकाया उसके बाद उसके ख़राब प्रदर्शन ने सबको चौंकाया। पवन नेगी ने 8 मैच खेले जिनमें उन्होंने सिर्फ़ 57 रन बनाये। उनका उच्चतम स्कोर 19 रन रहा । गेंदबाज़ के तौर पर भी उन्होंने सिर्फ़ एक विकेट हासिल की । यानि जिस खिलाड़ी को साढ़े आठ करोड़ में ख़रीदा गया उसने सिर्फ़ 57 रन बनाए और एक विकेट ली । क्रिकेट प्रशंसक पहले तो नेगी की क़ीमत को लेकर हैरान थे अब उसके प्रदर्शन को लेकर हैरान हैं ।

आई॰पी॰एल॰-9 की नीलामी में ऑस्ट्रेलिया के धुरंधर शेन वॉटसन सबसे महंगे बिके । बिग बैश में अच्छे सीज़न और भारतीय पिचों पर खेलने के अनुभव को देखते हुए टीमों में उन्हें ख़रीदने के लिए होड़ देखी गयी । मुंबई और बेंगलुरू के बीच इस हरफ़नमौला खिलाड़ी को ख़रीदने की जद्दोजहद हुई, लेकिन आख़िरकार रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरू ने उन्हें ख़रीदने के लिए 9.5 करोड़ रुपए ख़र्च कर दिए । इस में कोई दो राय नहीं कि शेन वाटसन बहुत ही अच्छे खिलाड़ी हैं और पहले भी उन्होंने बेहतर खेल पेश किया है मगर इस बार वह नाकाम रहे । वॉटसन ने 15 मैच खेले जिनमें उन्होंने सिर्फ़ 168 रन बनाए । उनका उच्चतम स्कोर 36 रहा । जो खिलाड़ी सबसे महंगा बिका हो उसका टोटल रन 168 किसी भी तरह से उचित नहीं कहा सकता ।

आई॰पी॰एल॰ की नीलामी होती है तो युवराज सिंह अपने खेल से ज़्यादा अपनी बोली के लिए मशहूर रहते हैं। नीलामी में उनका भी बड़ा जलवा रहता है । पिछली बार 16 करोड़ में बिके युवराज पर इस बार भी सबकी निगाहें थीं । उनको लेकर बेंगलुरू, हैदराबाद और मुंबई ने बोली लगाई । बाद में सनराइज़र्स हैदराबाद ने उन्हें 7 करोड़ में ख़रीदा । युवराज ने सात क़रोड़ तो लिए मगर इस हिसाब से वह खेल नहीं सके । उनको जितने पैसे मिले इसका उन्होंने बदला नहीं दिया । युवराज सिंह ने 8 मैच खेले जिनमें वह सिर्फ़ 190 रन ही बना सके । उनका उच्चतम स्कोर 44 रन रहा । यानी युवराज सिंह कोई अर्धशतक भी नहीं बना सके। गेंदबाज़ी भी की युवराज ने की मगर कोई विकेट हासिल नहीं कर सके । यानी कुल मिलाकर देखा जाये तो इस बार युवराज सिंह भी कोई बहुत बेहतर खेल पेश नहीं कर सके।

इस बार की नीलामी में क्रिस मोरिस चौथे सबसे महंगे

खिलाड़ी थे । उन्हें डेल्ही डेयरडेविल्स ने 7 करोड़ में ख़रीदा । हालांकि क्रिस मोरिस ने एक मैच में बहुत बेहतर प्रदर्शन किया मगर कुल मिलाकर उनका प्रदर्शन भी बहुत शानदार नहीं कहा जाएगा । उनको जितनी क़ीमत मिली उनका प्रदर्शन वैसा नहीं रहा । मोरिस ने 12 मैच खेले जिनमें 195 रन बनाए । एक मैच में उनका 82 अविजित रन के रूप में शानदार प्रदर्शन रहा मगर बाक़ी के मैचों में वह अच्छा नहीं खेले । एक गेंदबाज़ के तौर पर मोरिस ने 12 मैचों में 13 विकटें हासिल कीं ।

मोहित शर्मा काफ़ी समय से टीम इंडिया से बाहर हैं, इसके बावजूद इस बार वह पांचवें सबसे महंगे खिलाड़ी थे। 2014 की नीलामी में उन पर 2 करोड़ रुपए की बोली लगी थी, लेकिन इस बार उन्हें किंग्स इलेवन पंजाब ने 6.5 करोड़ में ख़रीदा । मोहित शर्मा साढ़े 6 करोड़ में तो बिक गये मगर टीम के बहुत काम नहीं आये । उन्होंने 14 मैच खेले जिनमें सिर्फ़ 32 रन बना सके । उनका उच्चतम स्कोर सिर्फ़ 15 रन रहा । गेंदबाज़ के तौर पर उनको 13 विकेटें मिलीं । ऑस्ट्रेलिया के मिशेल मार्श को राइज़िंग पुणे सुपर जाइंट ने 4.5 करोड़ में ख़रीदा । वह आई॰पी॰एल॰ के बीच में ही जख़्मी हो गये और अपने देश लौट गये मगर उन्हें जितना मैच खेलने का मौक़ा मिला उसमें वह फ़्लॉप रहे । उन्होंने तीन मैच खेले जिनमें सिर्फ़ सात रन बनाए । गेंदबाज़ के तौर पर उन्हें 4 विकेट मिली । पता नहीं वह बाक़ी के मैच खेलते तो क्या करते मगर उन्होंने जितना मैच खेला उसमें वह फ़्लॉप रहे ।

दुनिया के नंबर एक गेंदबाज़ डेल स्टेन 2.3 करोड़ में बिके मगर उन्हें सिर्फ़ एक ही मैच खेलने का मौक़ा मिला जिनमें वह एक रन ही बना पाए । दो ही ओवर करने का मौक़ा मिला जिसमें कोई विकेट नहीं मिली । मुरुगन आश्विन को राइज़िंग पुणे सुपर जाइंट ने 4.6 करोड़ में ख़रीदा मगर वह बुरी तरह फ़्लॉप रहे । न तो गेंदबाज़ी में कमाल किया और न ही बल्लेबाज़ी में । उन्होंने दस मैचों में सिर्फ़ 7 रन बनाए और एक भी विकेट नहीं लिया । यानी टीम ने उनको जो पैसे दिये वह टीम के काम नहीं आये । दीपक हूडा को सनराइज़र्स हैदराबाद ने 4.2 करोड़ में ख़रीदा । उन्होंने घरेलु क्रिकेट में अच्छी बल्लेबाज़ी की थी उसके बाद उनसे बड़ी आशाएं थी मगर वह पूरी तरह फ़्लॉप रहे। क़ीमत तो उन्हें महंगी मिली मगर उनकी टीम को उनसे कुछ नहीं मिला । हूडा ने 15 मैचों में सिर्फ़ 119 रन बनाए। उनका उच्चतम स्कोर 37 रहा । गेंदबाज़ के तौर पर हूडा ने 15 मैचों में सिर्फ़ तीन विकेट हासिल की । कुल मिलाकर देखें तो दुसरे कई खिलाड़ियों की तरह दीपक हूडा भी फ़्लॉप ही साबित हुए । इनके अलावा बहुत से ऐसे खिलाड़ी हैं जिनका क्रिकेट की दुनियां में बहुत नाम है और उन्होंने पहले भी बहुत कमाल का प्रदर्शन किया है मगर इस बार उनका प्रदर्शन बेकार रहा । उन्हें पैसे बहुत मिले मगर वह नाकाम रहे । इसमें महेंदर सिंह धोनी भी शामिल हैं जिन्होंने एक समय में बहुत धमाल मचाया था । धोनी ने इस बार कुल 14 मैच खेले जिनमें उन्होंने 284 रन बनाए । धोनी जैसे बड़े बल्लेबाज़ के लिए यह कोई बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कहा जायेगा । इस बार उनकी टीम बाहर भी हो गयी। वह फ़िनिशर के तौर पर जाने जाते थे मगर कई बार इसमें नाकाम रहे ।

धोनी की ही टीम के रविचंद्रन आश्विन भी फ़्लॉप साबित हुए । आश्विन ने 14 मैचों में सिर्फ़ 41 रन बनाए । 14 मैचों में उन्हें विकटें भी दस ही मिलीं । हरभजन सिंह क्रिकेट की दुनिया का एक ख़ास नाम है । वह देश के लिए भी बेहतर कर चुके हैं मगर इस बार कुछ ख़ास नहीं किया। 14 मैचों में हरभजन ने सिर्फ़ 92 रन बनाए । गेंदबाज़ी की बात करें तो उन्हें सिर्फ़ 9 विकेट मिली । इसे इतने बड़े खिलाड़ी के लिए कोई बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कहा जायेगा ।

इस बार के नाकाम खिलाड़ियों की बात करें और क्रिस गेल का नाम नहीं आये यह असम्भव है । जिस खिलाड़ी से गेंदबाज कांपते हों, वह इस बार कोई बहुत ख़ास नहीं कर सका । हालांकि एक दो अवसर पर गेल ने शानदार प्रदर्शन किया मगर पूरे टूर्नामेंट में वह बहुत सफल नहीं रहे । इस बार 9 मैचों में उन्होंने सिर्फ़ 151 रन बनाए । उनका उच्चतम स्कोर 71 रन रहा मगर वह अपनी हैसियत के हिसाब से नहीं खेल सके । वैसे तो खेलों में किसी भी खिलाड़ी का प्रदर्शन हमेशा एक जैसा नहीं रहता मगर उस समय अजब लगता है जब किसी खिलाड़ी को करोड़ों रुपया मिले और वह मैदान पर बुरी तरह से फ़्लॉप रहे । टीम के मालिक को इसका असर पड़े या न पड़े मगर दर्शकों को तो वही खिलाड़ी पसंद आता है जो बहुत अच्छा खेले, चाहे उसकी क़ीमत जो भी हो ।

कम क्यों नहीं हो रहीं दहेज हत्याएं ?

■ सुधा सिंह

हमें आधुनिक काल में प्रवेश किए दो सौ साल से ज़्यादा हो गये, लेकिन सामाजिक संबंधों के निर्माण में हम अब तक आधुनिक दृष्टिकोण का विकास नहीं कर पाए हैं। सामाजिक संबंधों की धुरी स्त्री-पुरुष संबंध की शुरुआत आज भी दहेज लेकर और देकर की जाती है। जबकि दहेज लेने और देने के ख़िलाफ़ क़ानून है। लेकिन दहेज को लेकर समान्य लोगों में कोई घृणा का भाव नहीं है। समाज का कोई भी वर्ग दहेज के लिए ना नहीं कहता। न ही दहेज लेना समाज की दृष्टि में आपराधिक कर्म माना जाता है।

हमारा ध्यान दहेज के मामलों पर तब जाता है। जब कोई लड़की दहेज के लिए उपेक्षा, हिंसा, प्रताड़ना और मृत्यु की भेंट चढ़ जाती है। दहेज न लाने के कारण कई परिवार लड़की को उसके मायके पहुंचा जाते हैं और जब मांग न पूरी हो, उसे ससुराल में जगह नहीं मिलती। एक आंकड़ें के मुताबिक़ 2007 से लेकर 2011 तक दहेज के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार 2012 में दहेज हत्या के 2,833 मामले सामने आए। वर्ष 2011 में दहेज के कारण स्त्रियों की हत्या के मामले 2,618 थे। यानी औसतन एक घंटे में एक स्त्री की हत्या दहेज के कारण हुई है। 2013 में दहेज निरोधक क़ानून के दायरे में आने वाले 10,709 मामले दर्ज किये गये।

दहेज़ प्रथा के पीछे यदि यह मंशा रही हो कि लड़की के पिता के घर जिन चीज़ों के व्यावहार की आदत है, पति के घर उसे उन चीज़ों का अभाव महसूस न हो, तो भी यह हास्यास्पद तर्क है। कारण कि पारंपरिक विवाह प्रायः हैसियत में बराबरी के लोगों के बीच ही हुआ करते हैं, और दूसरा कि वर पक्ष जितना धनी होता है, दहेज की मात्रा भी उसी हिसाब से बढ़ जाती है।

छोटी-छोटी वस्तुओं के लिए स्त्री को जलाकर मार देना क्रूरता की पराकाष्ठा है। कभी पिता के घर से एक स्कूटर न लाने के कारण, कभी पैसे के कारण, कभी अन्य किसी चीज़ के कारण विवाहिता को जलाकर या अन्य किसी तरीक़े से मार डाला जाता है। कन्या भ्रूणहत्या से लेकर दहेज हत्या तक सामाजिक कारण एक ही है। लड़की को दहेज देना पड़ेगा, वह माता-पिता के लिए आर्थिक तौर पर बोझ साबित होगी। अतः लड़की पैदा होने का मातम होता है और कई जगह पैदा होने के पहले ही गर्भस्थ कन्या-शिशु को मारने के सारे इंतज़ाम कर लिये जाते हैं। इस तरह की क्रूरताओं से बच गई कुछ लड़कियां दहेज हत्या का शिकार होती हैं।

दहेज का प्रश्न सबसे ज़्यादा मध्यवर्ग का प्रश्न है, और आंकड़ों के अनुसार, कन्याभ्रूण हत्या भी सबसे ज़्यादा शहरी मध्यवर्ग में ही हो रही है। उच्चवर्ग में भी दहेज का चलन ख़ूब है। लेकिन उच्चवर्ग पर इससे बरसों-बरस बचत करते रहने का दबाव नहीं होता, उसके लिए तो यह अपनी हैसियत के प्रदर्शन का ज़रिआ होता है। दबाव तो मध्यवर्ग सहित समाज के उससे नीचे के तबक़ों पर पड़ता है, जहां तमाम परिवार ज़रूरी ख़र्चों में कटौती करते हुए भी दहेज का इंतज़ाम करने में लगे रहते हैं। विचित्र यह है कि आजकल की आधुनिक लड़कियां भी दहेज को बुरा नहीं मानतीं। उसके प्रति घृणा नहीं रखतीं। वे इंतज़ार करती हैं कि माता-पिता उन्हें दहेज में क्या-क्या देने वाले हैं। दहेज में प्राप्त संपत्ति को कन्या-धन माना जाता है, अतः वे भी चाहती हैं कि माता-पिता से उन्हें दहेज के रूप में यह संपत्ति मिले। मोटा दहेज देकर कैसी भी लड़की की शादी की जा सकती है।

परिवार वालों का दहेज के आधार पर संबंध दरअसल संपत्ति के आधार पर बनाया गया संबंध है, मनुष्यता के आधार पर बनाया गया संबंध नहीं। स्वयं को मनुष्य के रूप में न देख पाने के कारण लड़कियां अपने को एक वस्तु या संपत्ति की तरह ही सजाती-संवारती हैं। इसमें किशोरी, युवती और बुज़ुर्ग सभी उम्र की महिलाएं शामिल हैं। वे वस्तु और उसके मालिक से अलग अपना मूल्य नहीं देखतीं।

शिक्षित लड़कियां भी जहां दहेज का सवाल आता है, वहां विरोध नहीं करतीं । मां-बाप अपनी हैसियत के अनुसार दें और खुशी से दें तो भी वह दहेज ही कहलाएगा । माता-पिता को देना ही है तो अपनी संपत्ति में बेटी को हिस्सा दें । लेकिन ऐसे उदाहरण नहीं मिलते । न ही जनजागृति का ऐसा कोई प्रयास देखने को मिलता है कि बेटी भी संपत्ति की उत्तराधिकारिणी है । दहेज के ख़िलाफ़ क़ानून है, लेकिन हम उसका पालन नहीं करते । बेटी को भी संपत्ति में समान हक़ का क़ानून है, हम उसका भी पालन नहीं करते । फिर हम कैसे कह सकते हैं कि यह एक सभ्य नागरिक समाज है जो नियम-क़ानून से बंधा हुआ है ! यह तो सुविधाजनक व्याख्या और व्यवहार से चल रहा है । इसमें सबसे ज़्यादा नुक़सान स्त्री का है और व्यापक नुक़सान समाज का है ।

बेटी को दहेज देकर दूसरे घर भेज कर छुट्टी पाने की मानसिकता का ही परिणाम है कि माता-पिता लड़की पर भरोसा नहीं करते । उसकी स्वतंत्रता पर नियंत्रण होना चाहिए । उस पर तमाम पाबंदियां इसी मानसिकता के कारण लाद दी जाती हैं । एक स्वतंत्र चेतना संपन्न और स्वस्थ व्यक्तित्व के निर्माण के लिए जिस तरह का मुक्त, पाबंदी-रहित, आनंदपूर्ण वातारण चाहिए, वह मध्य और निम्न मध्यवर्गीय लड़की को नसीब नहीं होता । फिर शिक्षित लड़कियां भी यदि अपने लिए बने पिंजरों में आनंद लेने लगें तो आश्चर्य क्या !

उपभोक्तावादी व्यवस्था ने लड़की को सिखाया है कि उसकी देह को हर कोण से सुंदर लगना चाहिए । शादी के पहले ब्राइडल पैकेज का नया धंधा आरंभ है । यह महीनों चलता है । शादी के बाद भी शादीशुदा घरेलू और कामकाजी औरतें जिस तरह से अपने को सौंदर्य प्रसाधनों और पार्लरों के ज़रिए सुंदर बनाने की होड़ में लगी रहती हैं वह दुखद है । आज की आधुनिक लंड़की की स्थिति यह है कि वह शिक्षित है, बहुत-सी आत्म-निर्भर भी हैं । लेकिन दहेज को लेकर उनमें स्वीकृति का भाव है । मीडिया और विज्ञापनों का बाज़ार लड़की की इस मनोदशा को पकड़ता है । गहनों के विज्ञापन तो जैसे दहेज प्रथा का घोषणापत्र हैं । प्राय: हर विज्ञापन में लड़की का विवाह और उसमें दिया जाने वाला दहेज केंद्र में होता है ।

विज्ञापन में गहनों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी दिए जाने वाले दहेज के रूप में दिखाया जाता है । हाल के एक विज्ञापन में बच्ची के लिए पिता गहनों का भारी सेट ख़रीद कर लाता है । मां के आपत्ति करने पर वह कहता है, बच्ची बड़ी हो रही है उसका विवाह भी तो करना है । एल०आई०सी० के एक विज्ञापन में बेटी के विवाह के अवसर पर उसकी मां को विवाह में आया मेहमान बधाई देता है कि शर्माजी की मृत्यु के बाद भी उसने बेटी का विवाह बड़ी धूमधाम से किया तो वह कहती है कि सारे काम तो शर्माजी ने अपने जीते-जी कर दिये, उनके एल०आई०सी० में जमा रक़म से बेटी के विवाह का सारा ख़र्च निकला । यानी विवाह पर लेन-देन और अन्य चीज़ों पर बेशुमार ख़र्च होते हैं । जो मां-बाप पर भारी होते हैं ।

प्रकारांतर से ये सभी विज्ञापन विवाह में दिए जाने वाले दहेज की वकालत करते हैं । कोई आवश्यक नहीं कि विवाह पर इतने ख़र्चे किए जाएं । लेकिन जो हमारे समाज के 'आइकॉन' हैं वे जब स्वयं का या अपने बेटे-बेटियों का विवाह करते हैं तो करोड़ों रुपये फूंक देते हैं । धन और अप्रत्यक्षत: दहेज की वस्तुओं का भोंडा प्रदर्शन करते हैं । उनकी तस्वीरें मीडिया में छाई रहती हैं । लोग उनकी नक़ल करने की कोशिश करते हैं ।

वर्ष 2013 के दर्ज आंकड़ों से ज़ाहिर है कि दहेज संबंधी हत्याओं का प्रतिशत साल-दर-साल बढ़ रहा है । स्त्री को वस्तु और बोझ के रूप में देखने के कारण वर-पक्ष लड़की से विवाह के बदले दहेज की मांग करता है । कई राज्यों में तो पेशों के हिसाब से दहेज की रक़म निश्चित होती है । दहेज के लेन-देन में उत्तर भारत के राज्य हों या दक्षिण के, सभी एक जैसे हैं । साक्षरता दर में अगड़े और पिछड़े राज्यों में दहेज के लेन-देन के मामलों में फ़र्क़ नहीं है । आंध्र प्रदेश और बिहार दहेज हत्या के मामले में थोड़े ही अंतर से आगे पीछे हैं । केरल में साक्षरता दर सर्वाधिक है, उसी मात्रा में वहां दहेज का लेन-देन भी है । मंगलसूत्र बांटना, साड़ियां बांटना, सामूहिक दहेज का जुगाड़ राजनीतिक दल करते और वोट बटोरते हैं । इससे समाज में इस हत्यारी प्रथा को मदद ही मिलती है । अगर सचमुच भारतीय समाज को आधुनिक समाज बनाना है तो लड़की को दूसरे की वस्तु के रूप में देखना बंद करने की मुहिम चलानी होगी । दहेज के लिए सभी तबक़ों को ना कहना सीखना होगा ।

(सा० : जनसत्ता)

औरंगज़ेब की मंदिरों को भेंट और जागीरें

इतिहास के पन्ने यह साबित करते हैं कि औरंगज़ेब ने मंदिरों के अनुदान मुक़र्रर किये जो पहले मुक़र्रर नहीं हुए थे तथा बख़्शिशों और जागीरों से नवाज़ा। क्षेत्र रामनगर धुमेड़ी, ज़िला बाराबंकी के भूतपूर्व प्रबंधक श्री बाबू नारायण ने "सियासत" अख़बार (लाहौर) की 18 जुलाई, सन् 1924 ई० के अंक में बड़ी खोजबीन के बाद औरंगज़ेब भेदभाव-रहित व्यवहार के संबंध में लिखा था, जिसका कुछ भाग निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है। वे कहते हैं कि 'हिन्दू उपासना-गृहों को तबाह करने की कहानी मात्र अनुमान और कल्पना पर आधारित है–

1. ज़िला सीतापुर में 'मिश्रित' हिन्दुओं की एक मशहूर इबादतगाह है। मिश्रित के महन्त के पास बादशाह आलमगीर की अता की हुई एक शाही सनद मौजूद है जिसके ज़रिये से बहुत-से गांव महन्त जी को धार्मिक ख़र्च के लिए प्रदान किये गये थे, जो अब तक उसी तरह चले आ रहे हैं।

2. मथुरा में बलदेव जी का मंदिर है। उस मंदिर के ख़र्चों के लिए बादशाह औरंगज़ेब ने बहुत-से अनुदान दिये जो आज भी ऊपर लिखित मंदिर के क़ब्ज़े में है।

3. इलाहाबाद में संगम पर अकबर का बनवाया हुआ क़िला है जिसमें एक भव्य मंदिर है जहां सैकड़ों वर्ष पुरानी मूर्तियां हैं। वह औरंगज़ेब के क़ब्ज़े में था, किन्तु उसे किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहुंचाया गया है।

4. आजकल यह तरीक़ा हो गया है कि जो मूर्तियां कहीं टूटी हुई मिलती हैं, उनको लोग औरंगज़ेब की तोड़ी हुई बताते हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि वे स्वामी शंकराचार्य के समय में तोड़ी गयी थी। काशी में विश्वनाथ का मंदिर अवश्य औरंगज़ेब के दौर में ध्वस्त किया गया लेकिन तोड़ने की वस्तुस्थिति का पता करने और सूत्रपात का अवलोकन करने पर उसके तोड़ने का कारण धार्मिक भेद-भाव नहीं, बल्कि उसकी तह में राजनीतिक ज़रूरत महसूस होती है। क्योंकि यह मंदिर वाममार्ग का अड्डा बन गया था और उससे प्रजा का नैतिक व चारित्रिक पतन हो रहा था। (सियासत 18 जुलाई 1962 ई०)

इसी प्रकार का बयान पंडित सुन्दर लाल जी का है, वे कहते हैं कि–"भारत में अनगिनत मंदिर थे। यदि वास्तव में औरंगज़ेब मंदिरों का दुश्मन होता तो उन सभी मंदिरों को एक-एक करके ध्वस्त करा देता, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। हां, वे मंदिर अवश्य गिराये गये जहां उसके ख़िलाफ़ साज़िशें की जाती थीं और जो बग़ावत और राजनीतिक सरगर्मियों के अड्डे बन गये थे। अत: साज़िशों के कारण औरंगज़ेब ने जान-बूझकर मस्जिदों को भी तोड़ा है।"

(दैनिक दावत, दिल्ली)

प्रोफ़ेसर ईश्वरी प्रसाद जो उस काल के विश्वस्त इतिहासकार हैं, अपने इतिहास की पुस्तक में स्वीकार करते हैं कि औरंगज़ेब ने मंदिरों को अनुदान और जागीरें प्रदान की हैं। अत: वे लिखते हैं–"मुलतान में तोतला माई के मंदिर को एक सौ रुपये सालाना की जागीर आलमगीर ने प्रदान की। डेरादून के गुरुद्वारा को जागीर दी। हिन्दुओं पर यात्रा-कर जो पहले से चला आ रहा था, समाप्त कर दिया।"

इस क्रम में 'सत्यार्थ प्रकाश' का बयान पढ़ने योग्य है सत्यार्थ प्रकाश के लेखक फ़रमाते हैं–

"...अब जितनी मूर्तियां जैनियों की निकलती हैं वे शंकराचार्य के समय में टूटी थीं और बिना टूटी निकलती हैं वे जैनियों ने भूमि में गाड़ दी थीं कि तोड़ी न जाएं।" (सत्यार्थ प्रकाश, पृ०-207, समुल्लास ग्यारहवां (अद्धेप्यवाद समीक्षा), 37वां स०, अप्रैल, 1989 आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, खारी बावली, दिल्ली-6) इस लेखांश से इस आरोप का आप से आप खंडन हो जाता है जो कुछ लोग मुसलमानों पर आक्षेप लगाते हैं कि मुसलमानों ने हिन्दुओं के मंदिर ध्वस्त किये और मूर्तियों को तोड़ा।

मानव अंगों की ख़रीद-बिक्री का घिनौना कारोबार

● संपादन प्रभाग

मानव अंगों के क्रय-विक्रय का मामला दिन गुज़रने के साथ-साथ गंभीर रूप धारण करता जा रहा है । अब तो यह एक लाभदायक कारोबार बन गया है । आये दिन इससे संबंधित घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिससे यह अनुमान होता है कि इसमें जो लोग लिप्त हैं, उन्होंने इसको एक संगठित कारोबार का रूप दे दिया है ।

यह कारोबार देशव्यापी स्तर पर फैला हुआ है । जो गिरोह इस कारोबार में लगे हुए हैं वे आपस में जुड़े हुए हैं । ज़ाहिर है कि यह कारोबार एक ग़ैर क़ानूनी कारोबार है, इसलिए खुलेआम तो नहीं किया जा सकता है, मगर इस कारोबार का फैलाव इसको खुफ़िया नहीं रहने दे रहा है । अभी हाल की बात है कि पुलिस को ऐसे ही एक खुफ़िया और बड़े कारोबार का पता चला, इस सिलसिले में कुछ गिरफ़्तारियां भी की गयीं, इन गिरफ़्तारियों से यह पता चला कि इस घिनौने कारोबार में बाहर के लोग ही नहीं लिप्त थे, बल्कि अस्पतालों के निचले स्तर के कर्मचारियों से लेकर शीर्ष पदों पर आसीन अधिकारी भी शामिल थे । फिर जब छान-बीन हुई तो इसकी कड़ियां दूर-दूर तक फैली हुई नज़र आईं । एक के बाद दूसरी कड़ियां नज़रों के सामने आने लगीं, पता चला कि सिर्फ़ राजधानी दिल्ली में ही नहीं बल्कि देश के दूसरे हिस्सों में भी यह कारोबार फल फूल रहा है । पता चला है कि तमिलनाडु, पंजाब और पश्चिम बंगाल में भी इसका जाल फैला हुआ है और इसको बहुत ही संगठित तरीक़े से चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक और दूसरी जानकारियों का सहारा भी लिया जाता है ।

मालूम हुआ कि गुर्दे बड़े पैमाने पर ख़रीदे और बेचे जा रहे हैं, और वर्षों से यह काम हो रहा है । बहुत कम रक़म दी जाती है, मगर बहुत ज़्यादा रक़म वसूल की जाती है । इसका अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि यह गिरोह एक गुर्दे की क़ीमत 25-25 और 30-30 लाख रुपये वसूल करता है । राजधानी दिल्ली में इस घिनौने कारोबार का जो पर्दा फ़ाश हुआ है और जो गिरफ़्तारियां हुई हैं उसमें एक बड़े अस्पताल का नाम लिया जा रहा है ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और बिहार से ये गुर्दे प्राप्त किये जाते हैं और बड़े-बड़े अस्पतालों में भर्ती मरीज़ों के हाथों बेचे जाते हैं । दो-ढाई और तीन लाख में ये गुर्दे ख़रीदे जाते हैं, जबकि 25 और तीस लाख में बेचे जाते हैं । इनमें हर एक का हिस्सा होता है । बताया तो यह जाता है कि यह कारोबार देश से बाहर भी फैल गया है, अर्थात ये गिरोह पड़ोसी देश नेपाल और श्रीलंका में भी सक्रिय हैं ।

यह कोई नयी घटना नहीं है । गुड़गांव किडनी स्कैंडल तो बहुत मशहूर हुआ जिसकी ख़बर दुनिया को जनवरी 2008 में मिली थी, इस सिलसिले में एक व्यक्ति अमित कुमार की गिरफ़्तारी भी नेपाल से हुई थी । इस स्कैंडल से यह मालूम हुआ कि देश के विभिन्न इलाक़ों से यहां लोग लाए जाते थे और उनसे गुर्दे ख़रीदे जाते थे, यहां जिन मरीज़ों के गुर्दे बदले जाते थे, उनका संबंध अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, सऊदी अरब और यूनान जैसे देशों से था । इस स्कैंडल में कुछ अप्रवासी भारतीय भी लिप्त थे । उनकी विधिवत रूप से गिरफ़्तारियां भी हुई थीं ।

इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह घिनौना कारोबर आज भी जारी है । ज़ाहिर है कि इतने बड़े पैमाने पर इस तरह का ग़ैर क़ानूनी कारोबार इस सूरत में छिड़ सकता है, जब उसे मज़बूत और सुरक्षित हाथों को संरक्षण और समर्थन प्राप्त हो । उनके संरक्षण और हौसला अफ़ज़ाई के बिना इसका बढ़ना तो क्या पनपना भी संभव नहीं है । इससे जहां इसका अंदाज़ा होता है कि हमारा समाज कितना आत्माहीन हो गया है, वहीं इसका अंदाज़ा भी होता है कि जिन लोगों पर क़ानून की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी होती है, उनका भी कहीं न कहीं दोष अवश्य है । इसकी कुछ न कुछ ज़िम्मेदारी सरकार और समाज पर भी होती है, जो लोगों को इस तरह की अनुचित हरकत करने पर मजबूर होने से रोक नहीं पा रहे हैं ।

आर्थिक समस्याएं एवं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के समाधान

■ डॉ० फ़रहत हुसैन

आधुनिक अर्थशास्त्र की तीन चीज़ों ने मानवता को गहरा आघात पहुंचाया–

1. अर्थजगत से नैतिकता को बेदख़ल कर देना
2. लोगों की आवश्यकताओं को बढ़ाने पर बल देना
3. ब्याज की अनुमति तथा उसका प्रचलन

आर्थिक गतिविधियों, व्यापारिक व्यावसायिक एवं कमाने ख़र्च करने के क्रियाकलापों को नैतिकता के बंधन से आज़ाद करने का अर्थ होगा बेलगाम मनचले घोड़े की सवारी। मानव मूल्य आदमी का जौहर उसकी आत्मा है । मनुष्य और पशु में भेद करने वाली यही चीज़ है । यह अजीब दोहरा मानदण्ड है कि समाज में हम नैतिकता ईमानदारी तथा उच्च आदर्श की बात करें परन्तु आर्थिक क्षेत्र से इन गुणों को बाहर रखें । इसका परिणाम भी सामने है – आर्थिक अपराध अत्याचार व शोषण, कृत्रिम रीतियों से महंगाई बढ़ाना, आवश्यक चीज़ों की जमाख़ोरी, रिश्वत, ब्लैकमेलिंग भ्रष्टाचार आदि ।

संक्षेप में कहें तो आर्थिक लाभ तथा व्यक्तिगत हित के लिए सब कुछ कर डालना चाहे वह दूसरे व्यक्ति या समाज या राष्ट्र के लिए कितना ही हानिकारक, घातक एवं अमानवीय हो और चाहे उस कृत्य से इन्सानियत कितनी शर्मसार क्यों न हो जाए ।

आप कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र तथा मैनेजमेंट के कोर्स में नैतिक अर्थशास्त्र (Ethical Economics), नैतिकता एवं सामाजिक मूल्य (Morality and Social Values) जैसे विषय सम्मिलित किए हैं । मैं उत्तर में कहूंगा कि हां, मगर केवल सैद्धांतिक एवं शैक्षणिक स्तर पर, न कि व्यावहारिक धरातल पर ।

इसी प्रकार आम आदमी के जीवन में नयी-नयी चीज़ें उसकी आवश्यकता की सूची में, वह भी कृत्रिम माध्यमों द्वारा बढ़ाना तथा उनके उत्पादन एंव विक्रय द्वारा बटोरना अर्थात उपभोक्तावाद (Cosumerism) को बढ़ावा देना यह भी पाश्चात्य संस्कृति की 'देन' है । मूलभूत आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र, आवास, इलाज, शिक्षा की आपूर्ति की किसी को चिन्ता नहीं । हां विलासिता की सामग्री के उत्पादन एवं विप्पणन में हर व्यवसायी रुचि रखता है । सम्पूर्ण विज्ञान जगत बड़ी तन्मयता से इस उपभोक्तावाद को पोषित करने में जुटा हुआ है । उत्पादन बढ़ रहा है फिर भी विश्व की आबादी का बड़ा भाग ग़रीबी, भुखमरी, बेरोज़गारी का शिकार क्यों है ? इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है । विश्व स्तर पर कुल मिलाकर संसाधनों की कमी नहीं है ... संसाधन हैं परन्तु उनका उचित प्रयोग नहीं हुआ और जो कुछ उत्पादन हुआ उसका लाभ अन्त्रिम नागरिक तक नहीं पहुंचा । उद्योगपतियों का पूरा ज़ोर अमीरज़ादों की पसन्द का ख़याल रखना है । महंगे आवासीय प्रोजेक्टों की भरमार है जबकि करोड़ों का ठिकाना फुटपाथ या फिर झोंपड़ी है । जो कारीगर और मज़दूर इन आलीशान इमारतों को बनाते हैं उन्हें छत नसीब नहीं । पेयजल आपूर्ति की समस्या विकट है शराब की कोई कमी नहीं, हां बोतल बन्द पानी मिल सकता है क्योंकि उसमें अच्छा फ़ायदा है । किसान आत्महत्या को विवश हैं, उसकी उपज को स्टॉक करने वाले व्यापारी तथा उसके गन्ने से चीनी कम और अल्कोहल अधिक बनाने वाले उद्योगपति मालामाल हैं । उदाहरण अनगिनत हैं, वास्तविकता यह है कि गिने-चुने सरमायादारों को छोड़कर शेष जनता आर्थिक समस्याओं की चपेट में है । लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या ग़रीबी रेखा से

नीचे जीवन बिता रही है । मध्यवर्ग अजीब दुविधा में जी रहा है ।

सरमायादारों के बिछाए जाल में फंसे सब फड़फड़ा रहे हैं । बैंक, बीमा कंपनियां, शेयर बाज़ार और नयी-नयी स्कीमें वह फंदे हैं जो लोगों को जकड़े हुए हैं मैं इन वित्तीय संस्थाओं का विरोधी नहीं हूं । आशय यह है कि ब्याज आधारित व्यवस्था के कारण भी आर्थिक समस्याएं बढ़ रही हैं, अथवा इनका लाभ केवल संपन्न वर्ग को मिल रहा है । ऐसे में आर्थिक समस्याओं से जूझती, पिसती और कराहती इन्सानियत किसी 'मसीहा' किसी मुक्तिदाता की तलाश में है ।

इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि इसी तरह का शोषण, यही महाजनी रंग-ढंग, दासता, भूख, ग़रीबी, जिसका संतुलित व्यापारिक तथा पूर्ण समाधान हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने पवित्र कुरआन की ज्योति तथा अपनी तत्वदर्शिता से 23 वर्ष की छोटी-सी अवधि में किया था । आज फिर उस मुक्तिदाता उस मसीहा को 'विश्वनायक' मान लो उसके सुझाए और धरती पर लागू किये गये फ़ार्मूले को गले लगा लो, निश्चित रूप से आर्थिक मकड़जाल से निजात मिल जायेगी ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने आर्थिक क्रियाकलापों को भी उस जीवन दर्शन से जोड़ा जिसमें ईशपरायणता, और परलोक की जवाबदेही बुनियाद है । नैतिकता और ईमानदारी को 'नीति' नहीं आस्था का मामला बनाया । परिणामतः अमीर-ग़रीब, आक़ा-गुलाम, मज़दूर-मालिक गोरे-काले, ऐसे समस्त भेद कम-से-कम होते गये । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जो आर्थिक व्यवस्था दी उसमें ब्याज को कोई स्थान नहीं क्यों कि यह शोषण और अन्याय की जड़ है । यहां न पूंजीवाद की स्वच्छन्दता है और न साम्यवाद का कठोर नियन्त्रण । जनहित में कुछ प्रतिबन्धों के बाद पूर्ण स्वतंत्रता दी गयी है । आप खूब कमाएं मगर शराब, जुआ लाटरी, व्यभिचार के धन्धे, ब्याज, ब्लैक मार्केटिंग, रिश्वत आदि से नहीं कमा सकते क्योंकि इनसे आपको व्यक्तिगत रूप से भले ही अच्छी कमाई हो जाए मगर समाज दूषित होकर रहेगा ।

आर्थिक धन को व्यय करने के लिए स्वतंत्र है मगर फ़ुज़ूलख़र्ची सहन नहीं क्योंकि उतनी धनराशि से कई घरों के चूल्हें जल सकते हैं । एक सीमा के बाद आपको अपनी बचत की जमा में से कम-से-कम 2.5 प्रतिशत 'ज़कात' ग़रीबों को देनी होगी । आप अपनी पूंजी से स्वयं करोबार कर सकते हैं अथवा लाभ हानि की क़रार पर साझा कर सकते हैं परन्तु पूर्व निश्चित दर तय करके ब्याज नहीं ले सकते । जब दुनिया में किसी भी चीज़ की ठीक-ठीक भविष्यवाणी या पूर्वानुमान संभव नहीं है तो पूंजीपति के ब्याज की दर पहले से निर्धारित करने का क्या औचित्य है ? जोखिम कौन उठाएगा ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अनुसार जीविकोपार्जन की व्यस्तता भी ईशभक्ति है मगर हर समय निन्नानये के फेर में इन्सान न पड़े क्योंकि 'दाता' तो ईश्वर है उसपर भरोसा ज़रूरी है ।

आवश्यकता है कि हालात पर दृष्टि डालें और अन्य समस्याओं की भांति आर्थिक क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा लागू किये गये उसूलों का निष्पक्ष अवलोकन करें ।

आज़ादी अभिव्यक्ति की

हम स्वाधीन हैं स्वतंत्र हैं
हमें अभिव्यक्ति की आज़ादी है !
कोई नहीं रोक सकता हमें
कुछ भी बोलने कहने से !
यह बात अलग है कि हमें
अपनी ज़बान पर कंट्रोल नहीं है
जब हम बोलने पर आते हैं तो
कुछ भी बोल जाते हैं ।
न हमें किसी की भावनाओं का
ध्यान रहता है
न भाषा की मार्यादा सीमा का
बोलने की रवानी में हम
यह भी भूल जाते हैं कि हम
संवैधानिक पद पर आसीन हैं
हमें अपने पद की गरिमा का भी
ध्यान नहीं रहता !

● ओम प्रकाश बजाज

एक सूत्रीय कार्यक्रम

ट्रेडयूनियन के नेतागण जीत का जश्न मना रहे थे, वे लोग खुश थे कि हड़ताल ने तूल नहीं पकड़ा और प्रशासन ने शीघ्र ही मामले के द्विपक्षीय स्वीकार योग्य समाधान के लिए अपनी इच्छा ज़ाहिर कर दी ।

जश्न के दौरान एक नेता को अचानक एक बात याद आयी और वह कहने लगा–"साथियो ! हम इसे अपनी जीत क्यों समझ रहे हैं । हमारी मांगें तो सात थीं, जबकि प्रशासन ने सिर्फ़ तीन बातें ही मानी हैं, शेष चार मांगें तो हम भूल ही गये ।"

दूसरे साहब जो जश्न के मूड को बरक़रार रखने के मूड में थे, बोले–"छोड़ो इस बात को । कभी ऐसा भी होता है कि सारी मांगें मान ली जाती हों ? कुछ वे पीछे हटते हैं, कुछ हम पीछे हटते हैं और इस तरह बात बन जाती है ।"

तीसरे साहब कहने लगे–"हमें बच्चों से शिक्षा लेनी चाहिए, जो एक बार में एक ही चीज़ की ज़िद करते हैं और उन्हें शत-प्रशित सफलता मिलती है । टॉफ़ी...टॉफी...की ज़िद करेंगे और वह मिल जाएगी तो खिलौना...खिलौना... की रट लगाएंगे और वह भी मिल जाए तो कहेंगे...बोद में उठाओ । उनकी सफलता का रहस्य है एक बार में एक ही मांग और वह पूरी हो जाए तो दूसरी मांग ।"

गया या नहीं ?

आज से लगभग पचीस वर्ष पुरानी बात है । आज की बात होती तो शायद आश्चर्य नहीं होता । हम लोग एक विकसित शहर में बाराती बनकर गये । निकाह की मजलिस ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया । डाइस पर दूल्हा, क़ाज़ी और गवाह, बायीं ओर कुर्सियों और सोफ़ों पर औरतें विराजमान थीं और दायीं ओर कुर्सियों और सोफ़ों पर मर्द अपनी-अपनी जगह संभाले बैठे थे । ज़्यादातर मर्द शेरवानी पहने हुए थे । कुछ दाढ़ी वाले भी थे । कुछ लोग सूट-बूट में भी थे । दूसरी ओर लगभग सभी औरतें भड़कीले कपड़े पहने और जेवरों में लदी बैठी थीं ।

मेरे बगल वाली कुर्सी पर मेरे मामूजान बैठे थे । मेरी ओर मुड़े और धीरे से बोले–"इधर मर्दों को देखता हूं तो लगता है अंग्रेज़ चला गया, उधर औरतों को देखता हूं तो लगता है अंग्रेज़ अभी नहीं गया है ।"

आज या कल

अंग्रेज़ी के मुहावरे का अर्थ है कि 'कल कभी नहीं आता' और हिन्दी के मुहावरे का अर्थ है कि 'जो काम कल करना है आज कर लो और जो आज करना है अभी कर लो ।' समय व स्थान और आजकल का अन्तर उस समय अर्थहीन हो जाता है जब करने वाले काम होने वाली घटना से शौक़ और उत्साह का संबंध हो जाता है ।

पिक का कार्यक्रम बना तो घर के छोटे बच्चे ने उल्टी गिनती शुरू कर दी । पांच दिन...चार दिन...तीन दिन...। शौक़ की लय बढ़ती गयी और पिकनिक में कब जाना है, उसके सामने एक ख़ास प्रश्न बन गया । एक दिन पहले जाने के लिए बिल्कुल बेचैन । बहुत समझाया गया कि आज नहीं कल जाना है । पूरे दिन कल, कल का वादा सुनकर वह और बेचैन हो गया । उसे नींद भी बहुत देर से आयी और इसी तसल्ली के बाद आयी कि कल जब उठेंगे तो पिकनिक पर जाने वाला दिन आ जाएगा ।

अगली सुबह आंख खुलते ही बच्चे ने सवाल कर दिया–"अम्मी आज कल है न ।"

फ़रिश्ता

दावते-वलीमा में मर्दों और औरतों के बैठने की जगह अलग होने के बावजूद कुछ औरतें बुर्क़ा पहने हुए थीं और चेहरे का नक़ाब गिरा हुआ था । एक औरत ने उनको संबोधित करते हुए यह प्रश्न कर दिया कि जब इस सभा में सिर्फ़ औरतें मौजूद हैं तो इस तकलीफ़ की क्या ज़रूरत है ? उन बुर्के वाली औरतों ने उन नवजवानों की ओर इशारा किया जो दरवाज़े के अन्दर बार-बार अपनी रिश्तेदार औरतों से मिलने के बहाने आ रहे थे । "अरे वह तो घर के बच्चे हैं, उनसे कैसा परदा ।"

परदे वाली औरतों ने उन बाहरी मर्दों की ओर इशारा किया जो 'बुफे सिस्टम' से खाना खाने के लिए मौजूद थे और बार-बार खाना लाने बाहर जा रहे थे और खाना लेकर अन्दर आ रहे थे । आपत्ति करने वाली औरतों ने कोई जवाब नहीं दिया और एक बेचैनी भरा सन्नाटा छा गया ।

एक दूसरी औरत ने जो इस बातचीत को सुन रही थी, अपनी बात से इस सन्नाटे को तोड़ा, "उनकी बात मत कीजिए, वे तो फ़रिश्ते हैं, फ़रिश्ते ।"● डॉ॰ वक़ार अनवर

शिक्षा की दुर्गति

■ विद्या प्रकाश

प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के तीन स्तरों में विभक्त शिक्षा व्यवस्था वह माध्यम है जिससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण रचनात्मक विकास होता है तथा उसकी अन्तर्निहित अन्तर्भूत योग्यता और क्षमता के परिष्कार-परिमार्जन हेतु अनुकूल अवसर उपलब्ध होता है । माध्यम शिक्षा परिषद हो, सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ़ सीनियर एजुकेशन (सी॰बी॰एस॰ई॰) हो, मिशनरीज़ स्कूल हो अथवा दीनी मदरसे हो–शिक्षा के भाषायिक माध्यम तथा निर्धारत पाठ्य पुस्तकों की पाठ्य सामग्री में अन्तर होने के बावजूद उनका उद्देश्य सामान्य और समान है । वह है विद्यार्थियों का ज्ञानवर्द्धन तथा उनकी अन्तर्क्षमताओं का इस ढंग से विकास कि वे भावी जीवन में स्वावलंबी बन सकें व्यावहारिक जगत में आने वाली नाना प्रकार की चुनौतियों, कठिनाइयों तथा समस्याओं का मुक़ाबला कर सकें तथा समाज की मज़बूत संघर्षशील कड़ी के रूप में खुद को समायोजित स्थापित कर सकें ।

जिस समाज में शिक्षा व्यवस्था जितनी उत्तम होगी, अध्यापन में शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में जितने निष्ठावान तथा समर्पित होंगे तथा विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति के लिए जितने जिज्ञासावान, आत्मानुशासित तथा जागरूक होंगे, वह समाज उतना ही उन्नत, रचनात्मक परिवेश प्रधान तथा वैज्ञानिक सोच युक्त होगा । इसके विपरीत आज समाज के शैक्षणिक जगत में जिस प्रकार आजकल की स्थिति दृष्टिगत हो रही है तथा जिस प्रकार शिक्षा का राजनीतिकरण किया जा रहा है, वह चिन्ताजनक तथा नयी पीढ़ी और मुल्क के भविष्य के लिए ख़तरनाक है ।

भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी, कांग्रेस तथा वामपंथी दल जैसी तमाम राजनीतिक पार्टियां अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और समाजवादी युवजन सभा सहित अनेकानेक नामधारी युवा संगठनों के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्र संघों के चुनाव में अपने उम्मीदवार उतारती तथा चुनाव लड़ाती है, इससे शैक्षणिक संस्थाओं का राजनीतिकरण हो रहा है विद्यालय परिसर सियासी अखाड़ों में तब्दील हो रहे हैं तथा लोकतंत्र के नाम पर शैक्षणिक व्यवस्था को धूल धूसरित किया जा रहा है । जिन शिक्षण संस्थाओं को ज्ञान का केन्द्र माना जाता है, वहां आज धरना, अनशन, प्रदर्शन, हड़ताल तालाबन्दी और पुतला दहन जैसी बातें आम होती जा रही हैं । विद्यालयों का व्यावसायीकरण, औद्योगीकरण तथा बाज़ारीकरण होता जा रहा है । एक तरफ़ अध्यापकों की नियुक्ति के नाम पर विद्यालय के प्रबंधक तथा विभागधिकारी अभ्यर्थियों से सौदेबाज़ी व अवैध वसूली करते हैं, दूसरी तरफ़ प्राइवेट विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा, मैगजीन, स्कूल बस की सुविधा, टूर, पिकनिक क्रीड़ोपकरण आदि के नाम पर अभिभावकों की जेब कम ढीली नहीं की जाती ।

विभागाधिकारियों, विद्यालय के प्राचार्य प्रबंधक तथा नक़ल माफ़ियाओं की परस्पर सांठगांठ तथा मिलीभगत से वार्षिक परीक्षाओं में हर साल सामूहिक नक़ल का गोरखधंधा कामयाबी के साथ चलता है ।

बी॰ए॰, बी॰काम॰, बी॰एस॰सी॰, एम॰ए॰, एम॰काम॰ वग़ैरह विभिन्न स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं की परीक्षाओं के परीक्षा फल प्रतिवर्ष विलंब से घोषित किये जाते हैं और उनमें से अनेक परीक्षा फल अपूर्ण एवं त्रुटिपूर्ण होते हैं । परीक्षाओं के प्रयोगात्मक परीक्षा देने के बावजूद प्राप्तांक पत्र में उसे अनुपस्थित प्रदर्शित किया जाता है । त्रुटियों को दुरुस्त कराने के नाम पर विश्वविद्यालयकर्मी परीक्षार्थियों तथा विद्यार्थियों से मनमानी धन वसूली करते हैं । स्कालरशिप तथा शिक्षण शुल्क प्रतिपूर्ति जैसे मामलों में जातीय आधार पर आरक्षण के तहत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों को प्राथमिकता प्रदान कर छात्र छात्र में विभेदीकरण किया जा रहा है जो सामाजिक समरसता व राष्ट्रीय ऐक्य भावना के निर्माण में बाधक स्वरूप है ।

बोलने का आत्मविश्वास

● संपादन प्रभाग

अगर आप लोगों से संपर्क करने और उनके बीच खुल कर बोलने में असहज महसूस करते हैं तो आज से ही इसे बदलने की कोशिश शुरू करें । अंतर्मुखी प्रकृति सफलता में बड़ी बाधा भी बन सकती है । खुद पर विश्वास है तो लोगों के बीच घबराना कैसा ? आज हम आपको इसके बारे में बता रहे हैं :

अगर किसी को अचानक एक बड़े जनसमूह के सामने कुछ बोलने के लिए कह दिया जाए तो अधिकतर लोग बुरी तरह घबरा जाते हैं । हालांकि इस बात का आपकी योग्ता से कोई लेना-देना नहीं होता । फिर भी यह बात आपकी छवि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है । ऐसा पढ़ाई के दिनों में, नौकरी के लिए दिये जाने वाले साक्षात्कार के समय, नौकरी के दौरान या कभी भी हो सकता है । इससे लोग आपका सही मूल्यांकन नहीं कर पाते और आप कई अवसरों से चूक जाते हैं । इस हिचक को तोड़ना बहुत मुश्किल भी नहीं है । यह हिचक तोड़कर आप सफलता के कुछ और क़रीब हो जायेंगे । बस आपको अपने डर पर क़ाबू पाना होगा । इसकी शुरुआत आप यूं कर सकते हैं–

अपने मज़बूत पक्ष याद रखें

दूसरों के सामने बोलने में होने वाली हिचक दरअसल सोशल एंग्ज़ाइटी का नतीजा होती है । ऐसे में आप अपना उद्देश्य याद रखें, न कि उसमें अपनी सफलता या असफलता। अपनी कमज़ोरियों के बारे में सोचने की बजाय अपने व्यक्तित्व के मज़बूत पक्ष के बारे में सोचें । उन वजहों को तलाशने की कोशिश करें, जिनके कारण आपको झिझक या संकोच महसूस होता है । इसकी तीन संभावित वजहें हो सकती हैं । मुमकिन है कि आप खुद को लेकर आश्वस्त न हों । खुद के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा सोचते हों या जब कोई आपकी तारीफ़ करता है तो आप उस पर यक़ीन न कर पाते हों । इसे दूर करने के लिए लोगों के बीच बोलने की प्रैक्टिस कर सकते हैं । प्रेरक किताबें पढ़ें । यदि आवश्यकता लगे तो काउंसलर की सहायता भी ले सकते हैं ।

परिचितों से करें शुरुआत

लोगों के बीच आत्मविश्वास से बोलने के अभ्यास की पहल दोस्तों से करें । जब आप यहां सहज महसूस करने लगें, तो अपरिचितों के बीच इसे आज़माएं । इसे भी एक-दो लोगों से ही शुरू करें । अगर आप शुरू में ही सीधे बड़े समूह में बात रखने की कोशिश करेंगे तो बहुत अधिक दबाव होने के कारण संभवत: कठिनाई भी ज़्यादा होगी । आप पाएंगे कि दो व्यक्तियों के सामने बोलने में आपको तुलनात्मक रूप से ज़्यादा आसानी हुई और यह भी कि जल्द ही आपकी हिचक टूट गयी । और अब विशाल जनसमूह में भी अपनी बात रखने में कोई परेशानी नहीं हो रही है ।

नियमित अभ्यास की है ज़रूरत

हिचक मिटाने के लिए आपको नियमित रूप से प्रयास करना ज़रूरी है । अपने डर पर आपको विजय पानी होगी । उसे खुद पर हावी न होने दें । शुरू-शुरू में ऐसा करने में आप खुद को असहज महसूस करेंगे, लेकिन लगातार प्रयास करते रहें । धीरे-धीरे आप महसूस करेंगे कि आपको अब अपनी बात रखने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ रहा है,



आप बड़ी सहजता से अपनी बात रख पा रहे हैं ।

बेवजह के परिचय से बचें

बड़ा सामाजिक दायरा होने का एक अर्थ यह भी है कि आपको लोगों का सामना करने में हिचक नहीं होती । यह आपके आत्मविश्वासी व्यक्तित्व का द्योतक भी है । आप भी अपना सोशल सर्कल बड़ा करें । इसके लिए खुद अपने क्षेत्र से जुड़े कार्यक्रमों पर नज़र रखें । अपने परिचितों से यह कह सकते हैं कि वे ऐसे कार्यक्रमों की जानकारी आपको दे दिया करें । एक समय के बाद आप अपनी मर्ज़ी से भी आयोजनों को चुनें कि कहां जाना है या नहीं जाना है । इसका एक कारण यह भी है कि अंतर्मुखी ना होने का मतलब यह नहीं है कि हर जगह या समूह में आपकी उपस्थिति ज़रूरी हो । बेमतलब किसी ईवेंट या समूह में न जाएं ।

अपनी तैयारी पूरी रखें

अगर आप सच में लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं तो इस नुस्ख़े को आज़माएं । अगर आप किसी सामूहिक आयोजन में जा रहे हैं या कई लोगों के सामने आपको कुछ बोलना है तो विषय आदि के बारे में पूरी जानकारी कर लें । अपनी भाषा पर भी ध्यान दें । ऐसी स्थिति में उच्चारण, शब्दों के उचित चयन आदि का विशेष महत्व होता है । उस कार्यक्रम की पूरी रूप-रेखा और वहां आने वाले मेहमानों के बारे में मुकम्मल जानकारी रखें । अनौपचारिक आयोजनों में वहां आने वाले आगंतुकों की मदद करें उन्हें कार्यक्रम और मेहमानों के बारे में अपनी तरफ़ से पहल कर बताएं । इस तरह से आप वहां आने वाले दूसरे लोगों की मदद कर अपनी छवि बेहतर बना सकते हैं और लोग आप पर ध्यान देंगे ।

मुस्कराहट से काम लें

किसी भी प्रेज़ेंटेशन में या किसी सामाजिक स्थिति में कई लोगों के बीच मुस्कराहट से आपकी छवि का तुरंत प्रभाव बनता है । इसी से अपनी बात की शुरुआत करें । मुस्कराहट से मानसिक तनाव भी कम हो जाता है और आप ज़्यादा आत्मविश्वास अनुभव करने हैं । सुनने वालों से आपका एक जुड़ाव तुरंत बन जाता है ।

प्रेज़ेंटेशन स्किल्स पर क्लाउड आधारित प्रेज़ेंटेशन प्लेटफ़ार्म कंपनी प्रेज़ी के एक ताज़ा सर्वे के प्रमुख नतीजों के अनुसार–70 फ़ीसदी कर्मचारियों (कुल सैंपल में से) ने माना कि सफलता के लिए प्रेज़ेंटेशन स्किल होना ज़रूरी है।

20 फ़ीसदी कर्मचारियों ने माना कि प्रेज़ेंटेशन के लिए लोगों के सामने ना आना पड़े, इसके लिए वे कुछ भी कर सकते हैं ।

कविता

खंडहर के महल

एक गलियारा
शिकार हो गया बुरे सपनों का
जहां जाते ही थरथरा जाते हैं पांव
सूख जाते हैं होठ
निकलते हैं आंखों से
आग के आंसू
कुछ फटे पन्ने बिखरे हैं ऐसे कि
जोड़ कर भी नहीं मिल पाता
पता में ज़िला, तहसील, पिन कोड
सीढ़ियों पर बैठ किरणें
सिसकती हैं बार-बार
रात रानी की क्यारियों ने
शपथ ले ली है-न महकने की
कोई नहीं तोड़ता पुकार का सन्नाटा
नहीं होती कलियों के
चटकने की आवाज़
न दीप
न लौ की नदी पर तैरती यादें
न कोई इस पार
न कोई उस पार
उजड़े हुए मेले के निशां
हैं अवशेष
जिन्हें तलाशते हैं बच्चे
और भरते जाते हैं थैला
सोचती हूं वे इधर आएं
मांग लूंगी उनसे
ये बिखरी टूटी यादें
सजाने के लिए
खंडहर के महल

शुभदा पांडेय
असम वि०वि०, शिलचर
असम-788011

कार्बन डाईआक्साइड का पेड़-पौधों पर असर

प्रमुख ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव के अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं ने पाया कि जिन पौधों को अतिरिक्त कार्बन डाईआक्साइड मिलता है, वे पौधों की तुलना में 25 प्रतिशत तेज़ी से बढ़ते हैं, जिन्हें इस गैस की अतिरक्ति मात्रा नहीं मिलती ।

शोधकर्ता ने वायुमंडल के गैस की मात्रा में वृद्धि पर पौधों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करने के लिए उत्तरी कैरोलिना के ड्यूक विश्वविद्यालय में निकट चीड़ के पेड़ों के प्लांटों के वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ा दी ।

इस अध्ययन पर लिखने वाले इवान एच॰ डीलुसिया ने बताया है कि प्रयोग कम-से-कम पहले दो वर्ष के दौरान ये पेड़ उन पेड़ों की तुलना में अधिक तेज़ी से बढ़े, जिन्हें कार्बन डाईआक्साइड की अतिरिक्त मात्रा नहीं मिली । डीलुसिया ने कहा, शायद यह वृद्धि समय के साथ-साथ कम हो जायेगी । न तो डीलुसिया और न ही प्रमुख शोधकर्ता विलियम स्लेसिंगर ऑफ़ ड्यूक को ही उम्मीद है कि वृक्षों की अतिरिक्त वृद्धि का यह क्रम बाद के वर्षों में भारी रहेगा । डीलुसिया ने कहा, जिन वृक्षों को अतिरिक्त कार्बन डाईआक्साइड मिला है, उन पर पूर्व काल में किये गये अध्ययन से पता चलता है कि कुछ वर्षों के बाद उनमें तेज़ी से वृद्धि समाप्त हो जाती है ।

जब पौधे का कोई भाग जलता है तो कार्बन डाईआक्साइड वायुमंडल में लौट जाता है । खनिज तेल और कोयला जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने से भी वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड की वृद्धि होती है । कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि ईंधन के अधिक उपयोग के कारण सन् 2050 तक वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा 35 से 50 प्रतिशत बढ़ जायेगी ।

कुछ वैज्ञानिकों को विश्वास है कि बढ़े हुए कार्बन डाईआक्साइड से पूरी पृथ्वी गर्म हो उठेगी, क्योंकि यह गैस ताप को अंतरिक्ष में लौटने से रोक देता है और उसे पृथ्वी के पास ही फंसाकर रख लेता है । यह गैस शीशे की तरह काम करता है, जो सूर्य का प्रकाश भीतर तक आने देता है, परन्तु ताप को वापस लौटने नहीं देता । इसे ग्रीन हाउस प्रभाव कहते हैं । डीलुसिया ने कहा, चीड़ के पेड़ पर किया गया यह प्रयोग जानने का प्रयास भर है कि कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा वृद्धि का वनों पर क्या प्रभाव होगा।

एंज़ाइम का महत्व

सुबह बिस्तर से उठने से लेकर रात को सोने तक हम जितने काम करते हैं उनमें किसी न किसी एंज़ाइम की मदद अवश्य लेनी पड़ती है । कोई चीज़ खाते हैं तो मुंह में पहुंचते ही उस पर एंज़ाइम की क्रिया शुरू हो जाती है । यहां सबसे ग़ौरतलब तथ्य यह है कि शरीर में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइडट्रेट, विटामिन हार्मोन इत्यादि में बदलने का काम भी हार्मोन के बिना संपन्न नहीं हो सकता है । दवाइयों के दुष्प्रभावों को कम करने, रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने, त्वचा पर दाग़ धब्बों को मिटाने में एंज़ाइमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है । शरीर के ज़ख़्म भरने के लिए भी इनकी सहायता ज़रूरी है ।

यह एंज़ाइम अलग-अलग कार्य का संचालन करता है । कुछ एंज़ाइम शारीरिक संरचना में सहयोग देते हैं । कुछ शरीर से ज़हरीले व बेकार अवशेषों को बाहर निकालने का काम करते हैं और पाचन क्रिया में मददगार होते हैं । हालांकि मानव शरीर में एंज़ाइमों का निर्माण प्राकृतिक तौर पर होता रहता है, परन्तु इनकी मात्रा को सही सलामत बनाये रखने के लिए ज़रूरी है कि ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन किया जाए जो एंज़ाइम से भरपूर हों, इसके लिए एक बात ध्यान रखनी पड़ेगी कि एंज़ाइम गर्मी से बहुत जल्दी प्रभावित होते हैं अतः खाना पकाते समय भी प्रयुक्त किये जाने वाले फल-सब्ज़ियों के एंज़ाइम समाप्त हो जाते हैं ।

वैसे तो सभी फलों में कोई न कोई एंज़ाइम पाया ही जाता है । किन्तु, अनानास में पाया जाने वाला 'ब्रेमेलेन'

एंज़ाइम सबसे अधिक लाभदायक पाया गया है । सेहत के लिहाज़ से इसकी उपयोगिता इसलिए भी ज़ाहिर है कि यह खाना पचाने में मदद करता है, गैस की समस्या से निजात दिलाता है और भूख बढ़ाता है । आर्थराइटिस व साइनस की तकलीफ़ों में 'ब्रेमेलेन' काफ़ी लाभदायक होता है । यह ज़ख़्मों को भरने में भी मदद करता है ।

कच्चे पपीते में एक पेप्सिन नामक एंज़ाइम पाया जाता है जो कई तरह से हमारे लिए स्वास्थ्यकर है । आजकल पपीते में चीरा लगाकर सफ़ेद दूधिया पदार्थ को निकालकर व्यावसायिक लाभ लिया जाने लगा है । इसे पेपेन कहा जाता है और गुणों की खान है । पाचन संस्थान में आने वाली गड़बड़ियों को दूर करने वाली दवाओं के निर्माण में इसका इस्तेमाल सबसे ज़्यादा किया जाता है । इसे चर्म रोग निवारक, कृमि नाशक, पाचक तथा डिपथीरिया व अल्सर की दवाएं बनाने में भी प्रयोग किया जाता है । इन सभी उपयोगिताओं का कारण है पेप्सिन एंज़ाइम का होना ।

एंज़ाइम प्राप्त करने के लिए अंकुरित अनाज सबसे बढ़िया स्रोत है । इसके अलावा अंकुरित मूंग, गेहूं, चना भी काफ़ी फ़ायदेमन्द बताये गये हैं । केला, आम सभी प्रकार के मेवा और कई अन्य कच्चे फल एंज़ाइमों के बेहतर स्रोत हैं, लेकिन रोना इसी बात का है कि यह एंज़ाइम हमारे शरीर में आने वाले समय के लिए इकट्ठे नहीं रह पाते इसलिए ताज़े फलों और सब्ज़ियों का नियमित सेवन करते रहना ही श्रेयस्कर होगा । इससे शरीर की रोगों के विरुद्ध लड़ने की शक्ति बनी रहेगी ।

विशेषज्ञों का कहना है कि प्रतिदिन एक कटोरी अंकुरित अनाज का सेवन करें और अधिक से अधिक फल व सब्ज़ियों को कच्चा ही खाएं तो ज़्यादा लाभ मिलेगा । अगर पकाएं भी तो हल्की भाप में पकाएं और अधिक तलें नहीं । इस तरह खाद्य पदार्थों में मौजूद पोषक तत्व और एंज़ाइम बचे रहेंगे, जो आपके उचित पोषण तथा जैव-रासायनिक अभिक्रियाओं के लिए बहुत ज़रूरी है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

A Well Wishers

Ripan Street, Tramways Depots,
Near Nona Pukur, Kolkata

Posted on 20-21 June 2016
July 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.06.2016
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी साहित्य की अनियत पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

